

पाकिस्तान के नये झण्डे में ओ३म् —एक सुझाव

" सिन्ध अल्प संख्यक संघ ने ७ अगस्त को पाकिस्तान के गवर्नर जनरल मियां जिन्ना को एक स्मृति पत्र देने का निश्चय किया है जिसमें पाकिस्तान के झण्डे के सम्बन्ध में एक सुझाव उपस्थित किया जायगा। झण्डे के इस नमूने में तीन त्रिकोणात्मक पट्टियां हैं। बीच वाली पट्टी हरी है और उस पर यह सूचित करने के लिए कि इस देश में मुसलमानों का प्राधान्य है अर्ध चन्द्र और तारक के चिन्ह हैं। ऊपर की पट्टी में ओ३म् का चिन्ह है और पट्टी का रंग लाल है, जो देश के हिंदू अल्प संख्यकों का द्योतक है। नीचे की तीसरी पट्टी सफेद है, जो पाकिस्तान के अन्य अल्प संख्यकों का चिन्ह है। इस झण्डे का अर्थ यह होगा कि पाकिस्तान के सब निवासियों के साथ न्याय और औचित्य का व्यवहार किया जायगा " क्या पाकिस्तान की सरकार इतनी उदार बन सकेगी !

हिन्दी दिवस

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आदेशानुसार सारे भारत में हिन्दी राष्ट्र भाषा दिवस मनाया गया। राष्ट्र भाषा का जो प्रश्न आज भारत के सामने है उसका एक मात्र हल हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाकर ही किया जा सकता है। सारा राष्ट्र आज हिन्दी माता को इस गौरव पूर्ण पद पर बिठाना चाहता है। राष्ट्र कर्णधार जनता की भावना को समझ कर उचित निर्णय देंगे।

देश भरमें गो-वध निषेध आन्दोलन—

भारतीय विधान निर्माण के महत्व पूर्ण समय मे देश के कोने कोने से मांग की जा रही है कि भारत में गो-हत्या को कानून विरुद्ध घोषित कर दिया जाय। आज का सन्त्रस्त भारत एक स्वर से अपने दुख दर्द को इस आवाज के रूप में प्रकट कर रहा है। दूध-घी की नदियों वाले देश में आज घी—दूध के लिए लोग तरस रहे हैं। वर्तमान सन्तति का स्वास्थ्य इन पौष्टिक पदार्थों के अभाव में चिन्ता का विषय बना हुआ है। इन सब दुखों का स्रोत आज समय पाकर फूट चुका है। राष्ट्र की अनेकों संस्थाओं तथा ५० हजार से अधिक व्यक्तियों ने तार और पत्र भेज कर विधान परिषद् के प्रधान से इस ओर क्रियात्मक कदम उठाने की मांग की है।

तिलक दिवस—

" स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है " के आद्युद्घोषक श्री लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्य स्मृति में १ अगस्त को सारे राष्ट्र में स्मृति दिवस मनाया गया। सारा राष्ट्र आज लोकमान्य के सूत्रों पर चलकर वास्तविक अधिकार पा रहा है। लोकमान्य तिलक की आत्मा को अपने राष्ट्र की मुक्ति देखकर कितना आनन्द हो रहा होगा। हम उस चिरन्तन देवता के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

दिनांक ३ अगस्त ४७
मूल्य ३) वार्षिक

सम्पादकः— स्नातक उमेशचन्द्र

अंक सं. २०
एक अंक =)

—•०—दयानन्द वैदिक मिशन इन्दोर का मुखपत्र—•०—

आर्य राष्ट्र-गान

आर्य राष्ट्र का कण-कण सारा प्रेम पुनीत पुकार उठे।
जल से, थल से, अम्बर से आर्यों का जय-जयकार उठे।
जननी का जय-जयकार उठे।

रंजित है इतिहास पुराने त्याग पूर्ण बलिदानों से,
अंकित है अक्षर-अक्षर अक्षय सुचि स्वर्ण प्रमाणों से,
वीरों की वर वीर कथाएं, भरे व्यथित अरमानों से,
भारत के भू खण्ड खड़े हैं अमर दिव्य बलिदानों से,
एक बार फिर आर्य वीर विजयी सेना हुंकार उठे।
कर में चम-चम तलवार उठे।

भारत की प्रिय पुण्य मही में महावीर बलवान हुए,
इसी देश में राम कृष्ण से पुण्य पुरुष भगवान हुए,
धर्मराज प्रिय प्रजा हितैषी उज्ज्वल रत्न महान् हुए,
वीर शिवा, राणा प्रताप से भारत के अभिमान हुए,
भारत भाल हिमाचल गुण गौरव गा संसार उठे,
जय आर्यावर्त पुकार उठे।

आर्य संस्कृति की रक्षा में निज सर्वस्व गवाना है,
आर्य जाति की सेवा में अपना बलिदान चढाना है,
वेदों का सन्देश अमर जगति को आज सुनाना है,
माता की बलिवेदी पर हंस-हंस कर सीस चढाना है,
माता तेरे चरणों पर हंस-हंस जग जब मन बलिहार उठे।
फिर जय-जयकार पुकार उठे।

अमर हुतात्म समाधिस्थल पर जीवन-दीप जलाना है,
पराधीनता के बन्धन से देश स्वतन्त्र बनाना है,
सुखद, स्नेह-सरिता सरसा सुखशांतिसुधा बरसानाहै,
ओऽम् ध्वजा 'कमलेश' सहर्षित ले मानव परिवार उठे।
मानवता का फिर प्रिय प्यार उठे।

आर्य राष्ट्र का कण-कण सारा प्रेम पुनीत पुकार उठे।
जलसे, थलसे, अम्बरसे आर्यों की जय-जयकार उठे।
जननी का जय-जयकार उठे।

आयुर्वेद के छात्रों के लिए सूचना

संयुक्त प्रान्तीय बोर्ड आफ इंडियन मेडीसिन ने प्रान्त के प्रत्येक ग्राम में शिक्षित वैद्यों के यथा संभव शीघ्र पहुंचा देने के लिए अपने पिछले अधिवेशन में दो वर्ष का एक आयुर्वेद कोर्स प्रचलित करने का निश्चय किया है। बोर्ड के अनुरोध से गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के आयुर्वेद महाविद्यालय मे इसी वर्ष से दो वर्ष के इस आयुर्वेद कोर्स के अध्यापन का प्रबन्ध किया जा रहा है। कोर्स की समाप्ति होने पर बोर्ड की परीक्षा होगी और बोर्ड की ही ओर से उपाधि तथा प्रमाण पत्रादि देने की व्यवस्था की जायगी।

प्रवेशार्थी संस्कृत की प्रथमा या मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण या उनके समकक्ष अन्य परीक्षोत्तीर्ण होने चाहिए और उनकी आयु १६ वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए गुरुकुल के आयुर्वेद महाविद्यालय में जो विद्यार्थी इसमें प्रविष्ट होना चाहें उनके निवास के लिए स्थान की व्यवस्था की जायगी परन्तु स्थान के अतिरिक्त चारपाई भोजनादि की सब व्यवस्था विद्यार्थियों को स्वयं करनी होगी इसके अतिरिक्त प्रथम वर्ष में तीन तथा द्वितीय वर्ष में चार रुपया मासिक शुल्क देना होगा। इस कक्षा की पढाई १६ अगस्त से प्रारम्भ होगी। अतएव जो विद्यार्थी इस कक्षा में प्रविष्ट होना चाहें उन्हें अपने प्रार्थना पत्र बहुत शीघ्र भेजने चाहिए इस कक्षा में इस वर्ष २० विद्यार्थी ही प्रविष्ट होंगे अतः शीघ्रता करनी चाहिए।

आचार्य-गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

卐 ॐ 卐

आर्यावर्त

सृष्टि १९७२९४९०४७] दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र [दयानन्द जन्माब्द १२३

वर्ष २] इन्दौर, रविवार दिनाङ्क ३ अगस्त १९४७, श्रावण वदी २ वि. सं २००४ [संख्या २०

गौ रक्षा का प्रश्न

हमने कुछ समयपूर्व इ हीं प क्तियों में गौवध निषेध कानून के सम्बन्ध में विधान परिषद् का ध्यान आकृष्ट किया था। हमें यह भी सूचना प्राप्त हुई थी कि मध्यप्रान्त के मुसलमान मन्त्री श्रीहसन ने इस सम्बन्ध में प्रस्ताव उपस्थित करने की सूचना विधान-परिषद् के प्रधान को दी है। पिछले कुछ दिनोंसे भारतीय राजनीति में गोवध-निषेध का विषय अत्यन्त प्रमुख विषय बना हुआ है। जहां तक गो की धार्मिकताका प्रश्न है इसको स्वीकार नहीं किया जासकता है धार्मिक सिद्धान्तों मे अगर सचाई है तो वे एक दूसरे से सर्वथा विपरीत कैसे हो सकते हैं ? एक गौरक्षा को, गौ पूजा को अपना धर्म समझता है तो दूसरा ठीक इसके विपरीत गौकुशी को अपना धर्म बताता है। अगर दोनों ही धर्मों की सत्ता स्वीकार कर ली जाय तो एक बडी विचित्र अवस्था पैदा हो जायँगी। वास्तवमें गौ का प्रश्न विशुद्ध आर्थिक एव राष्ट्रीय है। प्राचीन भारत में गौ एक सिक्के के रूप में प्रयोग में आती रही है। उसकी इस व्यवहारिकता के मूल में उसकी आर्थिक उपयोगिता ही तो थी और वही आज भी मानी जानी चाहिये। इसी उपयोगितावाद को दृष्टि में रखकर भारतीय जनता ने गौ को धार्मिक रूप प्रदान किया था और उसकी निरन्तर पूजा की है। गौ की व्यवहारिक उपयोगिता को स्वीकार करते हुए और उससे शारीरिक लाभ उठाते हुए भी उसको जिबह करने का जो घृणित कार्य धर्म में परिणत किया गया उसमें विद्वेष की भावना ही अधिक है धर्म की नहीं मुस्लिम देशों में भ्रमण कर आये कई बडे बडे विद्वानोंने इस बात का उल्लेख किया ह कि अरब आदि में गौ कुशी की प्रथा भारत की तरह प्रचलित नहीं है वहा तो गौ के स्थान पर भेडों या बकरियों का उपयोग होता है। तब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि धर्म के नाम पर इस हत्या को न रोका जाय। जब अरब के मुसलमान इस हत्या के बिना अपना कार्य चला लेते हैं तब भारत के मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकते। अब रहा प्रश्न धर्म की वास्तविकता का, कहा जाता है कि यदि किसी के धर्म में गौकुशी का उल्लेख है तो कानूनन उसे बन्द नहीं किया जा सकता। हम महात्मा गांधीजी के इस मन्तव्य से सहमत नहीं हो सकते। यदि धर्म के नाम पर किसी को गौ हत्या का अधिकार दिया जा सकता है तो जिन धर्मों में [मजहबों में] व्यभिचार, अपहरण, ऋण लेकर न देना, शराब पीना और दुनियाँ भर के सब पापों का उल्लेख हो उसे कानूनन क्यों रोका जा सकता है। क्या कोई व्यभिचारी यदि यह कह कर दुराचार बलात्कार करे कि यह तो मेरा धर्म है तो उसको निर्दोष कहा जा सकता है इसी प्रकार ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् आदि के आधार पर वाम मार्ग को कैसे रोका जा सकता है। शराब बन्दी को रोकने के लिए कानून बना कर कांग्रेसी सरकारों ने जनोद्धार का श्रीगणेश किया है, पर क्या उस व्यक्ति की धार्मिक वेदना का किसी को ख्याल हुआ जो शराब पीना अपना धर्म कहता था। इस प्रकार यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि किसी ऐसी चीज को धर्म के नाम पर स्वीकृति नहीं दी जानी चाहिये जो समाज के ऊपर आर्थिक एव विद्वेषात्मक हानिकर प्रभाव डालने वाली हो।

हां, म गांधीजी की इस राय का हम जोरदार समर्थन अवश्य करेंगे कि गो रक्षा का प्रश्न सबसे पहले हिन्दुओं को स्वय हल करना पडेगा। यदि प्रत्येक हिंदु अपना कर्तव्य गो के सम्बन्ध में पूरा करे तो गौवध-निषेध का प्रश्न गौण बन जाता है।

राष्ट्रीय सरकार देश के गिरते हुए स्वास्थ्य की सुरक्षा और विकास को ध्यान में रखते हुए फौज क लिए गौ मांस का उपयोग तत्काल बन्दकर सकती है। और इस प्रकार इस समस्या का व्यवहारिक हल निकल सकता है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि गौ कुशी के धार्मिक रूप में फौजी उपयोग की अपेक्षा हजारवाँ भाग भी प्रयुक्त नहीं होता। इस दिशा में सरकार साहसपूर्ण निष्पक्षपात होकर कानून बनाकर जनता की आवाज का आदर कर सकती है।

धार्मिक दृष्टि कोण से हिंसा का कभी समर्थन नहीं किया जा सकता भारत

की अनवति के मूल में भी पशुवध का ही प्रधान हाथ था। याज्ञिक हिंसा ने भारत को आज की दशा में पहुंचाया था क्या अब जब हम पूर्ण सत्ताधिकारी बन रहे हैं अज्ञानान्धकार से दूर न होंगे प्रभु राष्ट्रीय नेताओं को सद्‌बुद्धि दें जिससे इस समस्या का वैज्ञानिक एवं शान्ति पूर्ण हल हो सके। ऋषि दयानन्द का यह महान आदर्श जो उन्होंने अपनी गोकरुणा निधि में रक्खा था और जिसके आधार पर वे तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों से भी मिले वे आज के इस स्वतन्त्र युग में प्रेरणा का विषय बन सकता है। आशा है इस गम्भीर प्रश्न को उदार चेता विधान विशेषज्ञ इस सम्बन्ध में अवश्य वैधानिक प्रतिबन्ध लगा कर जनता जनार्दन की सच्ची सेवा कर सकेंगे। ★

विचार-कण——

प्रजातन्त्र या राजतन्त्र

"जनतन्त्रीय शासन प्रणाली भारत वर्ष के लिए एक विदेशी देन है। यहां के लिए राजतन्त्र प्रणाली ही उपयुक्त रही है"। (हिन्दुस्तान, ८ जुलाई ४७)

ये शब्द हैं हिन्दुत्व अभिमानी हिन्दू राष्ट्र के नव जागरण के प्रणेता, हिन्दु संस्कृति के लिए राष्ट्र के नव युवकों का बृहद संगठन करने वाले दल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसचालक श्रीगुरुजीमहाराज के जो उन्होंने भरतपुर नरेश के सभापतित्वमें हुई संघकी एक रैलीमें भाषण देते हुए कहे-थे।

भारत वर्ष को इस बात का गौरव है कि संसार में सर्व प्रथम प्रजातन्त्र की स्थापना भारतवर्ष में हुई थी। वेद जो हिन्दू धर्म के आधारभूत ग्रन्थ है स्थान स्थान पर प्रजा तन्त्र, जन राज्य, और प्रजा के महान आदर्श की दुहाई दे रहे हैं। पाश्चात्य इतिहास के इस घृणित प्रचार का कि जनतन्त्र का प्रादुर्भाव ग्रीस से हुआ, विरोध करने के लिए भारतीय विद्वानों ने न जाने कितने प्रयत्न कर यह प्रमाणित कर दिया कि भारत में सदैव जनता के आधार पर राज्य व्यवस्था थी। माण्डलिक राज्य प्रणाली तथा जनतन्त्र के अन्य प्राचीन भेदों का उल्लेख कर यह प्रमाणित किया जा चुका है कि भारत जनतन्त्रीय राष्ट्र रहा है। तब हम इस उक्ति को सुन चकित रह गये हैं। क्या इसी प्रकार के हिन्दुत्व और उसकी संस्कृति की रक्षार्थ संघ प्रयत्नशील है। वर्तमान में देशी राज्यों में प्रजा की जो दुर्दशा है उसको देखकर भी यदि कोई राजतन्त्र को भारत के लिए उपयुक्त बतलाने का प्रयत्न करे तो उसे दुस्साहस और संस्कृति के नाम पर किया जाने वाला प्रतिगामी गठ बन्धन ही कहा जा सकता है। क्या संघ के उच्चाधिकारी इस वक्तव्य की यथार्थता अथवा अन्य आवश्यक बातों का समाधान कर संघ के सम्बन्ध में फैलने वाली भ्रान्ति को दूर करने का प्रयत्न करेंगे।

आर्य, हिंदू, ब्राह्मण बनाम डाकखाना—

हमारे पास एक युवक ने पत्र भेज कर डाकखाने में चलने वाली साम्प्रदायिक प्रवृत्ति का भण्डाफोड करने को लिखा है घटना निम्न है— "मैंने सुपरिन्टेन्डेन्ट आफ जनरल पोस्ट आफिस इन्दौर के पास अपनी सर्विस के लिए प्रार्थना-पत्र भेजा था। वहां से एक व्यक्ति द्वारा सूचना भेजकर मुझे बुलाया गया कि ९ बजे से ११ बजे के भीतर आफिस में आकर मिलो। मैं वहां ठीक समय पर पहुंचा। भेंट के समय सुपरिटेंडेंट साहब ने मेरा प्रार्थना-पत्र देखकर मुझसे प्रश्न किया कि यह आर्य क्या होता है (मैंने अपने नाम के आगे लिखा था) और फिर मुझसे कहा गया कि सम्भवतः आर्य से अर्थ हिन्दू ही है। मैंने उन्हें आर्य शब्द के सम्बन्ध में बताया तब फिर उन्होंने कहा, हां,इस सबका अर्थ हिन्दू ही है और अगर हिन्दुओं में भी तुम ब्राह्मण हो तो तुम्हारे लिये डाकखाने में स्थान नहीं है। उनका अभिप्राय यह था यदि तुम आर्य हो तो आर्य होने के कारण इसी प्रकार हिन्दू होने के कारण और ब्राह्मण होने के कारण तुम्हें यहां सर्विस नहीं दी जा सकती।"

—आपका........

इस घटना के गोरख धन्धे को समझना सहज नहीं कहा जा सकता। पूर्ववर्ती अन्तरिम सरकार के समय में यह घटना होती तो तब इस पर कुछ कहना व्यर्थ का अरण्यरोदन कहा जा सकता था पर आज नई अन्तरिम सरकार के समय इस घटना का घटित होना आश्चर्य की बात है। हम सर्विस में योग्यता के समर्थक हैं किसी जाति विशेष को और उसमें प्रतिगामी वर्ण व्यवस्था का तो कोई प्रश्न ही नहीं परन्तु जहां तक इस घटना का सम्बन्ध है हम डाकखाने की इस नीति का विरोध करेंगे। ★

(पृष्ठ १० का शेष)

का चिन्ह है। नगर के अन्य भागों में सर्व साधारण जनता इस दिशा में मिल एरिया की जनता का अनुकरण कर इस क्रान्ति में पूर्ण सहयोग दे सकती है। होटल वालों के धैर्य व साहस की परीक्षा में प्रत्येक समाज प्रेमी उनके साथ है। क्रान्ति चिरजीवी हो, मौलिक अधिकार व्यापक हों।

स्वतन्त्रता के अग्रदूत : रवीन्द्रनाथ

आचार्य गुरुदयाल मल्लिक

विश्व-बन्धुत्व के उपासक रवीन्द्रनाथ-— जिनके भौतिक अवसान की [illegible] पुण्यतिथि अगस्त की सातवीं-तारीख को पड़ी[illegible] है— अपने अविकल्प विश्वास की सचाई के कारण स्वाधीनता के अग्रदूत थे। स्वतंत्रता को वे संपूर्ण भाव से स्वीकार किए हुए थे; उनके मन-प्राण मनुष्य के पूर्णावयव व्यक्तित्व की खुशबू से सुरभित हो उठे थे। एक बार सन् १९३३ में आंध्र विश्वविद्यालय के एक एक्सटेंशन लेक्चर का उपसंहार करते हुए उन्होंने कहा था:

मनुष्य जीवन का एक मात्र उद्देश्य मुक्त करना और मुक्त होना है—उस मुक्ति को प्राप्त करना जिससे वरेण्य जीवन का पथ आलोकित होता है।

किंतु उन्होंने अनुभव किया कि उनकी अपनी जन्मभूमि स्वतंत्र और मुक्त नहीं है और जिन देशों को स्वातंत्र्य तथा मुक्ति का उपभोग सहज है वे उसे जीवन की सेवा और एकता में नियोजित नहीं कर रहे हैं। इसी से क्षण भर चुप रह कर उन्होंने तीक्ष्ण प्रश्न किया— कौन है जो विश्राम पाना चाहता है, जो आराम की खोज में है और उसे विश्राम मिलेगा ही क्योंकर ?

आज स्वतन्त्रता के व्यापक युद्ध और संघर्ष के दिनों में हम भारतवासियों के लिये ऊपर के संदेश से बढ़कर और कौनसा महान् संदेश हो सकता है; अपनी इस पुरानी विराम-प्रिय आलस्य की कठिन शृंखला को आज छिन्न-भिन्न कर देने का दुर्लभ क्षण क्या हमारे जीवन में नहीं आ गया है ? क्या यह मनुष्य का निमार्ण करने वाली मुक्ति को ध्रुव तारिका के निर्देश पर बढ़े चलने की बेला नहीं है ? 'मनुष्य का निमार्ण'— कारण, इस निबिड परतंत्रता के अधम वातावरण में रहनेवाला व्यक्ति आज एक आत्मशून्य, यांत्रिक पुतला ही तो है; भगवान् की दी हुई स्वतन्त्रता से उज्वल और महिमान्वित मनुष्य कहां है ?

कवि का निजी जीवन अपने आप में उन सब बाधाओं के खिलाफ कठिन और अशेष युद्ध की एक सजीव कहानी है, जो बाधाएं मनुष्य के गौरव और गति को पग-पग पर अवरुद्ध कर रखती हैं। स्कूलमास्टर अपने विदेशी स्वामियों को प्रसन्न करने के लिये शिशु के मन को किसी जड साम्प्रदायिकता के बन्धन में बांध रहा था। रवीन्द्रनाथ ने उसके खिलाफ मानो धर्म-युद्ध आरम्भ कर दिया। शांतिनिकेतन में उन्होंने शिक्षा का केन्द्र स्थापित किया, जहां तरुणों को अबाध मानसिक और अध्यात्मिक विकास के लिये अनुकूल आबहवा मिल सके। धनोन्मत्त व्यवसायी 'सुन्दर' के ऊपर अपने व्यापार की जडता की छाप बिठा रहा था। जो नित्यकाल का आनन्द वहन करता है, उसे ही लोभ से प्रत्याशित होकर बाजार की अपवित्रता का वाहन बनाये दे रहा था। रवीन्द्रनाथ ने वर्तमान सभ्यता की इस दुर्निवार प्रवृत्ति का विरोध किया और शिल्पियों के लिये एक ऐसा मुक्त स्थान दिया जहां लाभालाभ की धारणाएं प्रवेश ही न सकें। मानव हृदय-मन्दिर पर आसीन भागवत सत्ता को धर्म का बाह्य आडम्बर अपमानित कर रहा था। रवीन्द्रनाथ ने उस महान संदेश को उदात्त स्वर से घोषित किया जिसके द्वारा मनुष्य अपने गौरव को समझ सके— अपनी शाश्वत पवित्रता का अनुभव कर सके। हमारा जीवन और साहित्य दोनों पश्चिम का अंध और हास्यकर अनुकरण कर रहे थे। रवीन्द्रनाथ उठ खड़े हुए अपनी निजस्व सचाई और सादगी लेकर, जिसमें वाणी का वरदान आ मिला। राष्ट्रीयता ने मनुष्य-मनुष्यके अन्तरकी सहज प्रेमधारा को रोक रखा था। रवीन्द्रनाथ ने दिखाया कि पूर्व और पश्चिम दोनों के हृदय में एक ही प्राणों की धड़कन बजा करती है—दोनों उस प्रकाश के लोकतन्त्र में रह रहे हैं जहां द्वैत का अंधकार नहीं है।

कवि होने के कारण रवीन्द्रनाथ के प्राण छन्दोमय थे; वे इस ब्रह्माण्ड के छन्द को सर्वत्र सुन पाते थे। आकाश की सुदूरस्थ तारिका का प्रकाश किस तरह घास के अन्तराल में छुपे जुगनू के भीतर प्रतिफलित हो रहा है, पथ के किनारे का उपेक्षित फूल और मनुष्यका विकासोन्मुख जीवन किस तरह एक ही छन्द में गुथे हैं, इसे वे अनुभव कर पाते थे। उस छन्द को जो भंग करता था उसकी वेदना उनके मर्म में आ लगती थी। स्वतन्त्रता तथा मुक्ति—के भीतर ही छन्द का सारा रहस्य निहित है। पावों में बेडियां जकडकर कोई नहीं नाचता, नृत्य का अर्थ ही आजादी है। इसीलिए मनुष्य अपनी दैवी सत्ता का प्रकाश तब तक नहीं कर सकता जब तक वह दासता के मलिन वस्त्रों से अपने को ढाके हुए है—फिर वह दासता राजनैतिक हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो, नैतिक हो, अथवा अध्यात्मिक !

इसीलिए आज मानवीय महिमा के अन्वेषक और प्रचारक उन रवीन्द्रनाथ को हम अपने भक्ति पूर्ण प्रणाम अर्पित करें, जिन्होंने उस महिमा का भागवत स्वरूप हमारे निकट उद्भासित किया।

★

जाति भेद का घुन—

चोर यहां छिपा है

(१) मद्रास प्रान्त के तिनेवला जिलेके अन्तर्गत अपूरा कुलम गांवका सूफियांथवर नामक एक सवर्ण युवक एक दिन नादूवाक्कुलम के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड स्कूल में गया। वहां वह स्कूल के अछूत मास्टर के एक चार साल के अबोध बालक से छुआ गया। सूफिया थेवर ने एक अछूत लडके द्वारा स्पर्श किंय जाने से अपने को भ्रष्ट समझा और गुस्सेमें आकर उसने लडके को बुरी तरह पीटा। लडके का पिता स्कूल मास्टर उस समय स्कूल से बाहर गया हुआ था। जब वह लौटकर आया तब उसने यह सब घटना सुनी। मास्टर ने सूफिया थेवर को स्कूल से बाहर चले जाने के लिए कहा। सूफिया ने स्कूल से जाते हुए मास्टर को धमकी दी कि उसको इसका फल चखना पडेगा। इसके अनुसार वह तीसरे प्रहर अपने अन्य छः साथियो को लेकर आया। उन सबके हाथ में लाठियां और अन्य हथियार थे। उन्होंने स्कूल मास्टर और आदि द्रविड समाज [अछूतों] को धमकाया। इसी बीच पार्टीके एक आदमीने स्कूल मास्टर के मुंह पर जोरका प्रहार किया। स्कूल मास्टर और उसकी गरीब पत्नी ने यह समझ कर कि वह पार्टी उनकी हत्या करने आई है हल्ला मचाया, और भाग जाने का प्रयत्न किया, पर आक्रान्ताओं ने उन को घेर लिया। उनकी चीख पुकार गांव के दूसरे भागमे पहुंच चुकीथी और वहां लोग आगये और तब उनके प्राण बच पाये। बचाने वालों में से भी एक सख्त घायल हुआ।

(२) बुलन्द शहर के एक गांव में सवर्ण जमींदार ने एक चमार को अपनी बैलगाडी अपने एक सम्बन्धी के यहां भेजने को कहा। चमार ने जमींदार का कहा नहीं माना क्योंकि उसी दिन वह अपने भाई को दूरके रेल्वे स्टेशन पर पहुंचाने जा रहा था। जमींदार ताव में आगया और चमार के घर पहुंचा और चमार को घरसे घसीटते हुए बाहर निकाला और खूब पीटा, इससें चमार के कई गहरे घाव हो गये। इस भय से कि चमार थाने में रिपोर्ट लिखाने न पहुंच जावे उसको रस्सी से बांध कर रक्खा गया। बाद में उसको यह धमकी देकर छोड दिया गया— यदि भविष्य में ऐसा करेगा तो उसको मार दिया जायगा।

(३) पंजाब रोहतक जिले के एक गांव के सवर्ण हिन्दुओं ने चमारों से कहा कि वे जूता ३) जोडा दें और यदि ६ मास से पहले जूता फट जाय तब जूते की दूसरी जोडी मुफ्त में उसे देनी पडेगी जब चमारों ने कहा कि ३) में जूते में लगने वाला सारा माल भी नहीं आता तब उन पर ५०) जुर्माना किया गया। और जुर्माना तत्काल भरने के लिए कहा गया। जुर्माना न भरने पर उनको बुरी तरह से पीटा गया और उनका सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार किया गया। इसका मतलब यह था कि वे स्थानीय बाजार से कुछ खरीद नहीं सकते थे उनके पशु गांव के चरागाह में नहीं आ सकते थे, न उनको कोई गांव वाला अपने यहां नौकरी देगा। चमारों ने सबसे सहायता मांगी मगर किसी ने मदद न दी।

(४) अलीगढ जिले में खेरिया गांव के हरिजनों ने बेगार करने से इन्कार कर दिया। इससे सवर्ण हिन्दू नाराज होगये और ७ मार्च होली के दिन जब वे जमा हुए हरिजनों के इलाके को फूंकना शुरू कर दिया। हरिजनों पर भालों और अन्य घातक हथियारों से हमले किये गये। घरों को फूंक दिया गया। इस आग में दो हरिजन और दो जानवर जीते जी जल मरे घायल हुए सो अलग। इस घटना पर केन्द्रीय असेम्बली के विगताधिवेशन में काम रोको प्रस्ताव भी उपस्थित करने का प्रयत्न किया गया था।

[५] बुलन्दशहर जिले के अम्बका गांव में कुछ सवर्ण हिन्दुओं ने बेगार मे काम करने इंकार कर दिया, इस पर उन हिन्दुओं ने भालों, राइफलों और पिस्तोलों से हमला किया, ८ हरिजन घटनी स्थल पर मारे गये १२ बुरी तरह घायल हुए।

(६) मास पूर्व मदुरा जिले के एक हरिजन ने अपने पुत्र का सार्वजनिक म्यूनिस्पल स्मशान में अन्त्येष्टि संस्कार किया वहां के सम्पूर्ण हिन्दुओं ने इस पर आपत्ति की उस पर फौजदारी मुकद्दमा चलाया गया और उसको छः मास की, कडी कैद की सजा दिलाने में वे समर्थ हुए।

ये घटनाएं हैं जिन पर हमें गम्भीर विचार करना चाहिए और अपने सामाजिक स्तर को उन्नत बनाने के लिए मानवताकी इन दर्दनाक कहानियों का जड मूल से नष्ट कर देना चाहिये। हम राजनैतिक स्वतन्त्रता का हर्ष मनाने जा रहे हैं पर याद रखिये राजनैतिक स्वतन्त्रता सामाजिक स्वाधीनता के रहते ही जीवित रह सकती है। क्या हम पाकिस्तान के विष वृक्ष को सींचने वाली अस्पृश्यता की इस बुराई को नष्ट करने का साहसिक कदम उठाने में अब भी संकोच करेंगे! यदि हम अब भी हिचकिचाये तो विनाश का दानव हमे सदैव के लिए नेस्तनाबूद कर देगा।

★ —"स्नातक"

सामाजिक अभिशाप—

पाकिस्तान कैसे नष्ट हो सकता है

(लेखक— श्री श्यामजी पाराशर एम. ए.)

— गतांक से आगे —

भारतमाता—' हजारों बीघे जमीन को कैसे समेटें।'

भगवान—'एक जमीन ही वहां रहने दें। जिन हिन्दुओं की अपनी जमीन नहो उन्हें भागीदार बनाकर चार पांच जने मिलकर अपने हाथों से खेती बाड़ी करें। जब तक निभे निभायें, परन्तु बाल बच्चों को हिन्दुस्तान में ही सुरक्षित स्थान पर रक्खें'।

'आपभी अजब बातें करते हैं। महीना दो महीना काटने हों तो यह बात हो भी सके, वर्षों तक ऐसा होना असम्भव है'।

'परन्तु इसके बिना कोई चारा नहीं। यदि हिन्दू एक वर्ष तक डटकर ऐसा कर जांय तो पाकिस्तान में भी उन्हें कोई कुछ नहीं कह सकता। आखिर हिन्दुस्तान में भी तो ४करोड़ मुसलमान हैं। हिन्दुओं की आराम तल्बी,उनकी अमीरी की शान, उनका राजसी ठाट, उनकी बड़ी २ मंडियाँ गुण्डों के लिए आकर्षण हैं। हिन्दू अपनी शान हिन्दुस्तान में बनाएं और हिंमत और बहादुरी से रहें पाकिस्तान में तभी उनका कल्याण हो सकता है। परन्तु इस बात में हिन्दुस्थान के हिन्दुओं को अपने भाइयों की दिल खोलकर सहायता करनी होगी। मन्दिरों, धर्मशालाओं, गुरुकुलों, ऋषिकुलों, स्कूलों, कालिजों, होटलों में जितनी भी जगह है सभी उनके लिए रिजर्व कर देनी चाहिए। जिससे वे अपने परिवारकी निवास समस्या से मुक्त हो जांय'।

'तो क्या इससे पाकिस्तानी समस्या हमेशा के लिए समाप्त हो जायगी।

'हां मेरा ऐसा ही विचार है। आज यदि हिन्दुओं में अपने भाइयों के प्रति सच्चा प्रेम पैदा हो जाय, आज यदि हिन्दू रुपये की ममता को छोड दें, आज यदि वह अपनी सामाजिक त्रुटियों को दूर कर संगठित हो जांय तो हिन्दुस्तान के मुसलमान को इससे बड़ा हौसला मिलेगा। वह अपने पूर्वजों द्वारा पाले गये धर्म की गोद में फिर आसकेगा। तभी तो देश में सच्ची स्वतन्त्रता हो सकेगी।

"परन्तु अंग्रेज तो १५ अगस्त को भारत छोड रहा है।"

"परन्तु अंग्रेज का हिन्दुस्तान से चला जाना ही तो स्वतन्त्रता नहीं। जब अंग्रेज हिन्दुस्थान में नहीं था उस समय क्या हिन्दुस्तान स्वतन्त्र था? अंग्रेज को हिन्दुस्तान में आये कुल तीन सौ वर्ष हुए। क्या तेरी गुलामी का इतिहास केवल तीन सौ वर्ष का ही है। औरंगजेब और अल्तमश का जमाना क्या गुलामी का जमाना नहीं था। अगर दस करोड मुसलमानों के रहते तू स्वतन्त्र कहा सकती है तो १लाख अंग्रेज भी तेरी गोदी में रह लें तो क्या?"

"परन्तु मुसलमान तो मेरे पुत्र हैं अंग्रेज तो मेरे पुत्र नहीं।"

ऐसा कहकर तू अपना अपमान कर रही है। जगम्माता विश्वम्भरा की पदवी से विभूषित हो आज विश्व के केवल एक ही खण्ड की माता बनने में तू अपना गौरव समझ रही है। संसारमें जितने भी प्राणी हैं तू उन सबकी माता है। पुत्र मां को भले ही भूल जायं परंतु मां अपने पुत्र को कभी नहीं भूलती। पूत कपूत भले ही हो जाय माता विमाता कभी नहीं होती।"

"तो क्या स्वतंत्रता की देवी १५ अगस्त को नहीं आयगी?"

"न तो यह १५ अगस्त को आयगी और नहीं जून ४८ को। सामाजिक सुधार स्वतन्त्रता का पहला कदम है। बिना सामाजिक सुधार किए स्वतंत्र भारत की कल्पना केवल कल्पना ही है।"

"परन्तु यह हिंदु-मुस्लिम झगडे अंग्रेज ने ही पैदा किए हैं। इनके चले जाने पर ये झगडे स्वतः शांत हो जायंगे।"

"कदापि शांत न होंगे, बल्कि और भी बढेंगे। अंग्रेज तो केवल इन झगडों के लिए व्यर्थ में ही बदनाम था। इस सारे झगडे की जड बिगडे हुए दिमाग वाले तेरे ही धर्माचार्य हैं। मुसलमान के हाथ का पानी पीने से तो इनका धर्म बिगड खराब जाता है परंतु पानी की बर्फ पी जाने से धर्म बराबर बना रहता है। सादी रोटी खाने से तो धर्म भ्रष्ट हो जाता है, परंतु डबल रोटी दूध में डाल कर पी जाने से धर्म को चार चांद लग जाते हैं। अपना भाई जब तक उसके सिर पर चोटी है तब तक उसकी छाया से भी दूर रहेंगे, उसीके मुसलमान बन जाने पर उसका जयजयकार गायेंगे।'

'ये कट्टर पन्थी लोग अब तक न समझे तो अब क्या समझेंगे'

'नहीं समझेंगे तो नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगे। आजाद होकर भी दूसरों के गुलाम बने रहेंगे।'

'तो क्या अंग्रेज के स्थान पर कोई दूसरा आ जायगा?'

"अंग्रेज अभी गया कहां है भोली बेटी! अंग्रेज कहीं नहीं जायगा। कुछ दिन तक अलग खड़ा होकर वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का तमाशा जरूर देखेगा। उसकी गुरखा और गोरी फौजें पाकिस्तान तथा हैदराबाद में डटी रहेंगी। पाकिस्तान को हमेशा अंग्रेज की शह मिलती रहेगी। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के संघर्ष मे अंग्रेज सदैव मुसल्मान का ही साथ देगा"।

"परन्तु भगवन् यह तो बताइये मेरा बनेगा क्या। आप घटघटवासी सर्वान्तर्यामी हैं, चाहें तो जल में थल बना दें, चाहें तो थल में जल बहा दें। संसार की बुद्धियों को प्रेरित करनेवाले आपही हैं। प्रभो मेरी यह दुर्दशा आप कबतक देखते रहेंगे।

"तेरा कल्याण होगा और बहुत शीघ्रही होगा। तेरे पुत्र अवश्य चेतेंगे। यद्यपि मैं भी सब कुछ कर सकता हूं,

आर्य युवकों का कर्तव्य

[गो-वध-निषेध आन्दोलन]

(लेखक— पं. धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति
प्रधान– अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद्, सम्पादक 'सार्वदेशिक' देहली.)

अपने गत लेख में मैंने आर्य युवकों का ध्यान उनके कुछ कर्तव्यों की ओर आकर्षित करते हुए बताया था कि उन्हें अपने प्रिय देश आर्यावर्त के भविष्य निर्माण मे अपने उत्तरदायित्व को विशेष रूप से अनुभव करते हुए अपनी सब शक्तियों के विकास, आर्य वीर दलों के प्रबल संगठन, स्वाध्यायादि द्वारा आर्य संस्कृति के तत्वों का ज्ञान प्राप्त कर उसके अनुसार आचरणादि की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। अब कुछ अन्य आवश्यक कर्तव्यों की ओर आर्य युवकों और कुमारों का ध्यान इस लेख द्वारा आकर्षित करना चाहता हूं।

सबसे प्रथम मैं गोरक्षा तथा गो-वध निषेध के विषय को लेता हूं। गोरक्षा के विषय में किसी का मतभेद नहीं हो सकता किन्तु यह सचमुच दुःख की बात है कि इस आवश्यक विषय की ओर आर्य जनता का पर्याप्त ध्यान नहीं है। महर्षि दयानन्दजी जिस रूप में गो-रक्षिणी सभाओं का देश व्यापी संगठन बना कर उनके द्वारा गो वंश की रक्षा और उन्नति का प्रबन्ध करना चाहते थे तथा अंग्रेज शासकों पर भी जनमतका दबाव डालकर उनके द्वारा गोवध निषेध का कानून बनवाना चाहते थे खेद है कि उस रूप में इस आवश्यक विषय के सम्बन्ध में कार्य किया नहीं गया। कुछ गोशालाएं कई स्थानों में अवश्य स्थापित की गई किन्तु उन के संचालकों ने अधिक तर अधमरी दुबली पतली गौओं को आश्रय देना अथवा दूध की थोडी सी व्यवस्था कर देना मात्र अपना कर्तव्य समझा। गोवंश को उन्नत करने के लिये अनेक परीक्षण जो इन संस्थाओं द्वारा हो सकते थे तथा अब भी हो सकते हैं, उन्हें आर्थिक दृष्टि से अधिक स्वावलम्बी बनाने के लिए और जो कुछ कार्य हो सकता था तथा स्वयं हिन्दुओं के द्वारा बूढी हो जाने पर जो गौएं कसाईयों को बेच दी जाती हैं उन को रोकने के लिये पर्याप्त व्यवस्थादि नहीं की गई। महात्मा गान्धीजी ने पिछले दिनों जनता का ध्यान इस विषय की ओर आकृष्ट किया है जो उचित ही है।

किन्तु उसके साथ कानून द्वारा गो-वध को अपने स्वतन्त्र आर्यावर्त में बन्द कराने के लिये भी प्रबल आन्दोलन करना आवश्यक है। बाबर, हुमायूं, अकबर जैसे कई मुगल बादशाहों तक ने जिस गोहत्या को कानून द्वारा बन्द करा दिया था उसे भी देश के स्वतन्त्र होने पर हम आर्यावर्त में न बन्द करा सकें यह अत्यन्त अनुचित तथा लज्जास्पद बात होगी। आर्य युवकों को इस विषय में विशेष भाग लेना चाहिये। समस्त प्रान्तीय आर्य कुमार परिषदें इस विषय में आर्य कुमार सभाएं तथा आर्य युवक संघादि संस्थाएं इस विषयक प्रस्ताव पास करके भारत के राष्ट्रीय शासकों के पास भेजें कि गो हत्या को कानून से भी अवश्य बन्द करना चाहिये क्यों कि गो वंश के ऐसे नाश के कारण भी दूध आदि की दुर्लभता से समस्त देश वासियों को हानि पहुंचती है। यह केवल धार्मिक प्रश्न ही नहीं है आर्थिक व साम्पत्तिक भी है जैसे कि मैंने महात्मा गान्धीजी, सरदार वल्लभ भाईजी पटेल तथा देश रत्न डा. राजेन्द्र प्रसादजी आदि को लिखा है। महात्मा गान्धीजी ने कानून बनाने के विरुद्ध जो युक्ति दी है वह ठीक नहीं है कि इस से हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्यों पर जबर्दस्ती होती है। इस जबर्दस्ती की युक्ति को मानना हो तो चोरी व्यभिचार, शराब, बाल्य विवाह अस्पृश्यतादि किसी भी चीज के विरुद्ध कोई कानून नहीं बन सकता क्योंकि उससे चोरों, व्यभिचारियों, शराबियों, बालविवाह, अस्पृश्यतादि को धर्म मानने वाले पौराणिक भाइयों पर जबर्दस्ती होती है। जिस से समस्त देशवासियों को हानि पहुंचती हो और इस लिये जिसको हटवाने के लिए जनता इतनी उत्सुक हो कि हजारों पत्र, तार आदि नेताओं के पास भेज रही हो जैसे कि म. गांधीजी ने माना है। उसे कानून द्वारा बन्द कराना राष्ट्र नेताओं का कर्तव्य है। इस विषयक प्रबल आन्दोलन आर्य युवकों को विशेष रूप से चलाना चाहिए।

परन्तु तेरे पुत्रोंद्वारा किया हुआ कार्य अधिक फलदायक होगा। आओ देवी अपने पुत्रों को ढाढस दो उन्हें कहो वे अपने दोषों दूर करें, उन्हें कहो वे प्रेम और प्यारसे रहना सीखें आर्य वीर दल जैसे संगठन को सुदृढ बनायें सैनिक संगठन अधिक न हो सब एक सूत्र में आबद्ध हो जाय। साधुओंकी जमातों को कानून–विरुद्ध (Un Lawful) घोषित कर दिया जाय। कांग्रेस सच्ची राष्ट्रीयता को अपना ले और राष्ट्रीयता विरुद्ध समझौता प्रिय नीति को तिलांजली दे दे। आर्य समाज को चाहिये, वह अपनी सारी शक्ति शुद्धि के काम में लगा दे, सनातन धर्म आर्य समाज की इस काम में पूरी सहायता करे। हिन्दू राजा अपना कर्तव्य पहचानते हुए हिन्दू राष्ट्र के सेनानायक बनें। तेरा कण-कण हिन्दुत्व [आर्यत्व] के रंग में रंग जाय, कण-कण से यही आवाज गुंजे– "नहीं बनेगा पाकिस्तान, बोलो सब हो एक जबान। बच्चा बच्चा हो बलिदान, मार भगा दो पाकिस्तान" तू धीरज रख, तेरा अवश्य कल्याण होगा।.........

पाकिस्तान का विषवृक्ष से
साभार उद्धृत

★ ★ ★

सामाजिक अभिशाप——

पाकिस्तान की पृष्ठ-भूमि

(गतांक से आगे)

भारतमाता—“प्रभो ! आप मेरे सपूतों को बुद्धि प्रदान कीजिये ताकि वे अपने संख्याबल को घटाना बन्द करदें। अपने गरीब भाइयों से मनुष्यों का सा व्यवहार करें। अपने सामाजिक ढांचे में समयानुकूल परिवर्तन लावें। अमीरी की शान दिखाने का भूत जो मेरे पुत्रों के सिर पर सवार हुआ है उसे जलांजलि दें। अपनी दौलत को गरीबों की राह का कांटा न बनावें। मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि यदि आज हिंदुसमाज अपने दोषों को दूर करदे तो अलग हुआ पाकिस्तान पुनः हिंदुस्तान माना जाय”।

भगवान—“हां ! तेरा विचार बिल्कुल ठीक है तेरे देश का जो महात्मा गांधी है उसका विचार भी ऐसा ही है। तभी तो वह कहता है, अलग हुआ छोटा हिंदुस्तान बहुत जल्दी बड़े हिंदुस्तान में आ मिलेगा”।

“तो आप गांधीजी की विचार धारा को अच्छा समझते हैं ? आजकल वे जिस मार्ग पर चल रहे हैं क्या आप उस मार्ग को मेरे लिये श्रेयस्कर समझते हैं। अपनी प्रार्थना सभाओं मेंजो कमजोर विचार वे प्रकट करतेहैं क्या आप इन विचारों की सराहना करते हैं”।

“गांधीजी के शब्द कुछ भी हों, परन्तु अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का उनका अपना मार्ग है। गांधी जी की भावना केवल एक है। वे हिंदू समाज से अपने सामाजिक पापों के लिये प्रायश्चित करना चाहते हैं और सचमुच यदि हिंदूसमाज में यह प्रायश्चित की भावना जागृत हो जाय तो आज ही पाकिस्तान को समर्द हो जाय”।

‘परन्तु गान्धीजी तो मेरे इन कपूतों के सामने झोली फैलाते हैं’।

तेरे लिए-अपने लिए नहीं। इस बुढापे में जब कि उत्तराखण्ड में आकर उसे तपस्या करनी चाहिए वह बुढा फकीर दर दर भटकता है। तेरे ही लिए, अपने लिए नहीं !

‘परन्तु महात्मा की इस उदारताको मेरे कपूत उसकी कायरता समझते हैं ! उनका दिमाग और भी बिगड़ा जारहा है’।

‘दस करोड़ कीसमस्या कोई छोटी मोटी समस्या नहीं । न तो ये बाहर भेजे जासकते हैं न धरती में ही समा सकते हैं। यहां स्वर्ग में पहले ही ओवर क्राउडिंग हो रहा है-रहना उन्होंने तेरी ही गोदी में है। शुद्धि तेरे पुत्र करेंगे नहीं, फिर तो ये १० करोड़ से अपने आप १५ करोड़ बनेंगे। गांधीजी चाहते हैं कि इन्हें प्रेम और प्यार से शुद्ध करके अपने में मिला लिया जाय।

‘परन्तु गान्धी ऐसा कहते तो नहीं’

जिस पोजीशन पर वह आज है, जिस वातावरण में उसे बोलना और काम करना पड़ता है उस अवस्था में वह ऐसा कह सकता ही नहीं। वह तो सफर मैना का आदमी है। उसका काम है रास्ता साफ करना। यह काम आर्य समाज और सनातन धर्म का है कि वे आगे बढें और जितने भी नेशनलिस्ट मुस्लिम हैं उन्हें हिन्दू समाज की शरण में ले लें।

‘पाकिस्तान बन जाने पर क्या अब भी भगवान को मुसलमानों के उद्धार की आशा है’

हां पाकिस्तान अभी मुसलमानों के हृदय तक पहुँचा है। उनकी आत्मा में अभी तक भी पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त किया हिन्दुत्व का प्रेम छिपा है। ‘परन्तु जब तक हिन्दुस्तान का धूम्रकेतु जिन्ना जिन्दा है तब तक तो ऐसी आशा करना नितान्त व्यर्थ है, तथापि इसके पश्चात् यदि कोई अच्छा मुसलमान उसका स्थान सम्हाल सका तो भले ही यह बात सम्भव हो सके। यह पाकिस्तान का झगड़ा भी तो केवल जिन्ना काही खड़ा किया हुआ हैं। प्रभो आप इसे कब तक जीवित रक्खेंगे।

बुढापे में इस शख्स को इज्जत नसीब हुई। दस वर्ष पहिले जिसे किसी भी प्रान्तीय असेम्बलीमें एक भी साथी न मिल सका था आज वही व्यक्ति गवर्नर जनरल पाकिस्तान बना है। अब तो यह कम से कम पन्द्रह साल और जियेगा।

“तबतो मेरे उद्धार की कोई आशाही नहीं। पन्द्रह वर्ष में तो पाकिस्तान के लोग शायद पंजाब का नाम भी भूल जायगे। इस प्रदेश में रहने वाले हिन्दुओं का तो सर्व नाश हो जायगा”।

इसमें कोई सन्देह नहीं। हिन्दुओं को चाहिए पाकिस्तान को छोडकर रावी के पार आ जाय” “कहना बहुत आसान है, प्रभो परन्तु अपना घर -बार छोडकर दर दर भटकना सहज बात नहीं। मेरे पुत्र मैं उनके लिए रोती तो हूं परन्तु वे ऐसे स्वार्थी और निर्दयी हैं कि अनेक बार तो मैं जीवन की आशा ही छोड बैठती हूं। स्वार्थ हिन्दू का धर्म है, रुपया हिन्दू का इष्ट देव है। अगर पाकिस्तानी पिशाचों ने मेरे पुत्रों के कपडे उतारें तो ये मेरे पुत्र उन्ही आश्रितों, पीडित भाइयों की चमडी तक उतारने को तय्यार हैं। दया धर्म ता उन्हे छूतक नहीं गया”।

’ पशुओं से प्रेम करना ईंटों और पत्थरोंपर फूल चढाना और मनुष्य की खाल खेंचना यह इनका धर्म है। मेरे धर्मवीर पुत्रों ने हरिद्वार, देहरादून तथा अन्यत्र जो जो कष्ट सहे इन्हीं वीरों की हिम्मत थी। जिन लोगों पर आशा रखकर ये लोग इतनी दूर से भागे हरिद्वार आये थे उन्हीं लोगोंने इनके साथ वह दुर्व्यवहार किया कि देखते ही मेरा हृदय टुकडे २ हो गया। जिस मकान का किराया ४ रुपया था इन लोगोंने उसके ४० मांगे। जिन लोगों

— लेखक —
श्री श्यामजी पाराशर,
एम. ए.

के बाप दादाने पंडो को मकान बनाकर दिये। अच्छी अवस्था मे आने पर जो पंडे यजमान को सौ सौ बार झुक झुक कर प्रणाम किया करते थे—विपदाके दिनों में इन पण्डो ने अपने इन यजमानों की बात तक नहीं पूछी। धर्म शालायें किराया शालाएं बन गई। मुन्शी ने सब कमरों को ताले लगा लिए हैं। जिसके पास तन ढकने को कपडा न था वह बेचारा सर्दी गर्मी आंधी वर्षा में सडकों पर पडा। यह शरणार्थी लोग जो अपने घरों में बादशाह थे, लाखों में खेलते थे, उन की हरि द्वार में वह दुर्दशा हुई क्या बताऊं, परन्तु धन्य हैं वे धर्म वीर! इस कदर अपमान सहते हुए भी वे अपने धर्म-पथ से विचलित नहीं हुए। प्रभो! आप क्या इसी व्यवहार पर आबादियों के तबादले की सलाह देते हैं।

"आप क्या पश्चिमी पंजाब को छोड देने में ही हिन्दुओं का कल्याण समझते हैं। गांधीजी का तो ऐसा विचार नहीं"। "आज नहीं तो कल हो जायगा। बुद्धिमान वही है जो आने वाले भय का पहले ही प्रबन्ध कर ले। आग लगने पर कुआ खोदना कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं। गांधी और कृपलानी आकाश में उडते हुए बातें करते हैं, हमें तो पृथ्वी पर चलने वालो की सोचना है। महीनों से सहस्त्रों शरणार्थी यू. पी. और राजस्थान में पडे हैं। अगर गांधीजी और कृपलानी जी में हिम्मत था तो फिर से इन लोगों को बसा क्यों न लिया। बिहार वाले भी तो अपने घरों में बस गये। दो ही उपाय हैं या तो यू. पी. और बिहार के १०, १२ लाख किसान पंजाब में रह कर हिन्दू जमींदारों का अन्त करें, या यह न हो सके तो जितने भी साधु-सन्त हैं वे सब पश्चिमी पंजाब में आबसे और खेती बाडी करें। हिन्दु जमीदार के नीचे मुसलमानी मजारे काम करें, पाकिस्तानी सरकार इसे सहन न करेगी। प्रत्येक मुसलमान अपने आपको पंजाब का हाकिम समझेगा। फिर वह अपने गुलाम की जमीन क्यूं जोते। हिन्दू लालाजी आज तक जिन्होंने हलको छुआ तक नहीं वे क्या खेतीबाडी करेंगे। पाकिस्तान में न तो लेन-देन का ही काम हो सकता है न बटाई पर खेतीबाडी का। तिजारत पर इसको बन्दिशें होंगी कि उसमें बचत सब सरकार ले जायगी। नौकरी के द्वार हिन्दुओं के लिए सर्वथा बन्द होंगे, निस-पर दिन-रात गुण्डों की मार, अपहरण, अपमान, झगडे और फसाद। मैं तो इसी में इनका कल्याण समझता हूं कि जितनी जल्दी हो सकता है वे अपनी सम्पत्ति को समेट लें और हिन्दुस्तान में उसे सुरक्षित रक्खें।

—क्रमशः

भा...र...त........का

धूम्र केतु — 'जिन्ना'

ले०——श्री इन्द्र विद्या वाचस्पति

मियां जिन्ना में मस्तिष्क की मात्रा बहुत अधिक और हृदय की बहुत कम शायद शून्य के आस पास है। इसका प्रमाण यह है कि मुस्लिम लीग के आन्दोलन से देश में जो भयंकर हत्या काण्ड मचा उसने कभी मियां जिन्ना के हृदय का स्पर्श नहीं किया। हजारों कुनबे तबाह हो गये, पुरुष मारे गये, स्त्रियों का अपहरण हुआ बच्चे मौत के घाट उतारे गये पर इस पत्थर की मूर्ति में द्रवता पैदा नहीं हुई न हृदय ही पसीजा और न आखों में आसूं ही छलके अपनी हृदय हीन नीति के उन शिकारों को मि. जिन्ना ने दूसरे ऐसे देखा, जैसे शिकारी अपनी गोलियों के परिणामों को जंगल में पड़े देखता और सन्तुष्ट होता है। जब महात्मा गांधी हृदय की आवाज को सुनकर पूर्वी बंगाल और विहार में पैदल मारे-मारे फिर रहे थे, तब मि. जिन्ना औरंगजेब रोड के सजे सजाये बंगले में बैठकर ठण्डे दिमाग से पाकिस्तान की स्कीम बना रहा था। ऐसा आदमी राजनीति की शतरंज का सफल खिलाडी होता हुआ भी संसार के लिए कल्याण कारी नहीं सिद्ध होगा। जिस मनुष्य का हृदय दूसरे के दुख को देखकर पसीजता नहीं, वह मनुष्य जाति के लिए अभिशाप सिद्ध होता है। ऐसा शासय नौशेरवां या विक्रमादित्य नहीं हो सकता। हृदय हीन शासक चाहे कितना ही शक्ति सम्पन्न हो प्रजा के लिए दुखदायी सिद्ध होता है इसी दोषके कारण मि. जिन्ना भारत का धूम्र केतु है। उसके अभ्युदयने अपशकुन बनकर देश का अंग भंग कर दिया। यह धूम्र केतु अब भी आकाश में उग्र रूप से चमक रहा है। सम्भव है वह देश में आन्तरिक संग्राम को उत्पन्न करने का कारण बने और सम्भव है वही धूम्र केतु पाकिस्तान के लिए भी अनिष्ट सिद्ध हो। मुसोलिनी और हिटलर के जीवन जो शिक्षा दे गये हैं, उनसे हमारे मन में सब तरह की अनिष्ट आशंकाएं उत्पन्न होना स्वाभाविक है परमात्मा करे वह आशंकाएं निर्मूल सिद्ध हों। परन्तु आज तो हमें उन सब आशंकाओं का सामना करने के लिए तय्यार रहना चाहिए मि. जिन्ना जैसा असाधारण धूम्रकेतु मनुष्य जाति का पिण्ड आसानी से नहीं छोडा करते।

आर्य युवकों का कर्त्तव्य

अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद के प्रधान—



आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान्
श्री पं. धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति
सम्पादक सार्वदेशिक देहली

हमारा देश इस समय जिस विचित्र परिस्थिति में से गुजर रहा है उससे सब शिक्षित तथा विचारशील युवक परिचित हैं अतः उसके विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं किन्तु इस परिस्थिति विशेषतः १५ अगस्तको प्राप्त होनेवाली तथा कथित स्वतन्त्रता को दृष्टि में रखते हुए आर्य युवकों का कर्तव्य क्या है इस पर प्रकाश डालना में अपना कर्तव्य समझता हूं। मेरा प्रत्येक आर्य युवक और कुमार से अनुरोध है कि वह इन बातों पर गम्भीरता से विचार करके अपने कर्तव्य का पालन करने में तत्पर हो। [१] सब से पहली बात जो मैं आर्य युवकों के सम्मुख विशेष रूप से रखना चाहता हूं वह यह है कि अपने प्रियदेश आर्यावर्त के भविष्य निर्माण में उनका बड़ा भारी उत्तर दायित्व है जिसे उन्हें अनुभव करना चाहिये। १५ अगस्त से भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त होकर स्वतन्त्र हो जाएगा केवल इतने से हम प्रसन्न नहीं हो सकते विशेषतः जब भारत विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना द्वारा एक भयंकरसंघर्ष और घरेलू युद्ध का बीज कूटनीति निपुण अंग्रेजों ने बो दिया है। तथापि निराश होने की कोई बात नहीं। प्राप्त अवसर से लाभ उठाना और भारत को सब दृष्टियों से पूर्ण स्वतन्त्र बनाने का प्रयत्न करना प्रत्येक आर्य युवक का कर्तव्य है इस कर्तव्य की पूर्ति के लिये निम्न साधनों को कार्य में लाना आवश्यक है।

।१। प्रत्येक कुमार और युवक अपनी शारीरिकशक्तिकी वृद्धि के लिये नियमित व्यायाम, मानसिकशक्तिकी वृद्धिके लिये वेदादि सत्य शास्त्रों का स्वाध्याय आत्मिकशक्ति के विकास के लिए संध्योपासनादि प्रति दिन नियमपूर्वक अवश्य करे।

।२। आर्य वीर दल में सम्मिलित होकर प्रत्येक आर्य युवक और कुमार आत्म रक्षा और परिवार, समाज तथा देश रक्षा की योग्यता प्राप्त करे। अनुशासन तथा कर्तव्य परायणता का भी क्रियात्मक पाठ सीख आर्य वीर दलों का अत्यन्त प्रबल संगठन वर्तमान तथा भविष्य में सम्मिलित आततायियों व गुण्डों द्वारा आक्रमण से रक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक है इसे प्रत्येक आर्य युवक को अवश्य हृदयांकित कर लेना चाहिये।

।३।स्वतन्त्र आर्यावर्त में (देश का यही नाम सर्वथा उचित है जो प्राचीन होने के अतिरिक्त बड़ा स्फूर्ति दायक है इस लिए इस विषयक आन्दोलन करके इसे ही प्रचलित करना चाहिये। स्वतन्त्र देश को इन्डिया यह अंग्रेजी नाम रखना तो सर्वथा अनुचित और हमारे आत्म सन्मान की भावना के विरुद्ध तथा दास मनोवृत्ति का सूचक है) आर्य धर्म और संस्कृति के आदर्शों के अनुसार ही सारा कार्य होना चाहिये। आर्य भाषा अथवा संस्कृत निष्ठ हिन्दी और पूर्ण वैज्ञानिक देवनागरी लिपि के अन्दर अपना समस्त कार्य युवकों को करना और इनका अधिक से अधिक प्रचार करना चाहिये। आर्य संस्कृति के तत्वों को समझने के लिये वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय आवश्यक है अतः उस में कभी प्रमाद न करना चाहिये। यह बड़े दुख की बात है कि आर्य कुमारों और युवकों तथा कुमारियों और युवतियों में स्वाध्याय की प्रवृति बहुत कम हो गई है। आर्य कुमार परिषद द्वारा संचालित सिद्धान्त सरोज, सिद्धान्त रत्न, सिद्धान्त भास्कर और सिद्धान्त शास्त्री इन परीक्षाओं में सम्मिलित होकर (जिनकी नियमावली डॉ. सूर्यदेवजी एम. ए. परीक्षा मंत्री आर्य कुमार परिषद अजमेर से मँगवाई जा सकती है) आर्य कुमार कुमारी और युवक युवती सब स्वाध्याय का लाभ उठा सकते हैं। और अपने धर्म और संस्कृति के तत्वों को जान सकते हैं जिन के पठान पर ही देश की सच्चा स्वतन्त्रता की रक्षा करना संभव है। यदि राजनैतिक स्वतन्त्रता पाने पर भी हमारें देसवासियों की दास मनोवृत्ति बनी रही और विदेशी भाषा और सभ्यता के मोह में वे पड़े रहे तो उस से क्या लाभ होगा ?

[क्रमशः]

कमजोर नींव का—पाकिस्तान

श्री जे. एन. साहनी

बालू की दीवार--

मियाँ जिन्ना ने दो राष्ट्रों के सिद्धान्त के आधार पर ही भारत का विभाजन कराने में सफलता प्राप्त की है। उनका कहना है कि पाकिस्तानी क्षेत्र पूर्ण रूपसे प्रभुत्व शक्ति सम्पन्न होना चाहिए क्यों कि उनमें मुसलमानों का बहुमत है। इसका मतलब यह हुआ कि यदि इन क्षेत्रोंमेंसे किसी एक में किसी प्रकार मुसलमान अल्पमत में हो जाय तो मियाँ जिन्ना उस क्षेत्र का पाकिस्तान उपनिवेश से पृथक होकर भारत में फिर से मिलने की अनुमति देंगे। दूसरे शब्दों में पाकिस्तान की सत्ता तभी तक बनी रह सकती है जब तक मुस्लिम अधिकारी मुस्लिम बहुमतको बनाए रखनेके लिए पूर्ण रूप से सावधान रहेंगे।

१९५१ की जन गणना—

पाकिस्तान के दुर्भाग्य से कहिए या भारत के सौभाग्य से समझिए मियाँ जिन्ना पाकिस्तान की सीमा विस्तार के प्रयत्नों में इस प्रकार की सभी सावधानियों का विस्मरण करते जा रहे हैं। १९४१ की जन गणना के अनुसार पाकिस्तानी क्षेत्रों की जन संख्या ६९०२६९८७ है। इस बात पर पहले भी कई बार बहस हो चुकी है कि १९४१ में कांग्रेस द्वारा जन गणना का बहिष्कार कर देने के कारण मुसलमानों को अपनी मनमानी जन संख्या बढ़ानेका खुला अवकाश मिल गया। दूसरे यह भी कहा जा सकता है कि बंगाल दुर्भिक्ष में पूर्वी बंगाल के मुसलमान एक बड़ी संख्या में मृत्यु के ग्रास बने थे, किन्तु इसके बारे में कहीं भी कुछ संकेत नहीं हुआ। परिगणना करने वाले सभी अधिकारी इस बात पर एक मत हैं कि गत जन गणना में अमुस्लिमों की जितनी जनसंख्या बताई गई है उस से उनकी असली जनसंख्या १० प्रतिशत अधिक है और मुसलमानों की असली जनसंख्या बताई गई जनसंख्यासे १० प्रतिशत कम। यदि यहबात सोलहआने ठीक है तो१९५१की जन गणना अवश्यमेव अमुस्लिमों की जनसंख्या में वृद्धि करेगी। अब भी पाकिस्तान में मुस्लिमों की जन संख्या अमुस्लिमों की जन संख्या के मुकाबिले में केवल ४९७०२३००ही है। यदि निजाम अब भी अपने हठ पर दृढ़ रहता है और भारत के बजाय पाकिस्तान में सम्मिलित होता है तो वहां अमुस्लिमों की जनसंख्या में १ करोड़ १४ लाख की और वृद्धि हो जायगी। भूपाल भी यदि निजाम के ही पदचिन्हों पर चला तो ५ से ६ लाख तक उस में और अभि वृद्धि होने की सम्भावना है। इस प्रकार १९५१ की जनगणना तक उक्त दोनों जन संख्याओं को मिलकर इस में कोई आश्चर्य नहीं कि अमुस्लिमों का बहुमत हो जाय और मुसलमान अल्पमत में ही रह जाय। यदि यह हो जाता है तो फिर पाकिस्तान का सारा आधार ही समाप्त हो जाता है।

व्यंग्य

यद्यपि मियाँ जिन्ना की दृष्टि में पंजाब पाकिस्तान की तलवार है कि उस की राजधानी के लिए चुना गया है कराची को। मुस्लिम लीग उत्तरी पाकिस्तान को जो महत्व दे रही है उस से तो प्रतीत होता है कि बंगाल केवल उसका सहायक उपनिवेश ही होगा। यथार्थ मे उत्तरी पाकिस्तान के सभी क्षेत्रों की मुस्लिम जन संख्या से पूर्वी बंगाल की मुस्लिम जन संख्या कहीं अधिक है। वहां की मुस्लिम जनसंख्या उत्तरी पाकिस्तान की हिन्दू मुस्लिम जनसंख्या के बराबर ही है। पाकिस्तान विधान सभा में शेष प्रान्तों के मुकाबले कहीं अधिक बहु मत है। चाहे कुछ भी हो पाकिस्तान को अधिक से अधिक आर्थिक सहायता पूर्वी बंगाल से ही मिलेगी। उत्तरी क्षेत्र तो पाकिस्तान का शासन करेगा और उसका भार वहन करेगा पूर्वी बंगाल, यह कैसा व्यंग्य है।

★

छत्रपति शिवाजी——

महा दैन्य के व्यथा-वर्षों में,
सिंह-शिवा उत्पन्न हुआ था:
जिसके शैशव की गति से ही,
एक तन्त्र अवसन्न हुआ था।

पारतन्त्र की निशा अनन्तर
माँ को नव आलोक मिला था;
निबिड निराशा के कुपङ्क में
मृदु हासका पंकज का हास खिलाया।

वैसा छत्रपति था न वह स्वयं वह
जनता ने ही अधिपति माना;
पर उसने निजको जनता की,
आकांक्षा का प्रतिनिधि माना।

अष्ट सचिव-जन-प्रतिनिधि परिषद ,
सुचारु शासन सञ्चालन को
निर्मित कर अध्यक्ष बना था,
केवल राज्य प्रथा पालन को।

कर सकते थे व्यक्त जहां जन
स्वतन्त्रता से अपना अभिमत
क्यों न शिवा के शासन का रे।
करें हर्ष से हम शुभ स्वागत !

——नटवरलाल, खेड़ी.

पाक-विज्ञान......

कुछ तो खाइये

प्रयोग ७
आम का हलुआ

सामग्री— मीठे आम का रस २ सेर, चीनी १ सेर, घी ऽ।। आधा सेर, दूध १ सेर, शहद एक पाव, बादाम गीरी १ छटांक, पिस्ता १ छटांक, किशमिश १ छटांक, सिंघाडे का आटा आध पाव

विधि—बादाम की पिसी हुई गिरी कतरे पिस्ते तथा सिंघाडे के आटे को घी में हल्की आंच से भून कर रखले, फिर किसी कलई किये हुए पात्र में आम का रस, चीनी और दूध को पकावे, गाढा हो जाने पर पहली भूनी हुई चीजें इसी में डाल दें और किशमिशें में भी डाल दें। अच्छी प्रकार पक जाने की सुगन्धि आने पर नीचे उतार कर शहद मिला देना चाहिए।

प्रयोग ८
पके आम की आमटी

सामग्री— पके आम १ सेर, चीनी १ छ घी, हींग, राई, जीरा नमक, गरम मसाला, मिर्च,

विधि— सर्व प्रथम आमों को छीलकर (रस न निकालकर) किसी स्वच्छ पात्र में हींग, राई जीरे का छोंक दें, तदनन्तर उस में नमक गरम मसाला और मिर्च (अच्छी बारीक पीसी डाल दीजिए। और चीनी डालकर आग पर शाक की भांति पकाइये।

प्रयोग ९
आम के पापड

सामग्री— नमकीन पापड के लिये— पके आम नमक जीरा और काली मिर्च, मीठपापड बनाने के लिए केवल चीनी

विधि—चकले के ऊपर जरासा घी चुपड दीजिए जिस से चिकनाई बनी रहे फिर मसाला मिला हुआ आम का रस चकले पर डालकर हाथ से उसेफैलाते आइए इसी प्रकाक घी लगाकर फिर रस डालते जाय। साधारण तौर पर जम जाने के बाद उनपर कपडा रखकर थपक देना चाहिए जिस से वे अच्छी प्रकार फैल जाय।

प्रयोग १०
आम के सेव

सामग्री— पके आम का रस १ सेर सिंघाडे का आटा आध पाव, हींग जीरा, हल्दी, नमक आदि इच्छानुसार घी या तेल,

विधि— आम के रस में सिंघाडे का आटा और मसाला मिलाकर गूंधकर सेवके झारे में से सेव गिरा दीजिए और उन्हे सुखाकर रख लीजिए। इच्छा होने पर घी या तेल में तलकर स्वाद से खाइये ये सेव बहुत स्वादिष्ट लगते हैं। बने हुए सूखे सेव ३ या ४ मास तक रखे जा सकते हैं खराब नहीं होंगे।—पाक-शास्त्री

★ चलता....चक्र ★

चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
इन दुई पाटन के बीच में साबित बचा न कोय॥

राष्ट्रीय ध्वज में चर्खे के स्थान पर चक्र होगा. —विधान परिषदका निश्चय

—तो चर्खे का अतिरिक्त हिस्सा मि. जिन्ना को पाकिस्तान के लिये भेंट कर देना चाहिये।

जो एक बार सार्वजनिक क्षेत्र में आकर फिर विलुप्त हो जाते हैं; मेरी दृष्टि में उनके लिये जीने की अपेक्षा मर जाना श्रेष्ठ है— कमलादेवी चट्टोपाध्याय

—अपनी राय में सर शफात ने आपकी सीख मान ली

श्री जगजीवनराम का वायुयान दुर्घटना से पूर्व बिना पेट्रोल से उडरहाथा। समाचार पत्र

—कांग्रेसी ऐसे ही उडा करते हैं!

—तो फिर संसारमें एक नया आविष्कार बिना पेट्रोल और कोयले से उडने वाले वायुयान का हुआ।

मुझे यह सुनकर महान दुख हुआ कि अन्तिरम सरकार के भू. पू. मंत्री सर शफात अहम्मद ने अपना शरीर छोड दिया —गांधीजी.

—और क्या करते नौकरी छोडी लीग छोडी,सरकार छोडी,अब देहभी छोडते ही।

जनरल आंगसान की मृत्यु पर श्री जिन्नाने दुख प्रगट करतेहुए कहाकि बर्मा की जनता हत्यागुंडशाही का समर्थन नहीं करेगी

—क्योंकि यह मुस्लिम लीग की रिजर्व नीति है। दूसरे को इसे उपयोग में नहीं लाना चाहिये।

बर्मा सरकार के उपाध्यक्ष की मृत्यु पर श्री. जयप्रकाश नारायण ने कोई वक्तव्य नहीं दिया।

—वरना किसी के सिर दोष अवश्य मढते— शायद कम्युनिष्टों का हाथ ही समझते।

कुछ लोगों का कहना है कि एक ओर १५ अगस्त को सरकार उत्सव मनाने को कह रही है और दूसरी ओर १४४ दफा लगा दी गई है। हम क्या करे?

—तो दोनों बातें एक साथ करनी चाहिये, उस दिन न तो घरसे बाहर निकलो और न घर में बैठो।

सर सी. पी. रामा स्वामी अय्यर की जान लेने का प्रयत्न एक बनावटी हमला मालूम पडता है। यह प्रयत्न अधिकारियों की प्रेरणासे किया गया जान पडता है जिस से उनको राज्य कांग्रेस को कुचलने का अवसर मिल सके।—हिन्दुस्थान से

—सर सी पी. रामस्वामी अय्यर के अधिकार में रहकर सब अधिकारी ऐयार हो गये हैं। —उदय

आर्य–जगत्

पाकिस्तान के आर्योंका प्रश्न

पाकिस्तान बन गया। इस रोने को अब रोने की कोई आवश्यकता नहीं। आवश्यकता भी हो तो बेकार। अब तो यह सोचना चाहिये कि वहांके आर्यों को क्या करना चाहिये ?

इस विषय पर आर्य नेताओं के लेख आने चाहिये जो अत्यन्त संक्षिप्त सुसंगत और परामर्श रूप में हों। जिनका ध्येय विद्वत्ता या लेखन-शक्ति का प्रदर्शन न हो कार्य्य की वह रूप रेखा जो आजही व्यवहार में लाई आ सके। रोगी रोग शय्यापर पड़ा है। छोटे से नुसखे की जरूरत है।

गंगाप्रसाद उपाध्याय
मंत्री,
सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,
देहली.

सूचना

कुछ व्यक्ति डी. ए. वी. हाईस्कूल के लिये चन्दा एकत्र करते हुए पाये गये हैं। इन्दौर में डी. ए. वी. कालेज व हाइस्कूल, दयानन्द शिक्षा एवं उद्योग ट्रस्ट इन्दौर के अन्तर्गत संचालित होने को हैं और इस दिशा में ट्रस्ट गतवर्ष से प्रयत्नशील है।

डी. ए. वी. हाईस्कूल के उपर्युक्त ट्रस्ट ने चन्दा एकत्र करने का कार्य निम्न सज्जनों की एक कमेटी को सौंपा है:–

श्री. त्रिलोकीनाथ भार्गव मन्त्री ट्रस्ट
श्री. दीनदयालजी मिश्रा कोषाध्यक्ष
श्री. कन्हैयालालजी शर्मा सदस्य
श्री रामनारायणजी शर्मा, वैद्यशास्त्री सदस्य

आशा है जनता इनके अतिरिक्त दान प्राप्त करने आनेवालों को ट्रस्ट का प्रमाण पत्र देखकरही दान देगी।

त्रिलोकीनाथ भार्गव
मंत्री दयानन्द शिक्षा एवं उद्योग ट्रस्ट,
इन्दौर.

१०० पुरस्कार

सहायता—कीजिये।

मेरी लडकी गप्पी जो सीहोर [भूपाल] में ब्याही थी गायब है। गप्पी और उसका पति अपने एक मुसलमान दोस्तके साथ १००० के लगभग रुपया लेकर आगरे आदि घूमने गये थे। यात्रा में एक दिन चोरी हो गई चोरी किसने की यह पता नहीं लग सका पर अनुमान ऐसा है कि उसी दोस्तने की थी। यात्रामें ही एक दिन सराय में से लडकी को गायब कर दिया गया। जब लडकी के पतिने दोस्त से आकर पूछा तो उसने कहा मुझे क्या मालूम इधर उधर कहीं टट्टी गई होगी पर फिर उसका पता न लगा और बाद में वह मुसलमान दोस्त भी गायब होगया और अब इधर उधर भागता फिरता है। सीहोर आकर कुछ दिन उज्जैन में रहा देखा गया और अब पता नहीं है। अभीतक लडकी का भी पता नहीं लग सका है। समस्त आर्य भाइयों से प्रार्थना है कि इस सम्बन्ध में मेरी यथा सम्भव सहायता करें। लडकी को मुझसे मिला देनेवाले व्यक्ति अथवा संस्था को मैं १००) प्रसन्नता के रूप में दूंगा। कृपया पत्र व्यवहार बन्द लिफाफे में करें।

विनीत,
प्यारेलाल,
ग्राम विशन खेडावाले
C/o मन्त्री आर्य समाज सीहोर
[भूपाल]

आर्यविद्वानोंकी सम्भावित यात्रा

दयानन्द वैदिकमिशन इन्दौर के अध्यक्ष के पास आये पत्र से ज्ञात हुआ है कि वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् श्री आचार्य द्विजेन्द्रनाथजी सिद्धान्त शिरोमणि कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, श्री. पं. रामदत्तजी शुक्ल एम. ए. एल. बी. एडवोकेट लखनऊ, प्रस्तोता (रजिस्ट्रार) गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, श्री आचार्य बृहस्पतिजी वेदशिरोमणि प्रो. डी. ए. वी. कालेज देहरादून शीघ्रही इन्दौर आनेवाले हैं।

—इन्दौर से३०मील दूर कंलोद रोडपर प्रारम्भिक शिक्षण संस्था का कार्य आरम्भ करने के लिए श्री केदारनाथजी शर्मा दयानन्द वैदिकमिशन के सहयोग से प्रयत्न कर रहे हैं। दयानन्द वैदिक मिशन की विद्यार्य सभा के सदस्यगण उक्त स्थान के निरीक्षण के लिए वहां जानेवाले हैं।

—इन्दौर आर्य समाज मल्हारगंज में ता. २७-७-४७को नगर की आर्य वीर दल शाखाओंका एक सम्मिलित सत्संग हुआ। आर्य समाज के नियमित कार्यक्रम के अनन्तर दलकी प्रार्थना हुई और श्री. सिद्धेश्वरजी नायक द्वारा सामूहिक आर्य-राष्ट्रगान कराया गया। श्री. देवकीनन्दनजी नगर बौद्धिक नायकद्वारा आर्य वीर दलके सम्बन्ध में विस्तृत प्रकाश डाला और आर्य वीर दल की शक्तिको सुदृढ एवं संगठित बनाने की अपील की।

सागर (सी. पी.)- आर्य समाजने सार्वजनिक सभा में लाहौर को भारत में सम्मिलत रखने का समर्थन करते हुए प्रस्ताव पास किया और लाहौर की पाकिस्तान में मिलाये जाने का घोर विरोध किया गया।

नगर के दीवारों में
पुलिस अधिकारी ध्यान दें

गोमा की फैल में किले साइन की जमीन पर तीन मुसलमानों के घर हैं जो कलई का काम करते हैं, उनमें से एक ने अपने कमरे में लगभग २० दिन से एक मजार बना लिया है और उसे एक धार्मिक स्थान बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। मजार बनाने का कारण बताते हुए कहा गया कि इसके पूजने से फलादि चढाने पर भूत बाधा नष्ट होती है। इस बहकावे में आकर जनता वहां फूल चढाने आने लगी है। थोडे दिन पहले जिस स्थान पर कुछ नहीं था अब वह धर्म स्थान का रूप ले रहा है। अब इस पर आपत्ति की गई तब उन मुसलमानों ने कहा कि इस पीर के लिए मुसलमानों का बच्चा बच्चा सिर कटवा देगा पर इसे नष्ट न होने देगा। मजहब के नाम पर इस दाम्भिक रूप की जितनी भर्त्सना की जाय थोडी होगी। दोनों सम्प्रदायों में इस घटना से कटुता पैदा होने की सम्भावना बहुत बढ रही है। पुलिस के उच्चाधिकारियों को इस सम्बन्ध में वस्तुस्थिति का पता लगाना चाहिये। और मजार के सम्बन्ध में सार्वजनिक प्रचार को सीमित करना चाहिये।

सफल होटल प्रवेश

२० जुलाई को इन्दौर में जिस सामाजिक क्रान्ति का सूत्र पात हुआ वह शहर के बडे हिस्सों तक ही सीमित नहीं थी। इन्दौर के मिल एरिया यशवन्त नगर (परदेशी पुरा) आदि में तो यह दिवस सबसे सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। परदेशी पुरा के अग्रवाल आदि बीसियों होटलों में कथित हरिजन भाइयों का बडी खुशी के साथ स्वागत किया गया। हलवाइयों ने भी हरिजन भाइयों के साथ भाई जैसा ही बर्ताव किया। यहां तक हुआ कि कई होटल वालों और हलवाइयों ने उन भाइयों से पैसे भी नहीं लिए और अपने बन्धुत्व का प्रदर्शन किया कई होटलों में चाय के नाम पर भाइयों को दूध दिया गया इस प्रकार जैसे भी सम्भव हुआ परदेशी पुरा क्षेत्र के होटल मालिकों, हलवाइयों ने इस सामाजिक क्रान्ति में अपना भाग पूर्ण किया। इस क्षेत्र में इस आन्दोलन की सफलता में मन्त्री श्री डा. देवजी रामचन्द्रजी शंकरलालजी यशवन्तरावजी व आर्य वीर दल शाखा यशवन्त नगर (परदेशी पुरा) के उपस्थित आर्य वीरों ने पूर्ण सहयोग दिया। इस क्षेत्र मे होटल वालों की बिक्री पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पडा जो क्रान्ति की सफलता

(शेष पृष्ठ ४ पर)

मुद्रक—श्रीधर पण्डित

चिंतामणि प्रिंटिंग प्रेस, ८९, बसंतगंज इन्दौर.

प्रकाशक—किशोरीलाल गोयल

आर्यावर्त कार्यालय ७२ महारानी रोड

साप्ताहिक
आर्यावर्त



पाकिस्तान का इञ्जेक्शन

"दो करोड़ विधवाओं का आहोजार, दस करोड़ अछूतों का हाहाकार, करोड़ों अबलाओं और अनाथों की चीखों पुकार, जिस जाति को कुम्भकर्णी से जगा न सके आज उसे जगाने के लिए प्रभु की प्रेरणा से जिन्ना ने पाकिस्तान का शंख बजाया है। आर्य समाज के बड़े-बड़े उत्सव, सनातन धर्म के बड़े २ सम्मेलन, बड़े २ लेक्चरारों उपदेशकों, व्याख्याताओं के ज़ोरदार भाषण तथा कथित धर्म गुरुओं द्वारा किए गए कितने ही शत कोटि महायज्ञ जिस जाति के मृतक शरीर में नव-जीवन का संचार न कर सके उस जाति को जीवन-दान देने के लिए जिन्ना ने पाकिस्तान का इञ्जेक्शन लगाया है।

परन्तु क्या यह जाति जागेगी ? राम का साहस, कृष्ण की नीति, शंकर का पांडित्य, बुद्ध का ओज, महावीर की तपस्या, प्रताप का स्वदेशाभिमान, छत्रपति शिवा की वीरता, गुरु गोविन्दसिंह का तेज, बन्दा बैरागी का बलिदान, स्वामी दयानन्द सरस्वती का ब्रह्मचर्य जिस जाति के मृतक शरीर में नव-जीवन न ला सके क्या लाहौर में शाह आलमी दरवाजों के भीतर उठती हुई आग की लपटें उस जाति के खून में कुछ हरारत पैदा कर सकेंगी ?

निराश होना पड़ता है इसलिए नहीं कि हम लाहौर और लायलपुर को खो रहे हैं, इसलिये नहीं कि हमने सिलहट और सीमाप्रान्त खो दिया, इसलिए नहीं कि हमने काश्मीर और अमरनाथ को अरक्षित बना खो दिया जिस सेना का चरित्र (Moral) नष्ट हो जाय। वह संख्या में कितनी भी अधिक क्यों न हो, उसके पास कितने ही साधन क्यों न हों उस सेना के विजयी होने की तो क्या जीने तक की आशा नहीं।

आज हम अन्तिम परीक्षा के अवसर पर अपने आप तक को खो चुके हैं। हमारे धर्म वीर अपने राजसी ठाठ को लात मारकर अपने घर से हजारों मील दूर सीमांत और बिलोचिस्तान से चल कर हरिद्वार, दिल्ली, देहरादून में हमारे पास पहुंचे। हमने उनके साथ क्या व्यवहार किया ? स्वयं पराठे और पूड़ियां खाते हुए हम उन्हें सूखा टुकड़ा तक न खिला सके, स्वयं ऊंची अटारियों में विहार करते हुए भी उनके लिए कड़कती धूपों और मूसलाधार वर्षा में तिनकों की एक झोंपड़ी तक न बना सके विपरीत इसके हमने उन अतिथियों को परेशान किया, उनका जितना भी खून निचुड़ सकता था हमने निचोड़ा, "जब रोम जल रहा था नीरो वंशी बजा रहा था" के कारनामों से भरे ये दिन निकल जायंगे। शरणार्थियों का निचोड़ा हुआ खून इन हिन्दू शार्दूलों के घर में पड़ा पड़ा माटी में मिल जायगा, परन्तु आने वाली सन्तानें इन दिनों को याद करके हमारे नाम पर हमेशा के लिए लानत भेजती रहेंगी"। क्या हम अब भी अपनी स्वार्थ वृत्तियों को त्याग इस काल देवता से शिक्षा न लेंगे"।

—'पाकिस्तान का विप्लव' भूमिका से.

दिनांक २७जुलाई ४७
मूल्य ५) वार्षिक

सम्पादकः— स्नातक उमेशचन्द्र

अंक सं. १९
एक अंक =)

—००—दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र—००—

आर्य जगत——

' तेरे बताये पथ पर संसार आ रहा है '

जिस ऋषि दयानंद ने आज से ७५ वर्ष पूर्व अस्पृश्यता निवारण, विधवाविवाह, जाति पांति के भेद को जड़ मूल से नष्ट कर देने का आंदोलन चलाया था उस ऋषिवर की आत्मा को अपना काम पूरा न होता देखकर बहुत दुख हुआ होगा परन्तु ऋषि के सिद्धांत अमर हैं, और एक न एक दिन सब उन सिद्धान्तों को स्वीकार कर समाज को सुखी बनायेंगे। एक वर्ष से चल रहे राजनैतिक संघर्ष ने आज हिन्दू समाज में नव जीवन फूंक दिया है—२० जुलाई का दिवस इन्दौर के सामाजिक अभ्युत्थान में अमर दिवस रहेगा—हिन्दूहोटलों में अस्पृश्य कहे जाने वाले भाइयों का प्रवेश एक ऐसी घटना है जो सुदूर भारत में हिन्दू समाज के लिये आदर्श उदाहरण बन गई है। हरिजनों द्वारा सूचना मिलने पर होटल मालिकों ने अपनी एक सभा कर उनके इस अधिकार को स्वीकार किया और अपने त्यक्त भाइयों को गले लगाने और खिलाने की स्वीकृति दी, २० ता: को ५, ५ की टोली में हरिजन भाइयों ने होटलों में प्रवेश किया। होटल मालिकों ने उनका किसी प्रकार विरोध नहीं किया और आनन्दपूर्वक चाय, या, जो कुछ भी वे चाहते थे उन्हें दिया। दृश्य देखने लायक था हजारों की भीड़ के साथ हरिजन भाइयों ने अपने मौलिक अधिकार को प्राप्त किया।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ताओं ने इस कार्यक्रम में सबसे अधिक भाग लिया जो उनका नैतिक कर्तव्य था। श्रीलालारामजी हिन्दूधर्म रक्षिणी सभा इन्दौर, आर्यसमाज मल्हारगंज के उपप्रधान श्रीकिशोरीलालजी वकील, आर्यावर्त के सम्पादक श्रीसा. उमेशचन्द्रजी, श्रीपूनमचन्दजी, श्रीरमेशचंद जी मालवा मिल वाले तथा अन्य आर्य भाइयों ने इसमें भाग लिया। आर्य समाज के प्रधान श्रीरामविलासजी के माहेश्वरी होटल की सब शाखायें हरिजनों के स्वागत के लिए खुली रहीं इसका प्रभाव अन्य होटल वालों पर भी पड़ा और उन्होंने भी उनका अनुकरण किया।

इन्दौर में इस आन्दोलन से एक नवीन जागृति को जन्म मिला है। इन्दौर की यह सामाजिक चेतना देख कर कवि के ये शब्द बरबस मुंह से निकल पड़ते हैं। "तेरे बताये पथ पर संसार आ रहा है"। ★

—महेश्वर गुरुकुल के सम्बन्ध में दयानन्द वैदिक मिशन के कार्यकर्ताओं से परामर्श करने के लिए गुरुकुल के आचार्य श्री लक्ष्मीनारायणजी, श्री स्वामी नारायणनन्दजी व गुरुकुल के कोषाध्यक्ष श्री मुरारजी इन्दौर पधारे और कई आवश्यक विषयों पर विचार किया। गुरुकुल' की कार्यकारिणी की बैठक २७-७-४७ को गुरुकुल भवन में हुई। इसी अवसर पर त्रैमासिक परिक्षाएं भी आरम्भ हो गई हैं। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है।

—वृन्दावन गुरुकुल विश्वविद्यालय में उपदेशक सम्मेलन का उद्घाटन २० ता को श्री अणे साहब द्वारा किया गया। आपने आर्यधर्मकी महत्ता और उसके प्रचार पर अपने विचार प्रकट किए। गुरुकुल की विद्यासभा ने आयुर्वेदिक प्रयोग शाला को लिमिटेड बना देने का निश्चय किया है। आर्य जनता से इस कम्पनी के शेयर खरीदने को एक अपील शीघ्र ही निकाली जावगी। इस कम्पनी सम्बन्धी प्रारम्भिक आयोजन करने के सम्पूर्ण अधिकार कुलपति श्री द्विजेन्द्रनाथजी को दे दिये गये हैं। आशा है आर्य जनता इस योजना को स्वीकार करेगी।

प्राचीन छात्र संघ

कुछ समय पूर्व आर्य मित्र द्वारा गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के प्राचीन छात्रों को संघ की स्थापना की सूचना देते हुए उनसे अपने पते और अपना विवरण वे कब और कितने समय तक गुरुकुल में रहे इत्यादि बातों का विवरण भेजने की प्रार्थना की गई थी, किन्तु अभी तक बहुत से भाइयोंने वैसा नहीं किया है। आगामी गुरुकुलोत्सव के समय प्राचीन छात्र संघ का अधिवेशन करने का विचार है। अधिवेशन में संघ के नियम, भावी कार्यक्रम, स्थायी कार्य समिति आदि का निश्चय किया जायगा। अधिक से अधिक बन्धुओं को संघ का सदस्य बनकर संघ के कार्य को प्रगतिशील बनाना चाहिये। अपने पते तथा अन्य विवरण की सूचना शीघ्र ही निम्न पते पर भेजने और भिजवाने की कृपा करें।

विनीत—

विष्णुदेव अधिकारी,

४—९० हिन्दू विश्व विद्यालय

बनारस

—महू छावनी आर्य समाज में श्री स्वामी विशुद्धानन्दजी महाराज की कथा १४ ता. से १ सप्ताह तक होती रही जनता ने बड़ी रुचि प्रकटकी और कथा से लाभ उठाया। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी भी एक दिनके लिए महू पधारे और उनका व्याख्यान हुआ। श्री स्वामी नारायणानन्दजी आज कल महू आगये हैं उनके आने से साम्प्रदायिक हलचलें आरम्भ हो गई हैं। ब्यावर केन्द्र शिक्षा प्राप्त श्री मास्टर गम्भीर सिंहजी ने आर्य वीर दल की शाखा का कार्य आरम्भ कर दिया है। महू की जनता को दल में सम्मिलित हो लाभ उठाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यावर्त

रजि १२७२१४९०४७] दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र [दयानन्द जन्माब्द १२३

वर्ष २] इन्दौर, रविवार दिनांक २७ जुलाई १९४७, श्रावण सुदी ९ वि. सं २००४ [संख्या १९

राष्ट्र-भाषा हिन्दी-दिवस

स्वाधीनता के लिये स्वर्णिम अभ्युदय के साथ आज राष्ट्र कर्णधारों के सामने राष्ट्र भाषा का प्रश्न एक समस्या बना हुआ है। भाषा का संस्कृति और सभ्यता के साथ जो अटूट सम्बन्ध होता है उसको दृष्टि में रखते हुए हमने सदैव हिन्दी को ही स्वतन्त्र भारत की राष्ट्र भाषा बनाने का समर्थन किया है। हिन्दुस्तानी की जिस कृत्रिम भाषा का सृजन होने जा रहा था यद्यपि उसके आधार भूत सिद्धान्तों से हिन्दी के समर्थक सहमत नहीं हो सके थे परन्तु एक राजनैतिक आवश्यकता के रूप में हिन्दुस्तानी को पनपने का अवसर दिया जा चुका था। आज परिवर्तित स्थिति में भारत की राष्ट्र भाषा भारतीय भाषा हिन्दी हो सकती है। हमें अत्यन्त दुःख हुआ जब गांधीजी ने रेडियो की भाषा और विधान परिषद द्वारा निर्मित विधान की भाषा के सम्बन्ध में भी आजाद को इस भाषा का मापक माना अर्थात् जो भाषा मौलाना नहीं समझ सकते वह राष्ट्र भाषा कैसे हो सकती है। यदि यह कहना सत्य है तो इस माप का कोई भी समर्थन नहीं कर सकता और हम तो इस नीति का घोर विरोध करते हैं। इसी प्रकार विधान परिषद के कांग्रेस दल ने जब भाषा के प्रश्न पर विचार किया तब पं. नेहरू और आचार्य कृपलानी जैसे अन्य प्रतिष्ठित नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने से अपनी असहमति प्रकट की परन्तु बाद में संघ की भाषा का निर्णय करने के लिए दल की ओर से एक कमेटी बनाकर इस प्रश्न को आगे बढ़ा दिया गया। उस कमेटी के सदस्यों की नामावली देख कर हमें सन्तोष है कि वह कमेटी हिन्दी के पक्ष में ही निर्णय करेगी। इन दो उदाहरणों से इतना तो स्पष्ट है कि अभी राष्ट्रीय नतृत्व पूर्णतया हिन्दी को नहीं अपना सका है परन्तु फिर भी इस दिशा में एक क्रान्ति की लहर अवश्य फैल चुकी है और हमें आशा है कि जब विधान परिषद में संघ की भाषा का प्रश्न आयगा तब हिन्दी को ही राष्ट्र भाषा और नागरी को ही राष्ट्र-लिपि के रूप में स्वीकार कर लिया जायगा। वास्तव में राष्ट्र भाषा का प्रश्न किसी सम्प्रदायिकता से सम्बन्धित नहीं हो सकता जब बंगाल का मुसलमान बंगाली, पंजाब का मुसलमान पंजाबी, चीन का मुसलमान चीनी और टर्की का मुसलमान टर्की भाषा में अपना सब काम चला सकता है तब भारतवर्ष में रहने वाला मुसलमान हिन्दी को नहीं अपना सकता तो हम इस उसका राष्ट्र के साथ वास्तविक विश्वासघात ही कहेंगे। राष्ट्र के सभी सम्प्रदाय और प्रान्त अपनी सांस्कृतिक सामाजिक परम्पराओं को कायम रखते हुए भी जब एक सूत्र में आबद्ध होने जा रहे हैं तब उन्हें पारस्परिक व्यवहार और विदेशों में अपने राष्ट्रीय सम्मान के लिए एक भाषा स्वीकार करनी ही चाहिये। और वह भाषा हिन्दी के अतिरिक्त दूसरी नहीं सकती।

वर्तमान परिवर्तन के समय हिन्दी को जो सम्मान मिला है वह एक दिन की साधना का परिणाम नहीं होगा उसके लिए हिन्दी माता के अनेकों सेवकोंने अपना समर्पण किया है। सूर तुलसी, ऋषि दयानन्द, शिवप्रसाद, लक्ष्मणसिंह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापसिंह, बालकृष्ण, प्रेमचन्द प्रसाद, पन्त, बच्चन, मैथलीशरण, और न जाने कितने अज्ञात उपासकों ने अपनी उपासना से आज यह अवसर उपस्थित कराया है तब क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं कि हम इस कठिन समय में हिन्दी को अपने जीवन के प्रत्येक क्षण क्षण कण कण में व्यापकर दें। जो हम दूसरों से कराना चाहते हैं उसे स्वय करने का यत्न।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से १ अगस्त को सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी दिवस मनानेका निश्चय किया गया है यदि हम हृदय से चाहते हैं तो हमें १ अगस्त को राष्ट्र भाषा दिवस मना कर अपने हिन्दी प्रेम को प्रकट करना चाहिए और अपने व्यवहारिक जीवन में हिन्दी के प्रयोग की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए तभ हमारा हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का स्वप्न पूरा हो सकेगा।

★

—विचार-कण—

★

लाहौर हमारा क्यों

लाहोर शहर को पूर्वी पंजाब में बनाये रखने के लिये दिये गये एक स्मरण पत्र में अपने दावे का समर्थन करते हुए बहुत से मनोरंजक तथ्य प्रकट किये गये हैं। इस प्रार्थना-पत्र में बताया गया है कि लाहौर की ९० साहूकारी करनेवाली कोठियों में से ८७, अस्सी ८० बीमा कम्पनियों में से ७८, पूंजी लगानेवाले समस्त ट्रस्ट जिनकी संख्या १७ है, दोनों शेयरबाजार। पांच व्यापारिक चैम्बरों में से चार, ८० प्रतिशत रजिस्टर्ड शुदा कारखाने ९० प्रतिशत बड़े पैमाने पर काम करने वाले उद्योग, और २७० शिक्षण संस्थाएं मुस्लिमेतरों की हैं। इन आंकड़ों के रहते हमें अपने पक्ष की पुष्टि में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं रह जाती क्या सीमा कमीशन के न्याय देवता इस सचाई को स्वीकार न करेंगे?

युक्त प्रान्त में—

१ उचित और आनुपातिक प्रतिनिधित्व।

२ "जाति" नहीं लिखी जायगी।

३ थानों और अदालतों में हिन्दी।

युक्त प्रान्तीय सरकार समय के साथ प्रगति करनेवाली जनप्रिय सरकारों में सब से अगणी कही जा सकती है। पिछले एक मास के अल्पकाल में ही सरकारने प्रगतिशील निर्णय दिये हैं।

१ सरकारी नौकरियों में किसी विशेष सम्प्रदाय या जाति का ध्यान नहीं रक्खा जायगा जायगा, जिन स्थानों का प्रतियोगिता द्वारा निर्णय होता है वहां योग्यताही सर्विस के लिये प्रमाणित होगी विशेष रिजर्व स्थान नहीं, शेष स्थानों के लिये प्रान्त की-जन संख्या के अनुपात से सर्विसें दी जाया करेंगी। इस निर्णय का असर मुसलमानों के विशेषाधिकार पर पड़ेगा जो उन्हें अंग्रेजों ने गांधीजी के शब्दों में घूंस के रूप में दिया था।

२ दूसरा प्रगतिशील निर्णय युक्त प्रान्तीय सरकार द्वारा इस बात की घोषणा के रूप में किया गया है कि भविष्य में सम्पूर्ण सरकारी कागजात में से "जाति" का खाना हटा दिया जायगा। जाति के झंझट से बहुत हानियाँ पहुँची हैं और इस विचार धारा से समाज में घुन लग गया है। सरकार के इस निर्णय की प्रशंसा करते हुए भी हम हरिजनों के सम्बन्ध में युक्त प्रान्तीय सरकार का निर्णय है उससे सहमत नहीं हो सकते। सरकार ने हरिजनों के लिये जाति के खाने को जारी रक्खा गया है। हम आशा करते हैं वहां की प्रगतिशील सरकार इस दिशा में भी प्रगतिशील कदम उठाकर इस विभेद के कलंक को दूर कर देगी।

३ इसी प्रकार एक और निर्णय के द्वारा वहां की सरकारने प्रान्त भर में पुलिस और अदालतों में सारी कार्यवाही हिन्दी में किए जाने की आज्ञा प्रकाशित की है अदालतों में हिन्दी को कानूनन अधिकार तो बहुत पूर्व से प्राप्त है पर पर सरकार ने इस ओर रुचि लेकर इसको क्रियान्वित करने में प्रोत्साहन देना चाहा है, पुलिस की कार्यवाही उर्दू में होने से अबतक जनता को बड़ी कठिनाई होती रही है अब उस दिशा में भी सुधार कर दिया गया है जनता अपनी रिपोर्ट हिन्दी में लिखायगी और रिपोर्ट की एक कापी प्राप्त कर सकेगी। बुलन्द शहर के श्री·········ने अपना निर्णय हिन्दीमें देकर युक्त प्रान्तीय सरकार के आदेश का और आनेवाले भविष्य का पालन आरम्भ कर दिया है इस निर्णय के लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। युक्त प्रान्त की इस प्रकार की प्रगतिशील नीति को यदि अन्य लोक प्रिय सरकार भी अपनालें तो बहुत शीघ्र ही नौकरशाही के स्थानपर जनशासन का स्वर्णिम अभ्युदय हो जायगा।

करुणाजनक एवं लज्जास्पद

बर्मा जो स्वातंत्र्य आन्दोलन के पथ पर भारत से भी तीव्र गति से चलने में प्रयत्नशील था आज वियोगी बन गया है। जनरल आंग सांग कार्यकारिणी के अन्य ६ मंत्रियोंको गोली से मार दिये गये। इस क्रूर कर्म की जितनी भर्त्सना और निन्दा की जाय थोड़ी होगी। राजनैतिक पार्टी बाजी के कारण इस प्रकार के काण्डों का होना यद्यपि योरप में व्यापक रूप से प्रचलित हैं पर एशिया के लिए इस नीति को अपनाना एशिया का अपमान करना है। हम इसे स्वातन्त्र्य आन्दोलन को रोकने का एक षडयन्त्र कहे बिना नहीं रह सकते और इस प्रकार इस काण्ड की जिम्मेवारी से अंग्रेज बरी नहीं किए जा सकते। हम आंग सांग के प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करते हैं। सतप्त परिवारों और बर्मा वासियोंके प्रति सहानुभूति प्रगट करते हैं।

सामाजिक अभिशाप—

पाकिस्तान की पृष्ठ भूमि

आर्यावर्तमनार्याणामावर्तं बहवो जनाः।
कर्तुमिच्छन्ति दैवेश न जाने किं भविष्यति॥

श्री श्यामजी पाराशर एम. ए.

" पुण्य सलिला हरित वसना हास्य श्यामला महामाया वसुन्धरा भगवती की जय-जयकारों से स्वर्ग लोक के राज्य प्रासाद का सारा कम्पाउंड गूंज उठा। देवगण फिर एक बार भक्तिभक्ति से विभोर हो गद् गद् कण्ठ बोले-जगदम्बा भारत माता की जय। बाहर तुमुल करतल ध्वनि सुन शेषशायी पद्मासनस्थ भगवान अपने अङ्गरक्षकों से बोले-इस प्रकार का जय जयकार तो स्वर्ग लोक में पहली ही बार हुआ है। देखो तो थोड़ीही देरमें भक्त रक्षक फिर भी चरणों में उपस्थित हुए-भगवती भारत मातासाक्षात् स्वर्ग लोक पधारी हैं"

" उन्हें आदर सहित लिवालाओ"

थोड़ी देर में राज्य प्रासाद का मुखद्वार खुला। महामाया ने भीतर प्रवेश किया। श्री पति स्वयं स्नेहवश कुछ दूरतक चल कर आए दूर से ही पुत्री को देखकर भगवान का हृदय दुखित होउठा—बोले

" पुत्री! यह तेरी दुर्दशा किसने की- तेरी दोनों भुजायें किसने काट डालीं"

" मेरे ही पुत्रों ने, क्या आपको पता नहीं अब तो पाकिस्तान बन गया है"

" पाकिस्तान क्या, पुत्री!"

" सर्व कुछ जानने वाले विभु यह भी नहीं जानते, पाकिस्तान क्या है"

" क्या कोई नई धरती बस गई"

" नहीं"

" क्या कोई नई सृष्टि रची गई"

" नहीं"

" कोई नये ही पुरुष पैदा हो गए"

" यह भी नहीं"

" तो फिर यह पाकिस्तान[illegible] [illegible] मेरी समझ में नहीं आता तो [illegible] [illegible] पुत्री! मैंने [illegible] [illegible] हुआ है।

मुझे तो यह शब्द सुनते हुए आज पूरे सत्तरह वर्ष हो गये। पहले यह शब्द एक शब्द ही था। अक्षर के समान प्रभाव शाली होते हुए भी इसका कोई अस्तित्व न था। ३१ के सन में इसका गर्भा धान हुआ। पूरे १० वर्ष तक यह अपने पिता के पेट में रहा। यह बे मां का बच्चा पिता ही के द्वारा सन ४० में लाहौर की नगरी में मुख-द्वार से उत्पन्न हुआ। पैदा होते ही यह चलने फिरने भी लग गया। अभी वह पूरे ७ का भी नहीं हुआ परन्तु धरती पर इसने वह ऊधम मचा रक्खा है कि कार्त वीर्य, सहस्रार्जुन, महाबली दशानन, और दुशासन के इतिहास में भी जिसकी कोई समता नहीं।

" तो यह पाकिस्तान क्या कोई राक्षस है?"

" नहीं"

" कोई निशाचर है"

" नहीं?"

" कोई दैत्य है अथवा दानव है"

" सो भी नहीं, अदृश्य लोक का अधिपति, अणु परमाणु में व्याप्त यह छोटा सा बालक भारत के १० करोड़ नर नारियों का हृदय सम्राट बना हुआ उन्हे ठग रहा है। मेरे ही जाये, मेरे ही गोदमें पले, मेरे ही पुत्र आज इस बालक के मोह में पड़े हुए विवेक से भ्रष्ट होकर मेरा ही सर्व नाश करने पर उतारू हो गये।

'परन्तु यह पाकिस्तान तो अब भी मेरी समझ में नहीं आया। बोलने में शब्द कितना सरल है। हां प्रभो! बोलने में सरल है, सुनने में कटु है, समझने में कठिन है, और देखने में बेहद कठोर है। [illegible] स्वर्गलोक में [illegible] की [illegible] पर [illegible] हैं, मृत्युलोक में रहते हुए पाकिस्तान के [illegible] मार्ग पर [illegible] पड़े तो पता चले।

'तुम्हारे संताप से मैं भी संतप्त हूं, पुत्री कौन सा पिता अपनी पुत्री का अंग भंग देखकर दुःखी न होगा। इस सृष्टि रूपी रचना का मैं रचयिता हूं, तुझे मैंने दुर्गा बनाया गंगा यमुना की मालायें तेरे गले में डालीं। हिमालय रूपी तेरे सिर पे मुकुट रक्खा। पंजाब और बंगाल तेरे दो हाथ बनाए। कटाक्ष और पुष्कल नेत्र युगल सजाए। संयुक्त प्रान्त का विशाल वक्ष तुम्हें प्रदान किया। हृदय के स्थानपर मैंने विहार को रक्खा। नाभी के स्थान पर मैंने नासिक को शोभायुक्त किया। रामेश्वरम् और त्रावणकोर तेरे दो चरण बनाए। पाकिस्तान को तो तेरी रचना में मैंने कहीं भी कोई स्थान नहीं दिया।

मेरे दोनों हाथ पंजाब और बंगाल, मेरे ही पथभ्रष्ट पुत्रों ने उन्हें पाकिस्तान कहना शुरू कर दिया।

'अब समझा! निर्दयी कपूतों द्वारा वृद्धा माता के कटे हुए हाथों का नाम है पाकिस्तान। परन्तु तेरे तो ४० करोड़ पुत्र हैं। क्या वे सबके सब कपूत बन गये।

'जो सपूत हैं उनमें एकता नहीं, जिनमें एकता है वे कपूत बन गए। दुर्दैव टल कैसे सकता है प्रभो! जो दुखभाग्य में भोगना लिखा है वह तो सब प्रकार से भोगना ही है। मैंने अपने सपूतों को बहुत समझाया। मैंने कहा कुलीनताके मिथ्याभिमान का परित्याग कर दो। परमात्मा की सृष्टि में सभी एक समान हैं। यदि तुम दूसरों की अपेक्षा अपने को श्रेष्ठ समझते हो तो आगे बढ़ो। कुछ अपनी श्रेष्ठता का दान करो, पतितों को उठाओ, उठे हुओं को आगे बढ़ाओ। जात-पांत के गोरख धन्धे से निकल मानवता के सुन्दर उपवन में विचरण करो। तुम्हें अपने द्विजत्व का अभिमान है किन्तु नौ-नौसौ वर्ष से गुलाम हो। क्या द्विज एक क्षण के लिए भी किसी का गुलाम रह सकता है। गुलाम ही को शूद्र कहा गया है। जब-तक तुम गुलाम हो तब-तक सभी शूद्र हो। तुम सब एक वर्ण हो। जात-पांत के बन्धन तोड़ दो, छूत-छात का मायाजाल तोड़ दो। किन्तु स्वार्थी बन्दों ने अभिमान को त्यागा नहीं, अपने गरीब

भाइयों पर उन्होंने अत्याचार किये, इन्हीं पापों का फल रावलपिण्डी, अटक, मुलतान...................... .....

क्या इतने पर भी इन सपूतों को होश नहीं आई"।

"नहीं इनको चाल आज भी वही है। अपने गरीब भाइयों पर आज भी इन धर्माभिमानियों के अत्याचार यथापूर्व हैं। रामदास, रामदास रहता हुआ मन्दिर में प्रवेश नहीं पा सकता कुएँ पर नहीं चढ़ सकता, तालाब म पानी नहीं भर सकता होटल में आने की तो बात ही क्या ? अपने बाल बच्चों को लिखा पढ़ा नहीं सकता, वही रामदास गुलाम मुहम्मद बन कर हाई कोर्ट का जज बन सकता है। वर्तमान समय का सबसे बड़ा स्मृति कार (विधान निर्माता) बन सकता है"।

" परन्तु सनातन धर्म के तो सभी धर्मशास्त्रों ने मनुष्य मात्र में एक ही ज्योति का व्याप्त होना बताया है"। जो सबको मुझ में देखता है या मुझे सबमें देखता है। देखने वाला वास्तव में वही है—'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिन.' गीता के इस सन्देश का नित्य पाठ करने वाले क्या इस धर्मतत्व को नहीं समझते !"

समझते हैं पर विवेक भ्रष्ट हैं, जो धर्माचार्य हैं, उन्हें मेरी चिन्ता नहीं, जिन्हें मेरी चिन्ता है ससार की दृष्टि में वे धर्माचार्य नहीं। यदि यह धर्माचार्य अपना कर्त्तव्य समझनेवाले होते तो,मेवों, जौलों लालखानों'मलखानों के द्वारा हो रह थे उत्पात काहे को होते। प्रभो ! जितने भी मेरे देश में बड़े बड़े उपद्रवी हैं थोड़े ही दिन पहले सभी हिन्दू थे। धर्माचार्यों ने इन की कुछ भी परवाह नहीं की। आज वही लोग गिनगिनके बदले ले रहे हैं। देश का बेड़ा गर्क करना होतो यही धर्माचार्य बड़े बड़े पोथे बगाल में दबाये आधमकते हैं परन्तु देश रक्षा के समय, दगे और फिसाद के समय ये लोग ढूढने पर भी कहीं दिखाई नहीं देते "।

" वास्तव में इन तेरे धर्माचार्यों ने तेरे देश को अधोगति में धकेला है। तेरा बुढ़ापा भी इन्होंने बर्बाद किया है।"

" हां प्रभो ! यह लोग मेरे पुत्रों को विधर्मी बनने पर विवश न करते तो आज मेरी दोनों भुजाएं पजाब और बगाल मेरे शरीर से पृथक् न हो जाती, परन्तु यह लोग अपने कुकर्मों से अब भी बाज नहीं आते। भगवन् ! मर्त्यलोक में एक बड़े महात्मा हैं, वे इसी बात पर सत्याग्रह कर रहे हैं कि हरिजनों को मदिर प्रवेश का अधिकार न हो "।

" हा मेरे तक भी समाचार पहुंचा था कि मर्त्यलोक में एक अजीबो गरीब महात्मा पैदा हुए हैं। जिन दिनों १० रुपये सेर भी शुद्ध घी नहीं मिलता वह महात्मा हजारों टन शुद्ध घी धर्म के नाम पर स्वाहा कर देते हैं। विधवा-विवाह तथा हरिजनोद्धार के वे प्रबल विरोधी हैं।"

" हां ! मेरा दुर्भाग्य है प्रभो कि जनता ऐसे लोगों को अपना नेता मान बैठी है। आप ही बताइये यदि बचे खुचे हरिजन भी विधर्मी बन जावें तो सारा देश ही बरबाद हो जाय कि न। सब कुछ देखते हुए भी न जाने इनकी आंखें क्यूं नहीं खुलतीं। धनबल, बुद्धिबल सम्पत्तिबल में बगाल तथा पजाब के हिन्दुओं की कोई समता नहीं कर सकता, परन्तु केवल संख्या बल पर मेरे कसूत पाकिस्तान बना बैठे। धनवानों का धन, विद्वानों की विद्वत्ता, सम्पत्तिशालियों की सम्पत्ति सब धरी ही रह गई और पूरा गेरा नत्थू खैरा पजाब, बगाल के राजा बन बैठे। मेरे देश में धन बल बढ़ाना कुछ भी कठिन नहीं। हिन्दू समाज स्वय इतना खोखला और सारहीन हो चुका है कि विधर्मियों की सख्या अपने आप बढ़ती जा रही है। कोई समय था कि मेरे देश में शत प्रतिशत हिन्दू थे। आज एक भी ऐसा नगर व ग्राम नहीं जहां एक मस्जिद न बन गई हो। ईरान अफगानिस्तान कभी शत प्रतिशत हिन्दू थे। व कभी के चलते बन। पचास वर्ष पूर्व पजाब में हिन्दू ५६ प्रतिशत थे आज कुल ४५ प्रतिशत ही रह गये।

[क्रमशः]

किसान आन्दोलन की आड में

श्री हरिप्रसाद शर्मा विशारद,
(मन्त्री स्टेट कांग्रेस मुकामी कमेटी, नागदा.)

नागदा के कम्यूनिस्टों को जबसे स्टेट कांग्रेस ने निकाल दिया तबसे ये लोग अपने सामान्य विवेक को भी ताक में रखकर उत्तरोत्तर पतन के मार्ग में अग्रसर हो रहे हैं। जिस प्रकार सम्प्रदायवादी लोग अपने अनुयायियों को धर्मान्ध बनाकर धर्म की आड में अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं ठीक उसी प्रकार ये भाई भी किसान आन्दोलन की आड में जनता की आंख में धूल झोंक कर महान अनर्थ के बीज बो रहे हैं।

किसानों के ये नकली हितचिन्तक उनके भोलेपन और भावुकता का अनुचित लाभ उठाकर जनता में महान अनर्थ के बीज बोरहे हैं। जिसका परिणाम होगा घोर अराजकता और जनता के सामान्य जीवन पर घोर संकट।

ऊपर से दिखाने को तो ये लोग जमींदारों जागीरदारों के दुश्मन हैं किन्तु आन्तरिक रहस्य इस का दूसरा ही है। जमींदार जागीरदार का नाम सिर्फ ये किसानोंमें अपने प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने के लिये ही लिया करते हैं। असल में कांग्रेस की जडें उखाडना ही इनका चरम लक्ष्य है।

प्रचारके अंगः—

ग्रामों में जिस पद्धति से ये लोग प्रचार करते हैं उसके मुख्य अंग ये हैं। सुभाष गद्दार जवाहर लाल नेहरू गद्दार गांधी मक्कार किसानों की एक मात्र संस्था किसान सभा है, कांग्रेस तो पूंजिपतियों की संस्था ? कांग्रेस से किसानों का भला नहीं हो सकता।

पर्दे के पीछे

इस कार्य-प्रणाली के पर्दे के पीछे देखिये, अब की जमींदारियां साहूकारा मिल प्रतिदिन बढ़ाके किसानों का शोषण, ब्याजखोरी यह सब चल रहा है। इन कम्युनिस्ट जमींदार, साहूकारों के भंडा चूहा आदि गांवों में जाकर देखिये कितने ही किसान बरबाद कर दिये गये, बेदखल कर दिये गये, गाव से निकाल दिये गये पिटवाए गए, किसान स्त्रियों का अपमान किया गया, बाहर के लोगों को लाकर बसाया गया छीने हुवे खाते दूसरों को दिये गये और जब इनसे पूछा गया कि तुम्हारे घर के गांवो में इतना अन्धेर क्यों है तो वे वही युक्तियां देते हैं जो कि दूसरे जागीरदार व जमींदार देकर किसानों को दोषी ठहराया करते हैं।

दूसरे गांवों में

अपने प्रतिस्पर्धी जमींदारों के गांवों में ये लोग किसानों को अग्निकांड करो, हत्याकांड करो, मारो पीटो आदि गुंडागिरी की शिक्षा देते हैं उन्हें इस ढंग से मारने कूटने की युक्तियां बताते हैं कि वे कानून से पकड में भी न आ सकें।

किसानों को दस्यु बनाना उन्हें गुंडे बनाना यही इनकी किसान सेवा है। यही है इनका किसान आन्दोलन। इनकी धारणा है कि किसानों से रक्त पात तथा गैर कानूनी काम करवाये जाये पुलिस अवश्य हस्तक्षेप करेगी फिर किसानों को सरकार सजाए देगी तो हमें सरकार के खिलाफ जनता को भडकाने का अच्छा अवसर मिलेगा। कांग्रेसी लोग किसानों की हिंसा और गुन्डागिरी का विरोध तो अवश्य करेंगे ही तब हम कहेंगे कि ये हैं कांग्रेसी गद्दार जो किसानों का विरोध करते हैं, किसानों को दोषी ठहराते हैं किसान कांग्रेसियों से भी अवश्य बिगड़ेंगे और हम उन्हें किसानों के हाथों से ही पिटवायेंगे।

बस यही है इनकी योजना। कुछ समय पूर्व नागदा के आस-पास दो तीन गांवों में इनका असर हो गया था। अबतो किसान इन चालाकियों को बहुत कुछ समझने लगे हैं।

बनबना, छोटी और बडी रोहल में इनका अधिक प्रभाव था। छोटी रोहल के किसान तो अब इनसे विरक्त होगये हैं। बनबना के किसान आपसी झगडों से बहुत परेशान हैं। मुकदमों में फंसे हुवे हैं। इन कम्यूनिस्टों के कहनेसे मोती राम व्यक्ति को बरबाद कर दिया गया, उसके लडके को मारा और अभी ता. २७ को तारीख पेशी पर जाते समय चोकी और खाचरोद के बीचमें ६ आदमी ने घेर कर मारा और उससे कहा कि जो तूने हमारे खिलाफ मुकदमा चलाया है इसका राजी नामा दे नहीं तो जान से मारा जायगा तो बडी रोहल के किसानों से बनजारे मजदूरों पर आक्रमण करवाया उनकी झोपडी जला दी, तीन बकरे बकरी जान से आग में झुलसकर मर गये। यहांतक कि बनजारों की स्त्रियों के लहगों तक में आग लगाई।

हम ऐसे क्रूर कृत्यों का सदा से विरोध करते रहे हैं और अन्तिम दमतक सत्य का समर्थन करते रहेंगे। हम किसानों को घृणित मार्ग नहीं दिखा सकते किसान आन्दोलन की आड में ऐसा पाशविक खेल नहीं खेलने दे सकते।

धमकियां

अपने विरोधियों को जान से मार डालने की धमकी इनका सबसे पहला हथियार है मुझे व मेरे साथियों को इस प्रकार की धमकियां कई बार दी गई। मुझे तो मारने का सक्रिय प्रयत्न भी किया था। अभी कुछ दिन पूर्व खाचरोद स्टेशन पर कन्हैयालालजी वकील के सामने नागदा मुकामी कमेटी के अध्यक्ष श्रीयुत ठक्कर साहब को भी ऐसी धमकी दी लेकिन भला हम ऐसी पशुता के सामने झुक कर कर्म पराजित होनेवाले नहीं है।

मैं किसान भाइयों को और आम जनता को सावधान कर देना चाहता हू कि ये लोग अपनी इस मूर्खता को किसान आन्दोलन का नाम देकर जनता से समर्थन कराना चाहते हैं। जनता इन जंगली जानवरों से सचेत हो जाय।

सामयिक समस्या—

रियासतों की जनता क्या करे

[श्री इन्द्रजी विद्या वाचस्पति]

जो देशी राज्य भारतीय संघ में सम्मिलित न होकर स्वतन्त्र रहने के लिये प्रयत्नशील हैं उनमें हैदराबाद और इन्दौर राज्यों के कुछ प्रतिनिधियों ने मुझ से भेंट की। प्रतिनिधि बहुत चिन्तित थे, उन्हें आशंका थी कि वहां के शासक भारत से अलग होकर प्रजा पर मन माने अत्याचार करेंगे। वे जानना चाहते थे कि भारतवर्ष से उन्हें क्या सहायता मिलेगा।

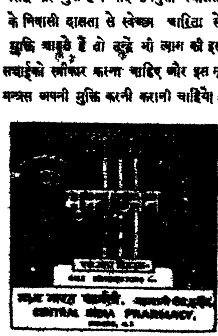
मैंने बातचीत में उन्हें विश्वास दिलाया कि प्रत्येक भारतवासी की सहानुभूति उनके साथ है मगर साथही यह चेतावनी भी दी कि उन्हें बाहर से अधिक सहायता की आशा नहीं रखनी चाहिये। पहला प्रश्न यह है कि क्या उन्हें भारतीय संघ से अलग स्वाधीन राज्य बनाने से कोई रोक सकता है? इस प्रश्न का एकही उत्तर है "नहीं"। अंग्रेजी सरकार स्पष्ट घोषणा कर चुकी है कि वह भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने के समय रियासतों को बिल्कुल स्वतन्त्र कर देगी। रियासतों के शासकों को स्वतन्त्र होने के लिये किसी ओर से आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं। उनकी इच्छा है कि वे संघ में शामिल हों या न हों। उनमें से जो राज्य चाहेंगे वे संघ के अंग बन जायेंगे और जो नहीं चाहेंगे उन्हें स्वाधीनता की घोषणा करने से कोई रोक न सकेगा।

विद्रोही रियासतों के स्वाधीनता की घोषणा करने के पश्चात जो स्थिति पैदा होगी उसमें भारतीय संघ या अन्य कोई पड़ोसी देश उन रियासतों की प्रजाकी सीधी मदद नहीं कर सकेगा। जब वह स्वतंत्र हो जायेंगे तो किसी अन्य देश को उनके अन्दरूनी मामलों में दखल देने का अधिकार न रहेगा। यदि बाहर से कोई दखल दिया जाय यू. एन. ओ. [संयुक्त राष्ट्र संगठन) तक शिकायत पहुंचाई जा सकती है। जो अव्यवस्था उत्पन्न होनेवाली है, उसका उपाय केवल यही था कि अंग्रेज सरकार जिस "औपनिवेशिक" स्वराज्य की स्वीकृति दे रही है रियासतों को भी उसका आवश्यक अंग बना देती परन्तु उसने ऐसा करना आवश्यक न समझा। इस विपत्ति का मूल कारण यही है।

तब प्रश्न उठता है कि क्या इन रियासतों के रोग का कोई इलाज नहीं और रियासती प्रजा को निराश हो जाना चाहिए? "नहीं" रियासती प्रजा के पास इस रोग का जो इलाज है वह अचूक है, वह इलाज ऐसा है कि उसकी परीक्षा संसार भर में हो चुकी है उस इलाज को प्रजा के कष्टों के लिए रामबाण कह सकते हैं और वह इलाज है प्रजा द्वारा राजा की स्वेच्छाचारिता के प्रति विद्रोह। यदि राजनीति में देश के विरुद्ध रियासतों को विद्रोह करने का उचित अधिकार है तो वहां की प्रजा को रियासत की मनमानी के विरुद्ध विद्रोह करने के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। रियासतों की प्रजा उसी उपाय से स्वतन्त्र हो सकती है, जिससे संसार की सब पराधीन अथवा दलित प्रजायें स्वतन्त्र होती रही हैं। भारत भी उसी उपाय से स्वतन्त्र हुआ है और हैदराबाद भूपाल, ट्रावनकोर और इन्दौर की प्रजा भी उसी उपाय से स्वतन्त्रता प्राप्त करके भारतीय संघ में शामिल हो सकेगी। इसके लिए प्रजा को आन्दोलन करना पड़ेगा यदि साधारण आन्दोलन सफल न हुआ तो स्वेच्छाचार के विरुद्ध विद्रोह भी करना पड़ेगा। रियासतों की प्रजा का भाग्य उसके अपने हाथों में है। हैदराबादके सज्जन ने अपनी उलझन बताई तब मुझे कहना पड़ा यदि रियासत की ८५% प्रतिशत प्रजा स्वतन्त्र होकर भारतीय संघ में सम्मिलित होने की शक्ति नहीं रखती तो निजाम का कोड़ा उनकी पीठपर रहेगा ही। निजाम को अनुभव करना चाहिए कि उसे अपनी प्रजा की इच्छानुसार चलने के लिए बाधित होना पड़ेगा। अन्यथा उसे अपनी राजसत्ता से हाथ धोना पड़ेगा। प्रजा के आन्दोलन में बड़ी शक्ति है। ब्रिटिश साम्राज्य जैसी जबर्दस्त चट्टान जब उस शक्ति के सामने नहीं ठहर सकी तो निजाम की बोसीदा दीवार उसे कहां सहन कर सकेगी। वह तो दो चार धक्कों में ही धराशायी हो जायगी।

यदि ट्रावन्कोर, इन्दौर या काश्मीर के शासकों ने संघ से अलग रहने का दुराग्रह न छोड़ा तो शायद वे लोकमत का उतना भी सामना न कर सकें उन्हें बहुत शीघ्र ही प्रजा की इच्छा के सामने झुकना पड़ेगा। पर इसके लिए प्रजा को अपनी पूरी इच्छा शक्ति पूरे जोर से प्रकट करनी चाहिए और सफलता मिलने पर निर्भय पूर्वक संघर्ष में जूझने को तैय्यार हो।

राष्ट्र हो या राष्ट्र के खण्ड उनका मोक्ष अपने ही हाथों में है। इस सचाई को भारतवासी अपने सफल बलिदानों से सिद्ध कर चुके हैं। यदि उपर्युक्त रियासतों के निवासी दासता से स्वेच्छाचारिता से मुक्ति चाहते हैं तो उन्हें भी लाभ की इस सचाईको स्वीकार करना चाहिए और इस मूलमन्त्रसे अपनी मुक्ति करनी करानी चाहिये।



सारे देश में लाहौर दिवस की धूम

आर्य नेताओं ने आर्य जनता को तय्यार रहने का आदेश दिया है।

१२ जुलाई को लाहौर दिवस के अवसर पर भारत और विदेशोंकी २००० से अधिक आर्य समाजों की ओर से लाहौर को पाकिस्तान में मिलाये जाने का विरोध किया। सीमा कमीशन के सामने पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा व प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दोनोंकी ओर से एक सयुक्त प्रार्थना पत्र उपस्थित कर दिया है आर्य समाज, कांग्रेस और हिन्दू महासभा तीनों के प्रार्थना पत्र एक ही प्रकार के हैं। इस मामले में आर्य समाज की ओर से आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता श्री गोकुलचन्दजी नारंग सीमा कमीशन के सामने बहस करेंगे।

मध्यभारत तथा अन्य जिन समाजों के व संस्थाओं के प्रस्ताव हमें प्राप्त हुए हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं।

शारदाजी के सभापतित्व में हुई सार्वजनिक आर्य हिन्दू सभा अजमेर, दयानन्द साधुआश्रम अजमेर, नगर आर्य समाज अजमेर, आर्य समाज देवास, आर्य समाज होशंगाबाद, आर्य समाज महू केम्प आर्य समाज मल्हारगंज, संयोगितागंज, जेलरोड इन्दौर, आर्य समाज सीहोर (भूपाल) आर्यसमाज की ओर से संगठित ५ हजार की सार्वजनिक सभा बीकानेर, आर्य समाज भीम मंडी (कोटा) फीजीद्वीप, स्याम, ट्रीनिडाट अफ्रीका।

—※—

"शुनं सुफाला विकृषन्तु भूमिम्"

[यजु. अ १२ म. ६९]

"श्रेष्ठ साधनों से युक्त कृषि यन्त्र भूमि को कृषि युक्त बनावें"



वेद का इस मन्त्र का व्यापक स्वरूप नई वैज्ञानिक "किसानी ट्रेक्टर" प्रास ...... सागर में कृषि-विशेषज्ञों तथा राष्ट्र के किसानों के एक सम्मेलन में इस फार्डसन नामक ट्रेक्टर का प्रदर्शन किया गया। ट्रेक्टर एक विशेष प्रकार का लंबा और सुरक्षित कोण बनाता दिखाया गया है।

गी··· ·त

पथी! अन्तर्तृप्ति बटोर
द्रव्य दूसरों का क्या सुखद
यदि तू खाली हाथ,
ऋण में ली सुमनों की स्मृतियां
कब तक देंगी साथ?
जाता सन्ध्या में रवि का भी
शौर्य पतन की ओर।
पथी अन्तर्तृप्ति बटोर

पी जाता है कमलिनियों के—
सुख को स्वर्ण विहान;
ले उड़ता मधु मास साथ में
कोकिल का कल-गान।
देख सूर्य, शशि गलित कांति ज्यों-
प्रहरी सम्मुख चोर।
पथी अन्तर्तृप्ति बटोर।

नाभ्यतर-सचित सौरभ की
मृग को हो पहिचान,
सरिता सा अपना ही पथी!
सुनके कल-कल गान।
सागर निज उर में ही पाता
सुख की मृदुल हिलोर,
पथी! अन्तर्तृप्ति बटोर।

—नटवरलाल स्नेही

[पृष्ठ २ का शेष]

—बड़गादा [इन्दौर] आर्य समाज मे श्री स्वामी जगदीशानन्दजी दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर की ओर से प्रचारार्थ पधारे । ग्राम में व्याख्यान कराया गया जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा ।

—भीमगण्डी (कोटा) आर्य समाज की ओर से आर्य वीर दल की १७-७ ४७ को स्थापना कर दी गई है । शिक्षक का कार्य श्रीकृष्ण वीरसिंहजी ने सम्हाल लिया है । आशा है उनके संरक्षण में दल शीघ्र ही उन्नति कर जायगा ।

—बिदासर (मारवाड) की जनता की ओर से जोधपुर महाराज के देहावसान पर शोक प्रकट किया गया और नव राज्याभिषेक के प्रति अपना सहयोग और समर्थन प्रकट किया गया ।

— सीहोर आर्य सम्मेलन के अवसर पर भूपाल सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध के विरोध में निम्न समाजों ने और अपना विरोध भेज हैं— गरोठ, गोतमपुरा, मल्हारगढ़, जीरण, देपालपुर, रगवासा, उदयपुर, तिजारा, सावेर, सीहोर, डीडवाना, फतेहपुर, आदि आदि ।

आर्यावर्त पंजाब सहायता निधि

५) श्री महादेवजी विष्णु परांजपे, कृष्णपुरा इन्दौर

५) श्रीमती तुलसीबाई नीमा, १६५ जूना पीठा इन्दौर

१०) इस तालिका का योग

१२६८३) पूर्व योग

१२६९३) महायोग

कन्हैयालाल
कोषाध्यक्ष दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर

बलाई भाईयों पर अत्याचार

असुर्डी सरवद, हाकले—असुर्डी गाव से दो मील दूर अवनोठी गाव है वहा बलाई लोगों के काफी घर हैं । अवनोठीके पटेल का व्यवहार इन बलाईयों के साथ अच्छा नहीं है । अभी पिछले दिनो पटेल के लड़के ने लोकाराम बलाई को खूब पीटा, उसका अपराध यही कि वह हरिजन था लड़के के बाद शराब पिये हुए पटेलसाहबने भी जो घोडीपर चढे हुए थे एक दूसरे बलाई को पीटा और उसे बेहोश कर दिया । इसी प्रकार एक और बलाई को भी पटेल के भाई ने पीटा । रिपोर्ट लिखवाने जब वे लोग हातोद पहुच तो पुलिस इन्सपेक्टर ने कोई ध्यान नहीं दिया । अस्पताल में भी इन बलाइयों को भर्ती नहीं किया गया और इस प्रकार पटेल ने अपन प्रभाव से न्याय और सहायता के सब मार्गों को रोक कर अपना मनमानी का परिचय दिया है पटेल के इस कार्य की जितनी निन्दा की जाय थोडी होगी । साथ ही सरकार के पुलिस और मैडिकल कर्मचारियों को भी अपना व्यवहार सुधारना चाहिए । याद रहे इसी इलाके में श्री कन्हैयालालजी जांगडा के उपर विधर्मियों ने आक्रमण किया था ।

"हिन्दूबाला और मुस्लिम अधिकारी"

देहली में लगभग एक मासपूर्व बड़ी लज्जाजनक घटना हुई । देहली के टेलीफोन आफिस में काम करने वाली २५ हिन्दू लडकियों में से एक लडकी को वहा के मुस्लिम अधिकारी ने अपने आफिस में बुलाया और दरवाजा बन्द कर उस लडकीसे कहा कि तुम मेरे से शादी करलो अथवा मेरी रखेल बनकर रहो, वह अफसर ५० सालका था, लडकी ने कहा है तुम्हारी उमर बाप के बराबर है इस पर उस अफसर ने कहा सारी हिन्दू औरतों को पंजाब बंगाल की तरह मुस्लिम बना लिया जायगा । लडकी ने जैसे तैसे दरवाजा

लोक गए। बीका सुखवा और अपनी साथिनियों से कहा। कन्याओं ने एक शिष्ट मण्डल प. नेहरू और सरदार पटेल के पास भेजा परन्तु दोनों ने इस कार्य की निन्दा करते हुए भी दूसरे विभाग से सम्बन्धित होने से इस मामले में कुछ कर सकने में असमर्थ पाया। आर्य समाज कन्याओं के इस महत्व पूर्ण प्रश्न को अपने हाथ में लेकर कार्य कर रहा है।

—दयानन्द वैदिक मिशन का राजार्य समाके कार्य सचिव श्री रामविलासजी प्रधान आर्य समाज मल्हारगञ्ज इन्दौर, अपनी अजमेर की यात्रा से वापिस आगये हैं और श्री कन्हैयालालजी गृहसचिव दयानन्द वैदिक मिशन लखनऊ, फिरोजाबाद आदि भ्रमण करके इन्दौर आगये हैं और अपने अपने कार्यों में संलग्न हैं।

—इन्दौर संयोगितागञ्ज में दयानन्द वैदिक मिशन की सरक्षता में श्री मूलचन्दजी वकील प्रौढ रात्रि पाठशाला स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं आशा है शीघ्र ही यह पाठशाला आरम्भ हो जायगी।

सार समाचार

—सिख पाकिस्तान असेम्बली का बहिस्कार करेंगे।

—मध्यप्रांत की सरकार ने सरकारी नौकरियों में अल्पसंख्यकों को दी गई रियायतों को वापिस लेना तयकर लिया है।

—बर्मा के प्रधान मन्त्री यू. आंग सांग को गोलियों से उनके साथियों सहित मार दिया गया। हत्यारे पकड़ लिए गए हैं इस सम्बन्ध में ३०० व्यक्ति पकड़े चुके हैं। यह एक भयानक षड्यन्त्र था।

—भारतीय विधान परिषद ने भारतीय राष्ट्रीय-ध्वज के रूप में तिरंगे झण्डे को सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया है। झण्डे में चर्खे के पूरे रूप के स्थान पर एक चक्र रक्खा गया है जिसका आकार प्रकार अशोक कालीन चक्र जैसा होगा।

—गांधी मन्दिर के संस्थापक की मृत्यु हो गई है। गांधी जी ने इस मन्दिर से अपना विरोध प्रकट किया था और कहा था भगवान मूर्ति में नहीं, हृदय में रहने वाली चीज है।

—१५ अगस्त भारत सरकार दो मन्त्रिमण्डलों के रूप में कर दी गई है। मुख्य मण्डल भारतीय क्षेत्र का शासन कर रहे हैं और दूसरा लीगी मण्डल छाया मण्डल के रूप में कार्य कर रहा है। छाया मण्डल को अब शेष भारत के मामले में कोई दखल देने का अधिकार नहीं रहा।

—पाकिस्तान सरकार में सम्भवतः ९ मन्त्री होंगे, ७ मुसलमान और २ हिन्दू।

—१५ अगस्त को सम्पूर्ण भारत में स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में अवकाश रहेगा।

—श्री त्रिकमलाल वियाणी ने कहा यदि निजाम से संघर्ष हुआ तो केन्द्रीय सरकार जनता का पूर्ण साथ देगी। बरार की जनता भी निजाम को रोकने के लिये तय्यार है।

—२० जुलाई को दिल्ली के पुराने ऐतिहासिक किले में वृक्षारोपण सप्ताह मनाया गया। जिसमें श्री प. नेहरू श्री राजगोपालाचार्य, रफी अहमद किदवई, रण बाबा आदिने भाग लिया और स्वय हाथों से जमीन खादकर वृक्षारोपण और जल सिंचन किया।

—अलवर रियासत में सरकारी भाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार कर लिया गया है और इस निर्णय पर अमल भी आरम्भ हो गया है।

—रियासतें भी १५ अगस्त को स्वतन्त्रता-दिवस का समारोह मनायेंगी। यूनियन जैक के स्थान पर राष्ट्रीय-ध्वज फहराया जायगा।

मुद्रक—श्रीधर पण्डित
चिंतामणि प्रिंटिंग प्रेस, ८९ बलवंतगंज इन्दौर.

प्रकाशक—किशोरीलाल गोयल,
आर्यावर्त कार्यालय ७२ महारानी रोड

साप्ताहिक

आर्यावर्त

४ करोड मुस्लिमों को पाकिस्तान जाना पडेगा.

भारत सरकार के उपप्रधान मन्त्रा श्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने पाकिस्तान क एक मन्त्री को लिखा है कि यदि यह साम्प्रदायिक सघर्ष शीघ्र ही समाप्त नहीं हुआ और पाकिस्तान छोडकर सब अल्पसंख्यक भारत आ गये तो हिन्दुस्तान के ४ करोड मुसल्मानों को पाकिस्तान जाना पडेगा। यह प्रश्न पूर्वी पंजाब और पश्चिमी पजाब के शरणार्थियो की बराबर सख्या की अदला बदली तक ही नही रहेगा। फिर यह प्रश्न अल्प संख्यक विषयक सैद्धान्तिक प्रश्न बनकर ही समाप्त होगा जिसमें सब मुसल्मानों को भारत छोडना ही पडगा।

पाकिस्तान सरकार से हर्जाना ?

पूर्वी पंजाब के शिक्षा डाईरेक्टर श्री एम जी सिंह की लाहौर के दगे में मृत्यु हो जाने पर भारत सरकार ने पाकिस्तान की सरकार से जबाब तलब किया है और हर्जाने की मांग की है। फावर्ड ब्लाक के प्रधान नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के अभिन्न सहयोगी श्रीशार्दूलसिंह कवीश्वर के भी मारे जाने के समाचार मिल हैं।

हैदराबाद से जनता बरार भाग रही है ?

हैदराबाद सरकार की दुरंगी नीति से परेशान होकर हजारों की सख्या मे हिन्दू सिक्ख बरार भाग २ कर आ रहे हैं। रियासत में होनें वाले सर्घर्ष स बहुसख्यक जनता भयभीत हो उठी है और उसे इस बात का आशका है कि पश्चिमी पजाब की भांति रियासत में भी शीघ्र ही भयकर उत्पात होने वाला है। रियासत ने अनेकों हिन्दू, आर्य समाजी कार्यकर्ताओंको गिरफ्तार कर लिया है।

पाकिस्तान की सरहद पर किलेबन्दी

पजाब मुस्लिम लीग ने अपनी बैठक में प्रस्ताव पास किया है कि पाकिस्तान की सुरक्षा के लिए पाकिस्तान की सरहद पर मजबूत किलेबन्दी की जाय और पाकिस्तान में अनिवार्य सैनिक शिक्षा आरम्भ कर दी जाय और जनता को सशस्त्र कर दिया जाय।

भारत के अल्प संख्यक चिन्तित

युक्त प्रान्त के मुस्लिम लीगी नेता चौधरी खली कुज्जमाने एक वक्तव्य में पजाब मुस्लिम लीग के निर्णय की आलोचना करते हुए कहा कि इस किले बन्दी की योजना स भारत में हमारी जान खतरे मे पड जायगी। इस नीति को बदल सद्भावना का मार्ग अपना ना चाहिए। अब हाथ जोडने से क्या होता है पहले जो बोया था उसे चौधरी साहाब को भुगतना ही पडगा।

अर्नेस्ट वेविन का दुःस्वप्न।

इग्लैण्ड के परराष्ट्र सचिव अर्नेस्ट वेविन ने साऊथ पोर्ट की मजदूर काग्रस के अधिवेशन मे भारत की स्थिति का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि भारत की समस्या का उचित समाधान न हुआ तो बृटन वहाके गृहयुद्ध की बिगडती हुई दशा मे अपनी फौज फिर स भेज सकता है। इस वक्तव्य के बाद से ब्रिटिश फौजों की रवानगी की रफ्तार धीमी पड चुकी है और कहा गया है कि जहाजों की कमी के कारण दो लाख दस हजार ब्रिटिश सेना को ३१ मार्च ४८ तक समुद्र पार नहीं कराया जा सकता। अंग्रेज मौके की फिराक मे यह नाटक कर रहे है क्या राष्ट्रीय सरकार इन फौजो को अविलम्ब नहीं हटा सकती ?

दिनाक२१सितबर४७
मूल्य ५) वार्षिक

सम्पादकः— स्नातक उमेशचन्द्र

अक सं. २५
एक अक =)

सृष्टि १९७२९४९४७] दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र [दयानन्द जन्माब्द १२३

आर्यावर्त

रविवार, भाद्रपद सुदी ६ वि. सं. २००४

इन्दौर में वैधानिक प्रगति।

आज जब सम्पूर्ण भारत की जनता चिरकालीन संघर्ष के पश्चात् स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त कर चुकी है रियासती जनता को अभी इस संघर्ष में से सफलता प्राप्त करना बाकी है। इन्दौर राज्य की पिछले दिनों जो प्रतिगामी अवस्था थी उसमें १५ अगस्त के पश्चात् पर्याप्त सुधार हुआ है और जनता व राजा में एक नवीन सामञ्जस्य पैदा हुआ है। नवीन प्रधान मन्त्री श्री मेहता की नियुक्ति और उसके बाद राज्य के शासन में अन्तः कालीन सुधारों के रूप में जनता के तीन मन्त्रियों की नियुक्ति इस दिशा में शुभ प्रयत्न हैं। नवीन मन्त्रियों की नियुक्ति से जनता के सन्तोष का निर्णय कर सकना तो कठिन है परन्तु इतना अवश्य है कि य तीनों मन्त्री अपनी कार्य कुशलता एवं जन सेवा भाव के द्वारा अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण कर सकते हैं। नवीन विधान के निर्माण में इन तीन मन्त्रियों की उपस्थिति अत्यन्त कारगर सिद्ध होगी। इन मन्त्रियों को शिक्षा, श्रम, खाद्य, सिविल सप्लाई के जो विभाग दिये हैं उनसे भी अधिक महत्व पूर्ण विषय उन्हें जन प्रतिनिधि के रूप में प्राप्त होने चाहिये थे परन्तु जो कुछ हाथ में आया है उसीके उपयोगसे यह सिद्ध कर देने का उत्तरदायित्व इन नवीन मन्त्रियों पर आ जाता है कि वे जनता की सच्ची सेवा करने के लिए ही इन पदों पर गये हैं।

सबसे बडी क्रांति इस दिशा में हिंदी को राज्य व्यवस्था में अधिक से अधिक प्रयोग करके की जा सकती है। प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता यद्यपि कानून रूप में विद्यमान है परंतु पिछली प्रतिगामी व्यवस्था ने इसओर कभी ध्यान नहीं दिया। हमारे इन मंत्रियों का सबसे पहला कर्तव्य इस ओर जनता को आकर्षित करना होना चाहिये। इंदौर राज्य के लिये निरक्षरता एक महान् कलंक के रूप में है। प्रौढ शिक्षण की व्यवस्था के रूप में इसओर शीघ्र ही प्रगति होनी चाहिये। मजदूरों के जीवन स्तर और उनकी आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने का उत्तर दायित्व भी इन मन्त्रियों के सिर है। मिल मालिकों और मजदूरों के मध्य चलने वाला संघर्ष इन मन्त्रियों की उपस्थिति में बन्द ही होना चाहिये इस कार्य के लिए मध्यस्थता प्राप्त करने की योग्यता इन मन्त्रियों में अवश्य है आशा है इस दिशा में शीघ्र प्रयत्न होगा। खाद्य और सिविलसप्लाई विभागों में आज जिस प्रकार की अव्यवस्था है उसे अविलम्ब नष्ट किया जाना चाहिए। खाद्य और सिविल सप्लाई विभागों का जनता से सीधा और अहर्निश का सम्पर्क है जनता के हृदयों पर अपनी सफलता का विश्वास इन विभागों में उचित परिवर्तन करके ही किया जा सकता है। जनता आज इन विभागों की अव्यवस्था से विक्षुब्ध हो चुकी है आशा है जनता के प्रतिनिधि होने का गौरव धारण करने वाले मन्त्री इस ओर अविलम्ब प्रगति शील कदम उठायेंगे इस प्रकार नवीन मन्त्रियों के ऊपर महान उत्तर दायित्व है इस उत्तरदायित्व की सफलता पर ही इन्दौर के नवीन विधान की रूपरेखा अवलम्बित है। जनता अपने प्रतिनिधि मन्त्रियों की सफलता के लिए मंगल कामना करती है।

हिन्दी युक्तप्रान्त की राजभाषा

यद्यपि यह निर्विवाद है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा होने का गौरव धारण कर सकती है परन्तु अभीतक हिन्दी को किसी प्रान्त की भाषा के रूप में राजकीय आधार प्राप्त नहीं हो सका था। पिछले दिनों युक्त प्रान्त की गवर्नर श्रीमती नायडू ने हिन्दी को एक विचित्र परिस्थिति में खडा कर दिया था परन्तु यह अवस्था अब समाप्त हो चुकी है। युक्त प्रान्तीय धारा सभा ने विगत सप्ताह अपने अधिवेशन में एक गैर सरकारी बिल के रूप में हिन्दी को युक्त प्रान्त की भाषा स्वीकार कर लिया है। युक्त प्रान्तीय धारा सभाके सदस्यों के इस निर्णय की जितनी प्रशन्सा की जाय थोडी होगी। हिन्दी ही समस्त भारत की राष्ट्र भाषा होनी चाहिए। इस दिशा में यह ठोस कदम है, आशा है देश के कर्णधार जनता की आवाज को स्वीकार कर अपने जनतन्त्र प्रेम का क्रियात्मक प्रदर्शन करने में अब विलम्ब न करेंगे।

आर्यकुमार सभा का आंदोलन

अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद के प्रमुख कार्यकर्ता श्री पं० सुखदेवजी शास्त्री विगतमास से हमारे प्रान्त में भ्रमण कर रहे हैं। उनका प्रान्त में भ्रमण का उद्देश्य आर्यकुमार सभाओं का निरीक्षण, सङ्गठन, तथा प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद की स्थापना है इस के लिए सुजानगढ में परिषद का अस्थाई कार्यालय स्थापित करके श्री प० जीवानन्दजी शर्मा को प्रधान मंत्री नियुक्त किया है तथा सभी कुमार सभाओं और उनके कार्य कर्ताओं से यह आशा व्यक्त की है कि वे अपनी सभाओं का सम्बन्ध प्रान्त के सगठन को सुदृढ बनानेके लिए शीघ्र स्थापित करलें। श्री पं० जी ने विगत मास में विभिन्न२०कुमार सभाओंका निरीक्षण किया है जिनमें प्रमुख सुजानगढ, लाडनू बीकानेर सरदारपुरा, गुलाबसागर जोधपुर साभरलेक, जयपुर अजमेर हैं कोटा पोटनपोल कुमार सभा का निरीक्षण करके इन्दौर का भी निरीक्षण किया है।

श्री प० जी खण्डवा, बरहानपुर, सागर, भूपाल, झांसी, ग्वालियर आगरा, मथुरा, भरतपुर आदि स्थानों की कुमार सभाओं का निरीक्षण करके यथा सम्भव शीघ्र अपने केन्द्र में मुरादाबाद पहुँचेंगे जहां २ शास्त्री जी निरीक्षणार्थ पहुँचे आर्य कुमार सभा के आन्दोलन को प्रगति देनेके लिये उनसे सभी सज्जन सहयोग करें। आर्य कुमारों का सगठन ही इस समय देश का सच्चा नेतृत्व करसकता है।

...※...

सामयिक विचार धारा—

—: नीति का निर्वाचन :—

[लेखक —श्री बिहारीलालजी शास्त्री काव्यतीर्थ]



— लेखक —

हमारे पतनकी कहानी

१. १२सौ वर्ष पूर्व सिन्धके प स मुस्लिमराज्य, और सिन्ध पर मुसलमानों की गृद्ध दृष्टि।

२ बौद्ध और हिन्दुओं का झगडा।

३. सिन्ध का राजा दाहिर ब्राह्मण था, बौद्धों के साथ साथ राजपूत नाम धारियों न उसका साथ नहीं दिया।

४. बौद्ध मुसलमान बनते गये।

५. ब्राह्मणों द्वारा अछूतों के साथ सामाजिक दुर्व्यवहार होता था।

६ अहिन्सा के नाम पर बौद्ध जैन युद्ध से दूर रहना पसन्द करते थे, हिंदुओं में मूर्तिपूजा, ज्योतिष आदि के अन्ध विश्वास प्रचलित थे। यथा—

(अ) झन्डे के गिरते ही पराजय समझना और देवलपर मुसलमानोंका अधिकार

(ब) मुल्तान के सूर्य नारायण मन्दिर को मुसलमानों को इसलिए दे देना क्यों कि युद्ध होने पर मुसलमान भर्मवान के नाक कान काट लेते (बाद में मुसलमानों ने मूर्ति में गौ मांस लटकवाया और मदिर तोड़ मस्जिद बनवाली)

७. गजनी पर अधिकार कर सुबुक्तगीन का पंजाबपर आक्रमण। जयपाल को हरा खैबर पर पूर्ण अधिकार और भारत की लूट,

८ तालसैय्यद द्वारा पृथ्वीराज कालीन आल्हा, ऊदल, जयचन्द आदि में परस्पर सघर्ष कराना।

९. (कन्नौज कानपुर) के पास मदार शाह जासूस साधु का डेरा डालना और ख्वाजा जासूस साधु का अजमेर में अड्डा जमा इस्लाम का प्रचार करना और मूर्ख जनता का धोखे में आना।

परिणाम

इस प्रकार हिन्दुओं की असावधानी अहिन्सामक्ति, शान्तिप्रियता, अन्धविश्वास और फूट के कारण आर्य राष्ट्र इस्लाम की विजय भूमि बन गया। यह इतिहास का एक पृष्ठ है।

दूसरा पन्ना

हिन्दुत्व उत्कर्ष की ओर

यह उत्कर्ष का इतिहास मराठों का इतिहास है। कईसौ वर्ष तक जमे हुए यवनराज्य को मुट्ठी भर मराठ उखाड कर फेंक देते हैं। साधारण जागीरदार शाहजी के पुत्र शिवाजी छोटी छ टी लूट मार करते करते एक राज्य स्थापित करते है और ध रे धारे उनके उत्तराधिकारी दहली के सिंहासन पर अधिकार करत हैं।

जो हिन्दू यवनों क अत्याचारसे पीडित हो कराहता हुआ राम और कृष्णको पुकार रहा था। विरक्त होकर मुक्ति की चाह कर रह था। शिवाजी के उदय से वह कई शताब्दी बाद फिर भूषण के शब्दों में वीर रस की कविता करने लगा।

अब्दाली क आक्रमण से मराठा शक्ति एक बार नष्ट हुई सी प्रतीत होती है, परन्तु १० वष क भीतर मराठे देहली पर पुनः भगवाध्वज फहराने लगते है। यदि अंग्रेज बीचमें न आपडते तो समग्र भारत पर मराठा साम्राज्य होही जाता।

वर्तमान की स्थिति

बस ये है इतिहास क दो पृष्ठ सक्षेपमें। अब आजकल की राजनैतिक दशा से इन का मिलान कर लीजिए। इतिहास अपने को दुहराता है यदि यह अंग्रेजी कहावत ठीक है तो विचारिए कि हिन्दू किस पृष्ठ का अनुसरण कर रहे हैं।

मुसलमानो की नीति और स्वप्न

मुसलमानों की नीति तो इस्लाम के जन्म काल स एक जैसी है दारुलइस्म बनाना और दारुलहरब पर आक्रमण उपद्रव आतंक फैलाकर जैस हो वैसे इस्लामी शासन स्थापित करना।

पाकिस्तान बन गया। मुसलमानों की तुर्किस्तान में मरी खिलाफत का भारत में पाकिस्तान रूप में जन्म हो गया।

अब मोपलस्तान, मेवास्तान, उस्मानिस्तान का प्रोग्राम शेष है। यदि हिन्दुओंकी नीति यही रही जोकि अबतक है तो य सबस्तान भी बन ही जायेग और हमारे नेताओं के कथनानुसार हिन्दुस्तान व पाकिस्तान मिलकर इस मान में एक हो जायेंगे कि सब पाकिस्तान ही बन जायेगा नेताओं की आशानुरूप सद्भावना और सहयोग के साथ एकता तो असभव ही है।

हमारी असफल नीति

सन् २१से हिंदुओंने मुस्लिम मनौती प्रारभ की और हिन्दुत्व को विसारा। इसका परिणाम आज सामने है म गांधी का रत्तीमात्र भी प्रभाव मुसलमानों पर नहीं मगर वे मुस्लिम मनौती में आजतक हिन्दुओं को दबाये जारहे हैं। पंजाब, गुड़गावा, सरहद और नोआखाली में उनकी चल नहीं पाती मगर कलकत्ते के हिन्दुओं के सिर हुए। मुसलमानों की

ढाल तो रहे श्री महात्माजी और हिन्दुओं को केवल बचावकी आज्ञा है। आक्रमण की नहीं। मुसलमान के दोनों हाथ छुटे हैं, दोनों में तलवार है क्यों कि उनकी ढाल स्वयं महात्माजी थामे हुए हैं।

बस यह नीति है वर्तमान में हिंदुओं की। मुसलमान के लिए आक्रमण का मार्ग खुला है और हिन्दू के हाथ पकडे हुए हैं, महात्माजी।

वे लोग हिन्दू को मारें, स्त्रियोंका अपहरण करें हिन्दुओं की सम्पत्ति छीने मंदिर ढाह दें उन्हें छूट है। मगर अव्वल तो ऐसी बातें करना हिन्दुओं का स्वभाव ही नहीं और अगर कोई ऐसी हरकत करें तो महात्माजी "अनशन" का वज्र उसके ऊपर लिये खडे रहते हैं।

अछूतों के साथ हिन्दुओं का व्यवहार दाहिर के समय जैसाही है। जात पांत और धार्मिक वहम तथा रूढियां यथापूर्व हैं ही। सैनिक बल संघटन शक्ति से हिन्दू सौ कोस भागता है। सैनिक बलमें हिन्सा की दुर्गन्ध और संघटन में साम्प्रदायिकता का विष उसे मालूम पडता है। कल्पित राष्ट्रियतासे वह आज भी चिपटा है अब पाठक स्वयं विचारलें कि हिन्दू इतिहास के कौनसे दौरमें चलरहा है। और हमें भविष्य के लिए इतिहास की कौनसी नीति का निर्वाचन करना चाहिए।

...*...

सूचना

अखिल भारतीय मलेरिया (जाडा-बुखार) रक्षा समिति देहली ने इस साल एक लाख रोगियों को मौसमी बुखार की दवा मुफ्त बांटने का प्रबन्ध कर लिया है। कोई भी सज्जन जो अपने यहां दवा मुफ्त बांटना चाहें निम्न पते से बांटने के नियम तथा दवा मुफ्त मंगा सकते हैं।

रामजीवन प्राणाचार्य
मंत्री—अ० भा० मलेरिया रक्षा समिति,
५२६ ए, गांधी स्ट्रीट, देहली।

....*....

.... लोक-वाणी ....

हमारा भविष्य क्या हो

१ राजार्य सभा को सुदृढ बनाना।
२ आर्य समाज का नेतृत्व पूंजिपतियों के हाथ से छीनकर युवक आर्य जनता को सौंपना।
३ प्रचारकों, उपदेशकों और संस्थाओं का संगठन करना।
४ निश्चित कार्यक्रम।
५ पंच वर्षीय योजना का निर्माण।

आर्य समाजको वर्तमान अवस्था में प्रगतिशील बनाने के लिये उपर्युक्त बातें आवश्यक हैं आशा है समाज प्रेमी इसपर विचार करेंगे।

धर्मदेव शास्त्री, दर्शन केसरी,
अशोकआश्रम (देहरादून)

एक समस्या

भारत के २टुकडे होगये एक पाकिस्तान और एक इंडिया! हिन्दुस्तान नाम देनेमें यह हिन्दुओं का देश समझा जाता और बनाना है इसे शामिलस्तान अन्यथा नाजुक राष्ट्रियता मुरझा जाती!

राष्ट्रपति श्री कृपलानीजीने कराची में ऐसाही कहा है और साथमें यहभी कहा है कि मुझे "हिन्द" नाम पसंद है. अच्छा तो अब प्रश्न यह है कि जब भूमंडल से हिन्दुस्तान नामही मिट गया तो बापूजी की प्यारी भाषा "हिन्दुस्तानी" कहाँकी समझी जाय?

और यदि राष्ट्रपतिजी का प्रिय शब्द हिन्द इस देशका नाम ठीक है तो हिन्द की भाषा हिन्दी क्यों नहीं?

बापूजी के चेलो या राष्ट्रपतिजी के अनुयायियोंपर है कुछ इसका सुसंगत उत्तर?

अगर है तो आर्यावर्त में प्रकाशित करने की कृपा करें।

बिहारीलाल शास्त्री.
उझानी (बदायूं)

सहगल, ढिल्लन आदि क्यों नहीं

भारत की स्वतंत्रता के बाद यह आशा की जाती थी कि आजाद हिन्दके उपेक्षित सैनिकों के साथ सद्व्यवहार करके उनके घावों पर मरहम लगाया जायगा किन्तु वैसा हुआ नहीं। इस कार्य से जनता आश्चर्य में पड गई है।

आजाद हिन्द फौजके त्याग और तपस्या के बारे में किसी को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है। इन लोगोंने देश के लिये केवल अपनी तनखाहों और मरतोंका ही मोह न छोडा, किन्तु अपने प्राणोंतक की बाजी लगादी, और उन्हें उसका पुरस्कार यह मिला? सेनाके बडे बडे पद अंग्रेजों या राजभक्त (अंग्रेज भक्त) भारतीय सैनिक अधिकारियों को देदिये गये। और आजाद हिन्द सेना के सैनिकों की पूर्णतः उपेक्षा की गई। क्या सैनिक उच्चपद सहगल, ढिल्लन, रामसिंह आदिको नहीं दिये जा सकते थे? क्या वे इसके योग्य न थे। कांग्रेस के नेताओं ने अपने चुनावों के समय विजय प्राप्त करने के लिये इनका उपयोग किया और अब इन्हे दूध की मक्खी की तरह बहिष्कृत कर दिया—अभीतक साधारण सैनिकों में भी आजाद हिन्द के सैनिकों की भर्ती नहीं की जाती। महात्मा गांधीने इन सैनिकों को खेत जोतने की सलाह दी है। क्यों? क्या इसलिये कि उन्होंने देश के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी?

सांवलसिंह [सूबेदार]
आजाद हिन्द सेना (मेरठ)

क्षात्र धर्म

"आजकी स्थिति में भजन, पूजा-पाठ और ईश्वरोपासना से भी ज्यादा जरूरी क्षात्रधर्म का पालन है। भारतीय ऋषियों का कथन है कि जब देश, धर्म और संस्कृति पर विपत्ति आवे तब उसके हटाने और पीडितों की रक्षा के लिये सब वर्णों के लोगों को एक होकर शस्त्र पकडना चाहिए। आज प्रत्येक हिन्दू का हाथ माला गोमुखी से पहले शस्त्र पर जाना चाहिये।" —स्वामी [illegible] महाराज

इन्दौर व अन्य देशी राज्य

इन्दौर—अन्त कालीन नवीन मन्त्री श्री मिश्रीलालजी गगवाल [खाद्य और सिविल सप्लाई) श्री वैजनाथजी महोदय [श्रम विभाग] तथा श्री. छगनलालजी मित्तल (शिक्षा विभाग) द्वारा २० सितम्बर को अपने पदोका कार्य सम्हाल लिया गया।

दयानन्द कन्या महाविद्यालय मल्हारगज को इन्दौर शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। इस विद्यालय को श्री सेठ कनकमलजी चौधरी की ओरसे ५१) दान में प्राप्त हुए है।

——हार्टन साहब के हटतेही इन्दौर में काला बाजार पकडा जाने लगा है। ४० मानी से भी अधिक अनाज कोठों मे से पकडा जाचुका है। गेहू और गुड का ही चोर बाजार हो सो बात नहीं औरतों की दलाली भी इन्दौर में पिछले दिनों खूब चली परन्तु अब इस गुट क लोग पकडे जारहे हैं। रामप्यारी नामकी एक बहिन पुलिस के कब्जे में हैं [यह महिला भूपाल के पास किसी गावकी है]

——दिनाक १३ सितम्बर को इन्दौर में आदरणीया माता अहिल्याबाई की पुण्य-तिथि मनाई गई। सार राज्य मे विशेष कर इन्दौर की जनता में अपार हर्ष था। जनता आनन्द विभोर हो अपने अपने दलोंका सशक्त प्रदर्शन करती हुई नगर कीर्तन कर रही थी। टाऊन हालमे श्री प्रधान मन्त्री. श्री मेहता का भावपूर्ण भाषण हुआ।

—इन्दौर राज्य की ओरसे ७००० शरणार्थियो को राज्य में बसाने का काय आरम्भ हो चुका है। गरौठ आदि स्थानों में केम्प खोल दिये गये है। इस कार्य के लिये श्रीमन्त की सरकारने ५ लाख रुपया व्यय करना स्वीकार किया है।

—१२सेर के स्थान पर १०सेर राशन कर देना स्थानीय जनता द्वारा घोर विरोध किया जारहा है। स्थानीय सभी प्रमुख पार्टिया सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध आन्दोलन कर रही हैं।

—**बडौदा** श्री स्वामी माधवानन्दजी के प्रयत्न से बडौदा और जोधपुर क राज्यों मे घनिष्ट सम्पर्क स्थापित हो गया है। बडौदा के लक्ष्मी विलास पेलस मे तिलक समारोह के रूप में इस सम्पर्क सूत्र को दृढ कर दिया गया। श्री स्वामीजी ने आशीर्वाद देकर इस सम्बन्ध के सुदृढ रहने की मगल कामना की। उसी दिन सायकाल श्री माणिकराव व्यायाम शाला में स्वामीजी का ओजस्वी भाषण हुआ।

—नरसिंहगढ के नागरिकों नें राज्य के हिन्दू अधिकारोंकी रक्षा के लिए श्री रामभरोसे मिश्र की अध्यक्षता में नरसिंहगढ राज्य हिन्दू सभा की स्थापना की है।

—गुना हिन्दु सभा की ओर स ग्वालियर राज्य हिन्दु सभा के आन्दोलन का सफलता के लिए श्र मोतीलालजी के नेतृत्वमें ८ सत्याग्रहियों का एक जत्था ग्वालियर रवाना हो गया है।

—जूनागढ (पाकिस्तान से सम्बन्धित) हिन्दू बहु सख्यक राज्य में गुजराती के राष्ट्रीय पत्र "जन्म भूमि" व "वन्दे मातरम" पर प्रवेश पाबन्दी लगादी है।

—अलवर नरेश अपनी सेना केन्द्रीय सरकार का दनके लिए तय्यार है।

—उदयपुर राज्य में सशस्त्र उपद्रवियों के दल का भण्डाफोड हो गया है। मुसलमान बोहरो के पास हजारों हथियार प्राप्त हुए हैं। उदयपुर के बोहरों ने पाकिस्तान को ६ लाख रुपये मदद दी है। उदयपुर के प्रधान मन्त्री श्री रामभूर्ति ने स्थिति को नियन्त्रण में ललिया है और दो मास के के लिए १४४ धारा उदयपुर नगर में लगा दी गई है।

—भूपाल राज्य के कर्मचारीयों ने रियासत के कठोर रवैये के विरोध में हडताल की।

भारत वर्ष

——पूना में सय्यद महमूद अहमद हमीद शेख व खुर्शेद बानू सैय्यद महमूद दोनों मुसलमानों की प्रार्थनापर उन्हें हिन्दु महासभा द्वारा हिन्दू धर्म में सम्मिलित कर लिया गया। ये दोनो समारोह तिलक मेमोरियल हाल मे सम्पन्न हुए।

——अखिल भारतीय हिन्दु महासभाकी कार्य कारणी ने युक्त प्रान्त मे चल रहे महासभा के आन्दोलन को वापिस ले लिया है।

——युक्त प्रान्तीय धारा सभाने एक बिल पास करके हिन्दी को युक्त प्रान्तकी सरकारी भाषा घोषित कर दिया है।

—बिहार सरकारने सिन्ध प्रान्तीय हिन्दू सभा के विदेश विभाग क मन्त्री श्री दयालसिंह वदी के बिहार प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगा दिया है। बिहार की प्रजातन्त्री सरकार का यह प्रतिबंध अनुचित और हिन्दुओ की भावना को ठसे पहुचाने वाला है।

रतनगिरी के जिलाधीशने फ्री हिन्दुस्तान क सम्पादक श्री. ए एस. भिडे पर बम्बई पर जन सुरक्षा विधान १९४७ क अनुसार प्रतिबन्ध लगा दिया है कि वे किसी सभा का आयोजन अथवा उसमें भाषण न दे।

—भारतीय विधान परिषद की कांग्रेस पार्टी न अपनी एक बैठकमे निश्चय किया है कि विधानक मौलिक अधिकारोंवाले अध्यायमें देश के पशु धन गौ की हत्या को बन्द करने की धारा जोड दी जाय।

——भरतपुर व अलवर तथा दिल्ली के आसपास मवों के साथ संघर्ष में कम्यूनिष्ट मेवों का पक्ष लेरहे हैं और मेवों की सुरक्षा की अपील कर रहे हैं। इस नीति का वहां क जाटोंने खूब विरोध किया है और व कम्यूनिस्टों को भी मेवो की भांति देश घातक समझ रहे हैं।

—भारतीय विधान-परिषद का आगामी अधिवेशन नवम्बर के प्रथम सप्ताह मे होगा।

मुद्रक—श्रीधर पण्डित
चिंतामणि प्रिंटिंग प्रेस, ८९ यशवंतगज, इन्दौर.

प्रकाशक—किशोरीलाल गोयल,
आर्यावर्त कार्यालय, ७२महारानी रोड, इन्दौर

-आर्य जगत-

महेश्वर—पिछले दिनों गुरुकुल के आचार्य श्री लक्ष्मीनारायणजी शास्त्री ने सुन्देरेल [धार-राज्य] में वृष्टियज्ञ सम्पन्न कराया। वरुण देव ने प्रसन्न हो यज्ञ की सार्थकता सिद्ध की जनता में आशा की लहर दौड़ गई है।

वृन्दावन—गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन में ३१ अगस्त को श्रावणी उपाकर्म व सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया गया। श्री स्वा. ... जी सिद्धांत शिरोमणि, ब्र. सुन्देरेल ब्र. विश्व-प्रकाश ब्र. केशव व ब्र. सत्यपाल आदि के भाषण हुए।

सांवर झील—श्री बाबू रामप्रतापजी आर्य व श्री प. कन्हैयालालजी आंगडा (प्रचारक दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर) के प्रयत्न से यहां के हरिजनों के वेतन में ४० प्रतिशत वृद्धि हुई है। यहां आर्य समाज के सहयोग से शीघ्र ही राजस्थान हरिजन सेवक संघ की स्थापना करने की योजना बन रही है।

गौतमपुरा—मालव प्रांत गौतमपुरा [इन्दौर राज्य में] हिन्दू ललनाओं की रक्षा के निमित्त "सज्जन महिला आश्रम कार्य कर रहा है। जिसके प्रबन्ध मन्त्री श्री मनीराम वर्मा इन्दौर निवासी हैं। प्रान्त की जनता इस आश्रम का सहयोग कर इस कार्य को आगे बढ़ा सकती है। आश्रम की ओर से श्री मनसासिंहजी प्रचारक नियुक्त किये गये हैं। जहां वे पहुंचे वहां की जनता उनसे धार्मिक प्रचार कराये और आश्रम के लिये सहायता करे।

खेड़ा खदान—आर्य समाज खेड़ा खदान की ओर से स्वतन्त्रता दिवस बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया था। आर्य समाज के प्रधान श्री दीपचन्द्रजी शर्मा के प्रयत्न से सारे नगर और समीपस्थ ग्रामों (खेड़ा, कनमेटी, पंथवरखेड़ा, पिपलिया मन्डी आदि में भी उत्सव मनाया गया।) आर्य राष्ट्र की स्थापना के सम्बन्ध में भाषण हुये। श्रावणी पर्व के अवसर पर यहां की समाज ने विशेष उत्सव मनाया। नगर की ओर से निम्न संस्थाओं को निम्न प्रकार दान देना निश्चय हुआ।

५) रु. सार्वदेशिक सभा देहली, ५) रु आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान मालवा अजमेर, ५. रु. गुरुकुल चित्तौड़ ५. रु आर्यावर्त साप्ताहिक इन्दौर, २. रु. नारायणगढ़. २. रु कनघट्टी, १. रु. बादरी, १. रु. मुन्देड़ी, १. रु. कुन्देड़ा, १. रु. वैदिक पाठ शाला खेड़ा खदान।

जावद (ग्वा०)—स्थानीय आर्य समाज की ओर से श्री स्वामी जगदीशानन्दजी दयानन्द भील आश्रम रावटी व श्री भगवतीप्रसादजी उपदेशक, आ. प्र. नि. सभा अजमेर के भाषण एवं प्रवचन कराये गये। आर्य समाज के अतिरिक्त प्रधानजी के गृह तथा अन्य आर्यों के गृहों पर सामूहिक सन्ध्या हवन का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। सार्वजनिक कार्य क्रम में २००० से अधिक जनता भाग लेती रही। श्रावणी उत्सव के अवसरपर समाजका नवीन भवन निर्माण का निश्चय किया गया।

धरमपुरी (धार)—श्रावणी पर्व के अवसर पर श्री लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री आचार्य गुरुकुल महेश्वर द्वारा यज्ञ कार्य सम्पन्न कराया गया। सायंकाल विशेष व्याख्यान सार्वजनिक सभामें हुआ। १०. रु. समाज की ओर से गुरुकुल महेश्वर को सहायतार्थ दिये गये।

नवीन निर्वाचन

आर्य समाज जावद [ग्वा०]
प्रधान-श्री बन्शीलालजी, गगरानी
मन्त्री-श्री हजारीलालजी,

आर्य समाज खेड़ा खदान हो. स्टेट
प्रधान-श्री शकरलालजी
मन्त्री-श्री वीरभद्रजी
संरक्षक-श्री दीपचन्द्रजी





'दयानन्द दिग्विजयम्'

[आचार्य श्री मेधाव्रतजी रचित]

सरल, ललित संस्कृत कविता में महर्षि का संपूर्ण जीवन चरित्र, सुन्दर चित्रों से विभूषित, सुगम हिन्दी अनुवाद सहित, उत्तम कागज तथा उत्तम जिल्द-वाले दोनों भागों का मूल्य केवल४+५=९ नौ रुपये।

प्राप्तिस्थान—शरच्चन्द्र सत्यव्रत तीर्थ, पो. येवला Yeola (जि नासिक)

खुश खबरी ! खुश खबरी ! खुश खबरी !

-: स्वास्थ्य रक्षा का स्वर्ण अवसर :-

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरिद्वार) की

सुप्रसिद्ध अमूल्य शास्त्रोक्त आयुर्वेदिक औषधियाँ खरीदकर लाभ उठावें।

-: हमारी कुछ उपयोगी औषधियाँ :-

भीमसेनी सुरमा

आंखों की प्रत्येक प्रकार की बीमारी दूर होकर नेत्र ज्योति तेज होती है।

मूल्य—१।) शीशी, नमूना ॥=)

भीमसेनी दन्तमन्जन

दांतों के सब रोगों को दूर कर उन्हें चमकीले बना देता है।

मूल्य ॥=) शीशी.

नेत्र बिन्दु

दुखती आंखों में इसका प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है।

दादका मरहम

दादपर लगाने से दो दिन में ही आश्चर्य जनक लाभ करता है।

ब्राह्मी तैल

दिमाग को ताजगी और ताकत देता है। बालों को मजबूत बनाता है।

मूल्य १=) शीशी, २॥) पाव।

ब्राह्मी शरबत

ब्राह्मी व बादाम आदि से तैय्यार किया यह शरबत शरीर में स्फूर्ति व ताजगी लाता है।

मूल्य ३) बोतल

-× हवन सामग्री ×-

रोग के कीटाणुओं को नष्ट कर घर को पवित्र और अधिक सुगन्धित बनाती है।

अन्य औषधियां—इनके अतिरिक्त बसन्त कुसमाकर, सत् शिलाजीत चन्द्रप्रभा, कस्तूरी, केशर, ब्राह्मी बूटी, गुरुकुल चाय, तथा अन्य सब प्रकारके आयुर्वेदिक रस, भस्म, घृत, तेल, पाक, चूर्ण, आसव अरिष्ट क्वाथ आदि मिलते हैं।

औषधियोंकी विशेषताए—हमारे यहां सब दवाइयां पूर्ण रूपेण शास्त्रीय पद्धतिसे पूर्ण स्वच्छता तथा सावधानी के साथ तय्यार की जाती हैं। इसलिए पूरा लाभ पहुंचाती हैं। हमारा उद्देश्य जनताके पास सच्ची प्रामाणिक दवाईयां पहुंचाकर सेवा करना है। इन विशेषताओं के कारण हमें आशा है कि आयुर्वेद के प्रेमी गुरुकुल की औषधियों से लाभ उठायेंगे।

मध्य भारत के लिए हमारे सोल एजंट :-

बृहद् औषध भाण्डार १६ जेल रोड इन्दौर सिटी.

इन्दौर के स्टाकिस्ट—मोहनलाल मन्नालाल, सयोगितागंज
ग्राम उद्योग वस्तु भण्डार, तोपखाना मेनरोड.
मध्य भारत फार्मेसी ७२ महारानी रोड
सर्जिकल मेडिकल स्टोर, २० तोपखाना मेनरोड
दि इन्दौर स्वदेशी को आपरेटिव स्टोर ६८, तोपखाना मेनरोड.

सर्व श्रेष्ठ बीमा कम्पनी—★—

दि बॉम्बे लाइफ अश्युरेन्स कं. लि.

सम्पत्ति ३॥ करोड से ऊपर, वार्षिक आय ७५ लाख से ऊपर [स्थापित १९०८]

त्रिलोकीनाथ भार्गव—मैनेजर इंदौर.



निजाम हैदराबाद में नागरिक व धार्मिक प्रतिबन्ध

निजाम हैदराबाद से प्राप्त समाचारों स सार देश में सनसनी फैल रही है। वहां की बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के विरुद्ध राज्य की ओर से दुर्व्यवहार हो रहा है। अभी तक भारतीय संघ में सम्मिलित न होकर वहां के राजा ने वहां की प्रजा का जो निरादर किया है उसस प्रजा में घोर असन्तोष है। हैदराबाद के बडे बडे सार्वजनिक कार्यकर्ता और आर्य समाज के अधिकारियों के साथ दुर्व्यवहार, उनकी गिरफ्तारियां ओ३म् के धार्मिक ध्वज और भारतीय संघ के राष्ट्रीय ध्वज के अपमान की कई घटनाओं स आर्य जनता में क्षोभ उत्प[illegible] रहा है। इन सारे कारनामों के पीछे पाकिस्तानी मनोवृत्ति काम कर रही है। हैदराबाद की प्रजा का आज एक मात्र यही निश्चय है कि वह इस प्रकार के कारनामों को कभी सहन नहीं करेगी और जैस भी होगा अपने अधिकारों की रक्षा करगी। हम वहां के साहसी कमठ नताओं के निर्णय की प्रशंसा करत हैं। सारा देश उनके साथ है।

युक्त प्रान्त कीं भाषा और सरोजनी नायडू का भ्रम

युक्त प्रान्त की गवर्नर श्रीमती सरोजनी नायडून एक प्रस कान्फ्रेन्स में कहा कि युक्त प्रान्त का भाषा उर्दू है और वहां की जनता और विद्वानों को उसे अपनाना चाहिए। श्रीमती नायडू का यह विचार सर्वथा निराधार भ्रम पूर्ण और राष्ट्रीय भावनाओं के विपरित है। युक्त प्रान्तीय पत्रकार ने युक्त प्रान्तीय गवर्नर क इस कार्य को अवैधानिक बताया है और कहा है कि भाषा का प्रश्न मन्त्रि मण्डल द्वारा निर्णीत होना है और मन्त्रि मण्डल विधान परिषद के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा है। इस प्रकार के वक्तव्य से श्रीमती सरोजनी नायडू युक्त प्रान्त में लोकप्रिय नहीं रहीं और आज वे वहां सर्वसाधारण की समालोचना का विषय बन चुकी हैं। जनता के हृदय को न परखने का यही परिणाम होता है।

इन्दौर में नागरिक अधिकार लौटे,
प्रधान मन्त्री विधान परिषद में

इन्दौर सरकार न एक विज्ञप्ति प्रकाशित कर इस बात की घोषणा की है कि लाऊडस्पीकर लगाने क सम्बन्ध में जो पाबन्दी थी वह उठाली गई है और जिन ३५ अखबारों पर प्रवेश प्रतिबन्ध था उसे वापिस ले लिया गया है। इन्दौर के भारतीय संघ में सम्मिलित होने के बाद अब विधान- परिषद के लिए इन्दौर सरकारने प्रधानमन्त्री श्री मेहता को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है।

दिनांक १४ सितंबर ४७
मूल्य ५) वार्षिक

सम्पादक— स्नातक उमेशचन्द्र

—●●—दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र

शरणार्थी हिंदू सिक्खों के साथ पाकिस्तान पुलिस का दुर्व्यहार

पाकिस्तान में क्या हो रहा है इसकी लम्बी कहानी कहन की सामर्थ्य किस में है। पेशावर से आने वाले शरणार्थियों ने वहां की पुलिस और अधिकारियों के काले कारनामे सुनाते हुए बताया कि हिन्दू सिक्ख यात्रियों को जो हवाई जहाज से भारत आते हैं कोई कीमती कपडे जवाहरात आदि नहीं लाने देती।

जब तक पाकिस्तान पुलिस शरणार्थियों की तलाशी लेकर उनकी कीमती वस्तुएँ अपने अधिकार में नहीं कर लेती तब तक जहाज उड नहीं सकते।

जो फौजी अफसर पाकिस्तान से भारत के लिये बदले गये हैं उनसे उनकी बन्दूकें छीन ली जाती हैं बदले में पुलिस कान्स्टेबल एक रसीद दे देता है। जिन गैर फौजी लोगो के पास लाइसैन्स शुदा हथियार हैं उनसे भी हवाई जहाज में बैठने से पूर्व हथियार छीन लिए जाते हैं।

यदि कोई शरणार्थी एक जोड़े से अधिक जूते साथ ले जा रहा हो तो जो दूसरी जोडी जूते पहने होता है छीन लिए जाते हैं। उसको कहा जाता है कि उसे कोई अधिकार नहीं कि वह ज्यादा चीजें ले जा सके। यही बात तौलियों चादरों आदि कपडों के बारे में है। हिन्दू सिक्खों को कोई वस्त्र अपने साथ नहीं ले जाने दिया जाता पाकिस्तानी अधिकारियों का कहना है कि न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जो सामान है वह पाकिस्तान सरकार का है।

भारतीय वायुयान चालकों की शिकायत है कि पाकिस्तान की पुलिस यात्रियों को बहुत तग कर रही है। वायुयानों में गोलियों के निशाने लगाने की भी कई वारदातें हुई हैं। एक ओर हिन्दू-सिक्ख शरणार्थियों की यह दुर्दशा है तो दूसरी ओर भारत सरकार मुस्लिमों को महमानों की भांति सब सामान सहित ठीक घर तक सुरक्षित रूप से घर पहुचाने में राष्ट्र की शक्ति व्यय कर रही है।

आर्यावर्त पंजाब सहायता निधि–

कर्तव्य की पुकार:–

पश्चिम पंजाब का हत्याकान्ड आपके कर्तव्य को चुनौती देरहा है। आपका कर्तव्य क्या है यह आपसे छिपा नहीं है।

पाकिस्तान में भारत व हिन्दुत्व के नामपर बलिदान

असंख्य अमर हुतात्माओं के प्रति

जिनका भारत और हिन्दुत्व में अटूट विश्वास था

अगणित विद्वानों, विद्यार्थियों के प्रति

जिन्होंने भारत में निष्ठा रक्खी थी–

भारत के व्यापार को संसार में फैलानेवाले व्यापारियों के प्रति–

जिनका आज सर्वस्व नष्ट होचुका है।

आर्य महिलाओं के प्रति–

जिन्होंने हिन्दुत्व की रक्षा में अपना बलिदान किया

ऐसेही अनेको उन अगणित अज्ञात हिन्दू भाइयोंके प्रति–

हमारा आज एकही कर्तव्य है कि हम उनके बलिदान को सार्थक बनावें और जो मर चुके हैं उनके आश्रितों और जो निस्सहाय हैं उनके जीवन की रक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लें इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिए आर्यावर्त पंजाब सहायता निधि में धन देकर इस कार्य को पूरा कीजिए। आज प्रत्येक आर्य हिन्दू का एकही कर्तव्य है।

–उमेशचंद्र.

[पृष्ठ ७ का शेषांश]

कला

अमृतसर की एक घटना का उल्लेख होचुका है और सुनिये। पूर्वी पजाब का सरकार ने मुस्लिमों को इधर से ले जाने और उधर से हिन्दू सिख शरणार्थियों को लाने की जो व्यवस्था कर रक्खी है वह सर्वथा असन्तोषजनक है।

मैंने देखा कि ८ सैनिक लारियाँ मुस्लिम शरणार्थियों को लाहौर पहुंचा कर सकुशल वापिस लौट आईं, परन्तु वे अपने साथ कोई शरणार्थी नहीं लाईं। जब एक ड्राइवर से पूछा गया तो उसने बताया कि लाहौर में अब कोई गैर मुसलमान शरणार्थी नहीं रह गया है। कितना कमजोर हृदय उन सरकारी कर्मचारियों में जो शरणार्थियों की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी है। क्या उचित एव सतुलन नीति के रहते कोई यह कह सकता था कि लाहौर में अब कोई शरणार्थी नहीं हैं जब कि आज भी लाहौर में हजारों शरणार्थी पडे है।

सरकार पूर्वी पंजाब की हो या केन्द्र की, जनता का विश्वास अब उठ रहा है। और वह इन सरकारों को रक्षा करने में असमर्थ पाकर अयोग्य कह रही है।

आर्यावर्त

सृष्टि १९७२९४९४७] दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र [दयानन्द जन्माब्द १२३

वर्ष २] इन्दौर, रविवार दिनाङ्क १४ सितम्बर १९४७, भाद्रो बदी ३० वि स २००४ [संख्या २४

देशका वर्तमान और भविष्य

भयंकरता दानवता का गुण है पर आज की दानवता अपनी भयकरता की चरम सीमा पार कर चुकी है। प्राकृतिक आधार पर आर्य गुण और दस्युगुण सदैव टकराते रहे हैं परन्तु बीसवीं शताब्दी में एक प्रयोगके द्वारा आर्य और दस्यु गुणों को मिलाने का प्रयत्न किया गया वह सफल नहीं हो सकता था और न हुआ। आज पश्चिमी पंजाब में जो हुआ वह इसी नीति के फलस्वरूप हुआ और हो रहा है। अंग्रेज शासकों की नीयत कितनी साफ थी और है इसका लेखा जोखा देने का आज समय नहीं है पर आंखों के सामने जो हुआ और है उसे देखते हुये हमें कहना पडरहा है शतरंज की बाजी अंग्रेज जीत गये हें। हमारे नेताओं ने राष्ट्र की आकांक्षाओं की अवहेलना करके जिससे मृग तृष्णा बुझाने का प्रयत्न किया वह मृगमरी चिका सिद्ध हुई हे। आज देश विक्षुब्ध है। सीमा कमीशन के निर्माण और अंग्रेज वायसराय की नियुक्ति के चाला की भरे कारनामों से देश को धोखा दे कर अंग्रेज अपनी राजनीतिक सफलता पर अट्टाहास कर रहा है। पश्चिमी पंजाब में जो कुछ हुआ वह योजनानुसार ही हुआ है इस योजना के पीछे अंग्रेजोंकी शह और हिन्दुओंकेप्रति कटुता की भावना ही विशेष कर है। पश्चिमी पंजाबके हिन्दू और सिक्खों केसाथ जो हुआ उसे भुलाया नहीं जा सकता पश्चिमी पंजाब और पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के प्रति पाकिस्तान की दानवी सरकार का कोई उत्तर दायित्व मानना अपने को धोखे में रखना है। वहा के अल्प सख्यकों पर आई आफत का उत्तर दायित्व भारतीय नेताओं के मिथ्या आदर्शवाद पर ही है। क्यों नहीं देश विभाजन का फैसला होते ही अल्पसख्यकों का दो टूक फैसला कर लिया गया। इस गल्ती का ही परिणाम आज देश भुगत रहा है। पाकिस्तान की सरकार आदर्श वादी से अधिक यथार्थ वादी है उसने पाकिस्तानी मुसलमानों की भावनाओं के अनुसार काम किया है। पश्चिमी पजाब के प्रधान मन्त्री ममदोत के नवाब ने पाकिस्तान की स्थापना के दूसरे ही दिन पजाव में हथियार रखने की स्वतन्त्रता घोषित कर इस कांड के जन्म को प्रोत्साहन दिया था। परंतु भारत की वर्तमान सरकार हिंसा शक्ति में विश्वास रखते हुये भी (फौज और पुलिस की आवश्यकता के रूप में) सर्व साधारण को आत्म रक्षा के साधनों से वञ्चित रख रही है। पश्चिमी पजाब के रौरव काड को देख कर देश के बहुमत की विचार धारा की अब उपेक्षा नहीं की जासकती। देश आज पाकिस्तान में विश्वास रखने वालों को एक मिनट भी देश में नहीं रहने देना चाहता, जीवित नहीं छोडना चाहता आज हिन्दू जनता कांटे को कांटे से निकालना ही अपना लक्ष्य बनाचुकी है। जबतक एक भी कांटा कहीं भी भारत मां के शरीर में चुभता रहेगा हिन्दू अब चैन से तबतक नहीं बैठ सकते।

शरणार्थियों की समस्या का जो रूप आज हमारे सामने है उससे आख नहीं मीची जा सकती। मुस्लिम शरणार्थियों की सुरक्षित व्यवस्था और हिन्दू सिक्ख शरणार्थियों के निस्सहाय करुण क्रन्दन से आज की सरकार की कमजोरियां जाहिर हो रही हैं। भारत की सरकार भारत में विश्वास रखने वाले शरणार्थियों के प्रति जिम्मेवार हैं दूसरों की सुरक्षा की जिम्मेवारी लेना देश के साथ अन्याय है।

लाहौर, लायलपुर, मिंट गुमरी, शेखपुरा आदि पश्चिमी पजाब के शस्य श्यामल लहलहाते खेतों के स्वामी पंचनद के अपार वैभव के निर्माता और स्वामी आज दर दर के भिखारी बना दिये गये हैं। आज उनके पास से खाने को अन्न पहिनने के वस्त्र रहने के मकान बात करने को स्वजन सब कुछ छिन चुका है। भारतमां में विश्वास करने वालों का एक बडा काफला आज निस्सहाय बेबस आततायियों से आक्रान्त हो हमें कर्तव्य का पालन करने के लिए पुकार रहा है।

राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति बडा महत्वपूर्ण स्थान रखती है परन्तु जब देश स्वय नेताओ की नीति में विश्वास न कर रहा हो और उनसे मांग कर रहा हो कि पहिले अपना घर सम्हालो, देशद्रोहियों, देश विनाशी पाकिस्तानियो को देश से निकाल दो जब देश की आवाज की अव-

हेलना कर नेता अधिक दिन जीवित नहीं रह सकते। यदि भारत जीवित रहना चाहता है प्राप्त स्वाधीनता को चिरायुष्य बनाना चाहता है तो इस पाकिस्तानी विष को जो सदैव दानव बनकर रहा है सदैव के लिए नष्ट कर देना होगा।

वर्तमान की शरणार्थी व्यवस्था और राष्ट्रीय जन भावना के सम्बन्ध में सरकार को अविलम्ब परिवर्तन करना चाहिए।

सुहरा वर्दी जैसे आस्तीन के सांप को अब दूध पिलाना बन्द होना चाहिए और इस प्रकार विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देश की भावनाओं का आदर कर वर्तमान समस्या का हल किया जाना चाहिए।

पाकिस्तानी दानव अपनी बर्बरता के साथ भारत पर हमला कर चुका और भविष्य में शीघ्र ही पूरी तैयारी के साथ जबर्दस्त आक्रमण की तैयारी में है। भारत में पांचवा कालम इस युद्ध के लिए भारत में मौजूद रहना चाहता है इसलिए सरकार का सच्ची राष्ट्रीय सरकार का यही कर्तव्य है कि स्वाधीनता की ओर अग्रसर भारत की सुरक्षा के लिए पांचवे कालम को चुन चुन कर पाकिस्तान पहुंचा दे अथवा नजर बन्द करले। देश की आज यही मांग है। इस मांग के पूरा होने पर ही सरकार का भविष्य निर्भर है।

विचार कण....

इन्दौर में वेद सप्ताह

इन्दौर की प्रसिद्ध आर्य समाज मल्हार गंज में आर्य समाज के नियमानुसार श्रावणी उत्सव तथा वेद प्रचार सप्ताह बड़े समारोह पूर्वक ३१ अगस्त से ७ सितम्बर तक मनाया गया। आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी नारायणानन्दजी महाराज व प्रसिद्ध विद्वान श्री प. विद्यानन्दजी विदेह, के प्रवचन सप्ताह भर होते रहे।

इस वर्ष वेद सप्ताह में एक नवीन आयोजन करने का प्रयत्न समाज के अधिकारियों ने किया था। नागपुर के वेद के विद्वान श्री प. रामचन्द्र जी ने इस सप्ताह के लिए अपनी सेवायें समाज को दी थी। वेद सप्ताह में प्रति दिन एक घण्टे तक आप यजुर्वेद का सस्वर, घन, जटा, पद क्रम सहित पाठ किया करते थे। आपको सम्पूर्ण यजुर्वेद उपर्युक्त पद्धति से स्मरण है। आर्य समाज में इस ओर जो कमी है उसकी आपने पूर्ति की है। आपकी हार्दिक अभिलाषा है कि आर्य समाज वेद के इस स्वरूप को जीवीत रखने में पूर्ण योग दे और यह तभी सम्भव है जब वेद के लिए लोग अपना समय निकाल सकें।

कृष्णाष्टमी को वेद–सप्ताह का अंतिम दिवस था। आर्य समाज में बृहद् यज्ञ और वेदोपदेश के बाद कृष्ण जन्म के सम्बन्ध में उपस्थित विद्वानों ने प्रकाश डाला और उन्हें संसार का महान योगी और राजनीतिज्ञ बताया।

सप्ताह पर्यन्त विशेष यज्ञ की व्यवस्था का कार्य श्री पं. रामप्रतापजी तितिक्षु द्वारा सम्पन्न होता रहा। जनता की अच्छी उपस्थिति सप्ताह पर्यंत रही और जनता ने वेदोपदेश से पर्याप्त लाभ प्राप्त किया। सप्ताह की सफलता के लिए समाज के अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

—बीकानेर व कासगा आर्य समाजों ने १७-८-४७ को राजार्य सभा के आदेशानुसार हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने तथा गोवध को कानूनन बन्द कर देने के प्रस्ताव पास किये और उच्चाधिकारियों के पास भेज दिये हैं।

सामयिक विचार धारा—

—: जहां से जागे वहीं से सबेरा :—

[लेखक:— श्री बिहारीलालजी शास्त्री काव्यतीर्थ]



— लेखक —

मिस्टर जिन्ना का अभीष्ट पाकिस्तान बन गया और मुस्लिम लीग की विजय हुई यद्यपि कांग्रेसी नेता इस नीति युद्ध मे पूर्णतया पगस्त हुए हैं, तथापि वे सम्मान हानि वश स्वीकार कभी नहीं करेंगे। आज के नेता हिन्दुओं को संतोष दिलाते हैं कि "आखिर करते क्या? जब मुसलमान हमारे साथ नहीं रहना चाहते तो न रहें। मगर हमने भयसे पाकिस्तान स्वीकार नहीं किया है।" भोला हिन्दू, श्रद्धा जड हिन्दू इससे सतुष्ट होकर बैठ रहता है। मगर विचारशील क मनमें प्रश्न उठता है कि हुजूर! यह बात तो सर सैयद अहमद खाँ के जमानेसही प्रकट है कि मुसलमान हिन्दुओं के साथ नहीं रहना चाहते। फिर क्यों न आपने अबसे २ वर्ष पहले ही यह झगडा निपटाया? यदि २ वर्ष पूर्व मि जिन्ना की जिद पूरी कर दी गई होती तो नोआखाली, सरहद और पंजाब के हिन्दू क्यों लुटते, मारे जाते, और बेघरबार होते? सैकडों हिंदू स्त्रियों के सतीत्व की बरबादी का जिम्मेदार कौन है? हिन्दुओंका जो भयानक विनाश इन झगडों में हुआ है उसका प्रतिकार क्या है?

शोक है कि हिन्दू सभा को राजनैतिक क्षेत्र से बेदखल कर दिया गया है, और आर्य समाजने के रक्खा है राजनैतिक सन्यास। अब कौन है जो भारत के बेताज के बादशाहों से कुछ पूछ सके। वायसराय की घोषणा से २ दिन पहलेही गांधीजी के बयानों पर नवभारत (कांग्रेसी पत्र) ने नोट लिखा था कि अब बापूजी भयंकर तूफान लानेवाले हैं। पाकिस्तान नहीं बन सकेगा। मगर हमें सदाही यह विश्वास था कि कांग्रेस नेताओं के हाथ में हिन्दू हित कभी सुरक्षित नहीं रहा है, न आगे रह सकता है। कांग्रेस नेता पुकार पुकार कर कहते हैं कि हम "हिन्दू नहीं हैं।" धर्मसे हमारा संबंध नहीं। हम तो रोटी का सवाल हल करना चाहते हैं, और नयी संस्कृति का सृजन। मगर भोला हिन्दू आंख मीचकर फिरभी बापूजी को आत्म समर्पण किये हुए है। त्याग बलिदान की भावुकता भरी कथाओंपर पिघलकर हिन्दू स्वतंन्त्रता से सोचता ही नहीं। जिन्ना साहबने कब जेल काटी? मुस्लिम लीगी कब फाँसीके तख्तों पर झूले? हाँ हजारों हिन्दुओं को वधकर सैकडों हिन्दू नारियों की दुर्दशा कर, करोडों रुपयों का माल लूट और जलाकर मुस्लिम लीग सफल हुई है। जो प्रत्यक्ष है, वास्तविक है, उस झुठलाना, ध्रुव सत्य से आँखे बचाना है। राजनीति नहीं है बचकता है। आज लीग को सफलता मिली है, आतंकवाद के कारण। काँग्रेसी झुके हैं उपद्रवों से भयभीत होकर।

भोले हिन्दू! सोच जहाँ से जागे वहीं से सबेरा समझ। पाकिस्तान बन गया। अब पाकिस्तानी आफतें जो आरही हैं उनसे बचाव की चिन्ताकर। अन्यथा बरबाद होनेसे न बच सकेगा।

हिन्दू जाति के विनाश के साथ २ मानवता का भी ससार से लोपही हो हो जावेगा क्योंकि मानवता का जो निर्मल पाठ वेदोंपनिषद् आदि हिन्दू शास्त्रों में है अन्यत्र कहीं नहीं है?

हिन्दुत्व की रक्षा के लिये सबसे प्रथम यह आवश्यक है कि—

(१) सम्पूर्ण हिन्दुओं का राजनैतिक सिद्धान्त समान हो। गांवों में दलित जातियों पर के अत्याचारों को रोककर सवर्ण कहे जानेवाले हिन्दुओं के अनुचित प्रभाव को रोका जाय यदि शीघ्रही इस वृत्तिपर आचरण नहीं हुआ तो हिन्दुओं की अछूत कही जाने वाली जातियां, इस्लाम स्वीकार कर लेंगी मुसलमान लोग इन बिरादरियों में प्रचार कर रहे हैं और अब अधिक वेग स करेंगे।

(२) हिन्दुओं में स्वधर्म के प्रति प्रगाढ निष्ठा हो यह बिना धर्म शिक्षा के नहीं होगा अतः सरल और प्रांतीय भाषाओं में हिन्दू धर्म का महत्व दर्शाने वाली पुस्तकों का प्रचार हो प्रत्येक हिन्दू बालक को धर्म शिक्षा दना अनिवार्य हो कालिजों के क्षेत्रों में हिन्दू धर्म के महत्व पर तुलनात्मक व्याख्यान, जिनमें कम्यूनिज्म का भी खंडन हो प्रबन्ध हो।

(३) शुद्धि का जोर शोर से सगठित रूप में कार्य हो, जो नव मुस्लिम भाई शुद्ध होना चाहते हैं उन्हें शीघ्र शुद्ध कर लेना और बिरादरी में मिलवा देना।

(४) सरकारी भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी अनिवार्य कर दी जाय।

गोवध बंदी और हिन्दी अदालती भाषा और देवनागरी लिपि हो यह हर हिन्दू की मांग है हिंदुस्तानी को हिन्दू कतई नापसद कर रहे हैं। विद्यार्थी तो हिन्दुस्तानी पुस्तकों के बहिष्कार तक की सोच रहे हैं।

हिन्दुओं को इस समय सुयोग्य नेतृत्व की आवश्यकता अनुभव हो रही है। हिन्दू जनता चाहती है कि धर्म संघ, हिन्दूसभा, आदि आर्यसमाज से मिलकर हिन्दू जनता का पथ प्रदर्शन करे।

(५) प्रत्येक १८ से ऊपर आयु के विद्यार्थी के लिये सैनिक शिक्षा अनिवार्य और लड़कियों को १४ वर्ष की आयु से ही ताकि विपत्ति काल में अपनी और अपने देश की रक्षा कर सकें।

(६) सिक्खों की स्वतन्त्रता हो। पाकिस्तानी सरकार ने मुसलमानों को सशस्त्र करना प्रारंभ कर दिया। वहां फौज की नई भर्ती भी आरम्भ होगई है। इधर भारतीय सरकार हिन्दुओं के चाकू तक रखने मे हिंसा की आशंका कर रही है।

(७) देशद्रोहियों पर कड़ी दृष्टि रखी जाय।

(८) पाकिस्तान में बसने वाले हिन्दुओं की धर्म रक्षा के उपाय विचारे जाय और उन पर आचरण किया जाय।

इस समय हिन्दुओं के टुकड़े करने पर सोशलिस्ट कम्यूनिष्ट और गांधीवादी तुले हुए हैं। इनके जाल से हिन्दुओं को प्रचार द्वारा ही बचाया जा सकता है। यदि धर्मसंघ और हिन्दुमहासभा से आर्यसमाज मिल कर नास्तिकवाद के विरुद्ध मोरचा लगायें तो हिन्दू जाति का कल्याण हो सकता है। हिन्दू जाति इस समय नेतृत्व हीन भटक रही है।



सामयिक आलोचना—

कांग्रेस की नीति पर विहंगम दृष्टि

[ले०— वैद्यराज प० भागीरथजी शर्मा पुरोहित]

विक्षुब्ध भारत

कांग्रेस की नीति से देश के कोने-कोने में क्षोभ उत्पन्न हो रहा है यदि कांग्रेस ने मुस्लिम परस्तनीति न बदली तो भयंकर क्रांति होगी और आगामी चुनावमें कांग्रेस का अस्तित्व नष्ट हो जायगा। कांग्रेस के नेताओं को देश की मानसिक अवस्था पहिचाननी चाहिये। पुरानी संकीर्ण एवं असफल नीति छोड़ कर बहुमत का निरादर न करना चाहिये। देश क्षुब्ध है। उसका अंग भंग हुआ। अब उसकी संस्कृति को भी कॉंग्रेस की नीति से भारी धक्का लग रहा है। आर्य [हिन्दू] संस्कृति, सभ्यता, एवं भाषा से शून्य कोई भी तन्त्र अब यदि भारत वासियों को त्रस्त करेगा तो उसकी भयंकर प्रतिक्रिया के रूप में क्रान्ति की ज्वालायें अपना विकराल रूप धारण कर लेंगी।

सांस्कृतिक स्वराज्य और नेता

कांग्रेस के कर्णधारोंने देश के भौतिक स्वातन्त्र्य के दर्शन कराने का प्रयत्न किया परन्तु वास्तविक स्वतन्त्रता, सच्चा सुख हमारी संस्कृति की रक्षा एवं प्रचार में है। ऐसा स्वराज्य जो हमारी संस्कृति एवं धर्म का घातक हो वहतो महान् नरकतुल्य होगा इन नेताओं का कार्य समाप्त हो गया। स्वतन्त्रता के द्वार पर इन्होंने देश को खड़ा कर दिया परन्तु भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं भाषानुरूप शासन में ये नेतागण अत्यन्त अयोग्य हैं। इनकी बुद्धि और हृदय भारतीय संस्कृति, सभ्यता, भाषा व धर्म को ग्रहण करने में असमर्थ हैं ये लेनिन, मार्क्स, वाशिंगटन, नेपोलियन, महम्मद, ईसा के अधिक समीप हैं और कपिल कणाद, पातञ्जलादि तत्वदर्शी ऋषि-महर्षियों से कोसों दूर हैं।

कांग्रेस के इन नेताओं की कुशलता अंग्रेजों से लड़ने और उन को देश से निकाल में पर्याप्त की। उस लड़ाईमें वे विजयी हुए हैं। परन्तु एक दूसरा जो युद्ध प्रारम्भ हुआ है उस में इन को पग-पग पर पराजय ही हुई है और भविष्य में जो संग्राम होगा जिसका आधार पाकिस्तान स्थापित किया गया है उस में भी यदि इनका ही नेतृत्व रहा तो अवशिष्ट भारत भी नष्ट हो जायगा। बहुत उच्च ज्ञान मानव मात्र में एकता की भावना अवश्य उत्पन्न करता है। परन्तु सब मनुष्य बहुत उच्च ज्ञानी तो होही नही सकते और उच्च ज्ञान द्वारा समत्व भाव को प्राप्त होने वाले विरले ही होते हैं। इसके विपरीत धर्म के आश्रय से एक शुद्ध एवं अज्ञानी पुरुष से लेकर उच्च मनुष्य में भी एक ही समय में अनेक देशों में परस्पर प्रेम व एकता होती देखी गई है। मनुष्य को मनुष्य से आबद्ध करनेमे धर्म ही सर्व सुलभ, सफल, स्वार्थ शून्य कारण बन जाता है इसलिये सम्प्रति परिस्थितिवश हमे भी अपने धर्म के आधार पर नीति युक्त कार्य करना होगा।

भारतीय तत्व की रक्षा— और कांग्रेस

बहुत से यह युक्ति देते हैं कि कांग्रेस मुस्लिम लीग सदृश साम्प्रदायिक नहीं हो सकती और लीग के सदृश कांग्रेस साम्प्रदायिक हो जाना कांग्रेस के आदर्शो का महा-पतन होगा इत्यादि युक्ति देकर, भारत के भविष्य को कलुषित कर रहे हैं। क्या कांग्रेस अपने आदर्शों की रक्षा के लिये भारत को विनष्ट व खंड खंड होने देना अंगीकार कर सकती थी? भारतकी रक्षार्थ सैकड़ों कांग्रेस नष्ट हो जावें तो कोई चिंता

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पश्चिमी पंजाब से शरणार्थियों को लाने की अपर्याप्त व्यवस्था, सरकार की लापरवाही

[हमारे विशेष सम्वाददाता का प्रत्यक्षदर्शी वर्णन]

पश्चिमी पजाब से हिन्दू-सिख शरणार्थियों को हटाये जाने की याजना पूर्णतः कार्यान्वित नहीं हो रही है। शरणार्थियों की समस्या की तुलना में सरकार की यातायात व्यवस्था अपर्याप्त है। अपने पजाब के दौरे के बाद मेरा यह मत बना है कि शरणार्थियों की समस्या पर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना दिया जाना चाहिये।

पश्चिमी पंजाब का रेलवे यातायात भंग हुआ पड़ा है, अब शरणार्थियों को सड़कों और वायुयानों द्वारा ही निकाला जा सकता है यह मान लेने पर भी सरकारी वायुयान व्यवस्था द्वारा शरणार्थियों को हटाने का कार्य सीमित रूपसे ही किया गया है। अतः शरणार्थियों के लिये सड़क का मार्ग ही शेष रह गया है। परन्तु सड़कों की यात्रा की सुरक्षा और यात्रा के साधनों की व्यवस्था अब भी नहीं हुई। केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारों के साधन अब भी पूरी तौर पर व्यवहार में नहीं आ रहे हैं।

अमृतसर में पहुंचने पर मुझे बताया गया कि अमृतसर से शरणार्थियों को लाने के लिए ३० मोटर नियत की गई थीं पर मैंने देखा कि ३० के स्थान पर १९ ट्रक ही काम कर रहे थे

पर्दे के दूसरी ओर

पश्चिमी पंजाब की सरकार अमृतसर से मुसलमानों को हटाने के लिये पूर्वी पंजाब सरकार की सहायता पर ही विश्वास नहीं किये है। उनकी सरकार को जनता के व्यक्तिगत प्रयासों से भी सहायता मिल रही है। मुस्लिम शरणार्थियों को लाने के लिए लाहौर और अमृतसर के बीच जो व्यक्तिगत लारियां और बसें चालू हैं उनपर पाकिस्तान सरकार ने अपने सैनिक दस्ते तैनात कर रक्खे हैं और इस प्रकार विश्वस्त संरक्षणों में पूर्वी पंजाब से मुस्लिम निकाले जाते हैं परन्तु पश्चिमी पंजाब से केवल कुछ सौ व्यक्ति ही इन सरकारी साधनों का उपयोग कर पाते हैं।

अरक्षित व अव्यवस्थित प्रबंध

अमृतसर में एक ऐसी विचित्र घटना हुई जिससे भारत सरकार द्वारा शरणार्थियों को हटाये जाने की समस्या की अवहेलना स्पष्ट हो गई। एक दिन १६७ लारियों का काफला अमृतसर से लाहौर जाने के लिये तय्यार किया गया। मोटरों के इस काफिले में दिल्ली तथा अन्य स्थानों से आई मोटरें; बसें और ट्रक थे। इस काफिले के साथ सेना तैनात की गई थी। अगले दिन नियत समय पर सेना काफिल साथ जाने के लिये तय्यार हो कर पहुँच गई, परन्तु मोटर ड्राइवरों ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया, उन्हें बहुत कुछ समझाया गया परन्तु ड्राइवर न माने और मोटरें रुकी रहीं। एक ड्राइवर से जब मैंने भेंट की तो उसने मुझे बताया कि इस बड़े काफिले के लिये जो सैनिक तैनात किये गये हैं हमारे विचार से वे अपर्याप्त हैं और उनके पास रक्षा के लिये पर्याप्त साधन नहीं है। इस वाद विवाद में शरणार्थियों की समस्या खटाई में पड़ी रही और १६७ में से एक भी मोटर आगे नहीं बढ़ी। स्यालकोट के घातक हमले का जब से समाचार मिला है तब से पश्चिमी पंजाब में जाना प्रत्येक मोटर वाला खतरनाक समझता है। सरकार द्वारा उचित संरक्षण और नियन्त्रण न होने से शरणार्थियों की समस्या खटाई में है।

सैनिक यातायात व्यवस्था क्यों नहीं?

शरणार्थियों को पश्चिमी पंजाब से निकालने के लिये जन साधारण यही प्रश्न करता मिलता है कि इस कार्य के लिए सैनिक मोटर यातायात की व्यवस्था क्यों नहीं की जाती। पूर्वी पंजाब में इस समय जो सैनिक मोटरें हैं वे पर्याप्त नहीं हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि भारत सरकार का रक्षा विभाग तथा संयुक्त सुरक्षा-परिषद् द्वारा शरणार्थियों को हटाने की योजना कार्यान्वित करने के लिये अन्य क्षेत्रों से पूर्वी पंजाब को ट्रक और बसों के भेजने की व्यवस्था क्यों नहीं की जाती? पूर्वी पंजाब से मुस्लिमों को सुरक्षित ट्रकों में ले जाया जा रहा है परन्तु पश्चिमी पंजाब से आनेवाले शरणार्थियों की रक्षा उसी रूप में क्यों नहीं की जाती पश्चिमी पंजाब को मुस्लिम शरणार्थी ले जाने वाली प्रत्येक लारी पर ४, ४ पूर्णतः सशस्त्र बलोची सैनिक प्रत्यक्ष देखे जा सकते है। पर इधर सैनिक संरक्षण अपर्याप्त है पूर्वी तथा पश्चिमी पंजाब से आने जाने वाले शरणार्थियों के सम्बन्धमें यह जो अन्तर है वह आंखों से छिप नहीं सका। मैंने देखा पूर्वी पंजाब से जाने वाले शरणार्थी ट्रकों में अपने घरों का सब सामान लाद कर ले गये मैं ने उन के घर का सामान साइकिलें, सन्दूक, बिस्तरे, बर्तन, चारपाईयां और मिट्टी के बर्तन तक भी ट्रकों में लदकर जाते देखा। परन्तु पश्चिमी पंजाब से आने वाले शरणार्थियों को खाली हाथों आते ही देखा गया। बहुत से तो अपने साधारण कपड़े जो सोने के समय पहने जाते हैं पहिने देखेगये। अर्थात् उन्हें सोते से उठकर ही भागना पड़ा होगा।

(शेष पृष्ठ २ पर)

[पृष्ठ ६ का शेषांश]

नहीं। भारत की एकता भारतीयता की रक्षा, वैदिक सस्कृति एवं सभ्यता, हमारी भाषा, सस्कृति एवं आर्यभाषा (हिन्दी) की रक्षा जो नहीं कर सकती उस संस्था को नष्ट हो जाना ही अच्छा है और न उसे भारत पर शासन करने का अधिकार है। वह तो विदेशियों के तुल्य ही है। आज आवाज आ रही है कि तुम अपनी सस्कृति सभ्यता, धर्म व भाषा की रक्षार्थ हिंदुत्व के नाते रक्षा करने का प्रयत्न करोगे तो देश-द्रोही माने जाओगे और भयकर दंड मिलेगा परन्तु मैं पूछता हूं यह देशद्रोह किसका है! स्वय देशद्रोह कर रहे हो और आ देश प्रेम कर रहे हैं उनको देशद्रोही कहा जा रहा है!!! जब तुम हमारे देश की रक्षा न कर सके, जब तुम हमारी भाषाकी रक्षा न कर सके, जब तुम हमारे प्राचीन इतिहासको हमारेसे पृथक् कर रहे हो जब तुम हमारे गोधन की रक्षा नहीं कर सकते तो तुम ही सबसे बढ कर देशद्रोही हो। क्यों न तुम पर देशद्रोह का अभियोग चलाया जावे। इस प्रकार की असमर्थ कांग्रेस के नष्ट होने से ही भारत का कल्याण है जिन्हा ने देश में रक्त की होली खेली, देश की संपदा जलादी भारत को खण्ड-खण्ड कर दिया उनको तो तुम अभीतक देशद्रोही न कह सके?

भविष्य की नीति

यदि कोई देश रंग भेद के कारण हमारे देश वासियों को अपने देश में कष्ट देगा तो हमें भी उसके उत्तर में उस देश वासियों के प्रति वैसाही उनसे व्यवहार करना पडेगा। यदि कोई देश किसी हिन्दू को हिन्दू होने के कारण कष्ट देगा तो हमे भी अपने देश में पीडित करने वाले धर्म के अनुयायियों के प्रति वही व्यवहार निश्चय से करना होगा अन्यथा हम अपने देश वासियों की मान मर्यादा की रक्षा में असमर्थ होने के कारण शासन के अयोग्य प्रमाणित हो जायेंगे।

नव-निर्माण.

भारत का जब हिन्दू और मुसलमान इन दो रूप में विभाजन हो गया तो कोई कारण नहीं कि अब भारत में आर्य (हिन्दू) धर्म के आधारपर आर्य (हिन्दू) संस्कृति के आधार पर और आर्य भाषा (हिन्दी) के आधार पर सामाजिक आर्थिक, राज नैतिक एवं शिक्षण संबधी व्यवस्था को न स्वीकार किया जावे। नाम मात्र के अल्प संख्यकों के लिये विशाल बहुमत की सभ्यता संस्कृति व भाषा का तिरस्कार युक्ति संगत नहीं।

सांस्कृतिक उत्तराधिकार

भारतवर्ष आर्यों (हिन्दुओं) का ही देश है। १ अरब ९७ करोड २९ लाख ४७ वर्षों से आर्य इस भूमिपर निवास कर रहे हैं। यहीं ये उत्पन्न हुए यहींसे इन्होंने अखिल भूमण्डल पर अपनी सभ्यता का प्रचार किया। इसी देश में रहते हुए समस्त देशों को ज्ञान विज्ञान सिखाया। यहीं पर रहकर इन्होंने आज से '५००० वर्ष से पूर्व तक भूमण्डल पर चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित किया। इस भारत भूमि को सुन्दर शस्य स्यामला बनाया। भारत का कण-कण आर्योंके पवित्र इति हास का चित्र है। भारत के गौरव को उन्नत करने के लिये इन्होंने अपना सर्वस्व इसपर अर्पित किया है। सृष्टि के प्रारम्भ से आजतक आर्यों (हिन्दुओं) का एक मात्र स्थान यही पवित्र भारत भूमि है। जब यहां कोई न रहता था उस समय आर्योंने इस देश को वास योग्य बनाया। जंगल साफ किये, पहाड खादे, सुरसरिता पवित्र सलिला जननी जाह्नवी-गंगाकी पवित्र धारा को इसके वक्षस्थल पर अमृत सिंचन करने के लिये प्रवाहित करके देश को समृद्ध शाली किया।

परन्तु हतभाग्य! आज इसके ही पुत्रों के द्वारा इसकी सुखसमृद्धि, इसकी सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं भाषाका मर्दन होरहा है। इसके पुत्र आज इतने निष्ठुर और हृदय हीन होगये हैं कि गौ सदृश महोपकारी प्राणी वध को रोकने में असमर्थ हैं। इस महान अन्याय एवं अत्याचार को रोकने के लिये बडे-बडे नेताओं की वाणियां बन्द हैं। शेख अब्दुल्ला सदृश गो भक्षक का उद्धार करने के लिये तो प्रयत्न कर सकते हैं परन्तु निरपराध मारी जानेवाली गौओं का आर्त-नाद इनके हृदय को द्रवीभूत नहीं कर पाता। गौ तो भारत सम्पदा है, श्री है। इसका विनाश यदि न रुका तो भारत का सर्व नाश क्यों न हो?

वर्तमान परिस्थिति में कांग्रेस के नेताओं को यह समझ कर राजनीति से अपना हाथ खींच लेना चाहिये कि अपना कार्य भारत को स्वराज्य के द्वार पर खडा कर देना था वह पूर्ण होगया और भारत की शासन व्यवस्था, नीति, शिक्षा आदि हिन्दुओं के धर्म, सभ्यता साहित्य एवं भाषा के अनुकूल ही होना चाहिये जिस के निमार्ण के लिये वे नितान्त अयोग्य हैं क्योंकि जन्म से ही विदेशी सभ्यता मे पले, विदेशों में शिक्षा प्राप्त की। अपनी भाषा पर उनका आधिपत्य नहीं। उनको अपने धर्म से किंचित परिचय नहीं अतएव वे निस्सदेह अयोग्यही हैं। भारतकेभविष्यको उज्वल करनेके लिये इन्ही हिन्दुत्व के गुणोसे युक्त नेताओं के द्वारा ही भारत का कल्याण है। निस्संकोच हो कर पद प्राप्ति की आकांक्षा छोड भारत की उन्नति में अग्रसर होजाना चाहिये और यदि नेतृत्व की अब कामना है तो अपनी नीति में आमूल भी परिवर्तन कर के हिन्दुत्व निष्ठ नीति को अपनावें, नहीं तो कांग्रेस का पतन अवश्यम्भावी है। कांग्रेस देश घातक नीति पर आरूढ रहे यह अब भारत के हिन्दू तथा उप निवेशों में बसे हिन्दू सहन नहीं कर सकते।

आर्य जगत्

स्वतंत्रता—दिवस

देहली—शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने सारे आर्य जगत को स्वतंत्रता दिवस मनाने का आदेश दिया था। केन्द्रीय कार्यालय बलिदान भवन में भी स्वतंत्रता दिवस सम्पन्न हुआ। दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर के कार्य कर्ता श्री डा. वीरसेनजी, श्री किशोरीलालजी वकील, डा. उमेशचन्द्रजी स. आर्यावर्त, श्री स्ना. जय कुमारजी इस अवसर पर पधारे हुए थे। श्री गगाप्रसादजी उपाध्याय, श्रीमती कलादेवीजी, श्री स्वामी ब्रह्ममुनिजी तो थे ही पताका रोहण एव दीप मालिका का कार्य बडे आकर्षक ढग से सम्पन्न हुआ। उपाध्यायजी व पधारे हुए अन्य आर्य बन्धुओंने स्वय अपने हाथोंसे दीप मालिका का कार्य सम्पन्न किया और सारे आर्य जगत का प्रतिनिधित्व कर देश की स्वतन्त्रता का उत्सव मनाया।

पीसागन, विजय नगर, नसीराबाद कैंट, जावद (ग्वा.) कारजा, बीकानेर, इन्दौर, अजमेर, आर्यसमाजो तथा आर्यवीरदलो की ओर से १५-८-४७ को शिरामणि सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार स्वतन्त्रता दिवस मनाये जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं। यज्ञ, पताकारोहण तथा स्वतन्त्रभारत के लिये शुभ कामना का कार्य क्रम सम्पन्न किया गया। इन्दौर, विजयनगर नसीराबाद, पीसागन के आर्य वीरदलों ने स्वतन्त्र तथा नागरिक कार्यकर्ताओं के सहयोग रूप में अपने प्रदर्शन किये। कई स्थानों में स्वतन्त्रता दिवस के सम्पन्न करने का श्रेय ही आर्य वीरदलों को प्राप्त हुआ है।

—अजमेर में श्री चांदकरणजी शारदा, तथा श्री भगवान स्वरूपजी द्वारा विविध स्थानों पर ओ३म् पताकायें फहराई गई। श्री शारदाजी के सभापतित्व में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें पाकिस्तान को विजय करने तथा महान मातृभूमि की गौरव रक्षा की प्रतिज्ञायें की गई।

—मुरादाबाद में आर्य वीर दल के सैनिकों ने १०१ साईकलों पर मशाले लिये हुए जलूस निकाला। २५० सैनिक उनके पीछे थे, कोरस गाते और सैनिक कवायद करते हुए माइक्रोफोन द्वारा जनता को सन्देश देते हुए स्वतन्त्रता दिवस मनाया

—महेश्वर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने इस अवसर पर प्रात नगर में प्रभात फेरी लगाई और वृहद् यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात् कुलभूमि में स्थानीय आर्य समाज व प्रजा मण्डल के कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में उत्सव मनाया गया।

मध्यान्ह में ब्रह्मचारियों सहित नगर कीर्तन निकाला गया। गुरुकुल—भवन पर वैदिक ओ३म् पताका तथा राष्ट्रीय ध्वज फहराये गये। सार्वजनिक सभा में गुरुकुल की ओर से श्री आचार्य लक्ष्मीनारायणजी का ओजस्वी भाषण हुआ। ब्रह्मचारियों का राष्ट्रीय गायन प्रशंसनीय रहा।

—सुजनगढ (बीकानेर) राजस्थान व मालवा प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद का निर्वाचन १९-८-४७ को श्री प. सुखदवजी शास्त्री सगठन कर्ता केन्द्रीय कार्यालय आर्य कुमार परिषद की समुपस्थिति में सम्पन्न हुआ। प्रान्त की समस्त आर्य कुमार सभाओं स प्रान्तीय सगठन को सुदृढ बनाने की अपील की गई। प्रधान श्री गंगाबिसनजी लाहोटी और श्री जीवानन्दजी आनन्द सिद्धान्त भास्कर निर्वाचित हुए।

—मुरादाबाद भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद कार्यालय की ओर से एक विज्ञप्ति द्वारा समस्त आर्य कुमार सभाओं से (१) सस्कृत निष्ठ हिन्दी को अविलम्ब राष्ट्र भाषा एव नागरी लिपि को राष्ट्र लिपि स्वीकार किये जाने [२] गो बध का तुरन्त बन्द किये जाने (३) भारत वर्ष का नाम इण्डिया न रखकर आर्यावर्त रखे जाने, विषयक आन्दोलन को सक्रिय रूप दने के लिए २१ सितम्बर को हिन्दी तथा गौ दिवस मनाने की अपील की है। समस्त आर्य कुमार सभाओं का उपर्युक्त प्रस्ताव पास कर विधान परिषद प. नेहरू स.पटेल, केन्द्रीय कार्यालय मुरादाबाद भेजने चाहिए।

—महेश्वर गुरुकुल के आचार्य श्री लक्ष्मीनारायणजी शास्त्री ने बाल समुद्र (निमाड प्रान्त) में "वीर भोग्या वसुन्धरा" विषय पर ओजस्वी भाषण दिया। स्थानीय जनता पर सुन्दर प्रभाव पडा और भारतीय राष्ट्र की रक्षार्थ वीर बनने की जनता ने प्रतिज्ञा की।

— मुरादाबाद गज स्टेशन रोड के तत्वावधान में लेडी डाक्टर श्रीमती यूना नियोनिया से मुअल्स एल एम. पी. कटक निवासिनी की शुद्धि की गई। उनका नाम उमावती रक्खा गया। आप रियासत रामपुर के अस्पताल में असिस्टेन्ट लेडी डाक्टर हैं।

स्वतन्त्रता दिवस समारोह
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

१४ अगस्त की मध्यरात्रि को जब कि देश के गण्यमान्य नेता लोग स्वराज्य सत्ता लेने का उपक्रम कर रहे थे, घंटानाद व शंख के राष्ट्रिय सैनिकों का स्वातन्त्र्य घोष सम्पूर्ण गुरुकुल में हुआ जिसमें कि सर्व प्रमथ अथर्व वेद के पृथिवी सूक्त व कुछ स्वराज्य सूक्त के मन्त्रों का पाठ ब्र. सत्यपालजी द्वारा किया गया।

१५ अगस्त को ५-४५ से ६-४५ तक प्रभात फेरी राजपुर ग्राम व सम्पूर्ण गुरुकुल में लगाई गई। बृहद् यज्ञ का आयोजन श्री पं. रामेश्वर दयालुजी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि की अध्यक्षता में किया गया जिसमें कि ऋग्वेद में से स्वराज्य सूक्त के विशेष मन्त्रों से आहुति दी गई।

तदनन्तर ध्वजस्थल पर राष्ट्रिय ध्वजा रोहण का कार्य सम्पन्न किया गया। गुरुकुल के विशेष अधिकारियों को आर्य वीर दल द्वारा सलामी देने के बाद राष्ट्रिय मन्त्र "आ ब्रह्मन् ब्राह्मणा." का सम्मिलित पाठ किया गया। तदनन्तर श्री श्रीरामजी मुख्याधिष्ठाता के कर कमलों से ध्वजोत्तोलन सम्पन्न हुआ। ततः श्री. स्ना. रामेश्वर दयालुजी शास्त्री के बनाये हुये गीत से ध्वज वन्दना करने के पश्चात् श्री आचार्य स्ना. विश्वेश्वरजी का सुललित व सुन्दर छोटासा भाषण हुआ। जिसमें उन्होंने वैदिक संस्कृति को वेदानुसार विश्वधारा बताकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के उद्देश्य को पूर्ण करने के प्रति सबका ध्यान आकृष्ट किया। उनके पश्चात् श्री श्रीरामजी मुख्याधिष्ठाता श्री. स्ना. रामेश्वर दयालुजी शास्त्री, व श्री स्ना नरदेवजी आयुर्वेद शिरोमणि के भी मनोहारि व शिक्षाप्रद भाषण हुए। अन्ततः ध्वजाभिवादन व शान्तिपाठ के साथ यह कार्य समाप्त किया गया। यह सब कार्य ओम् पताका स्थल के पास ही सम्पन्न हुआ जहां कि ओम् पताका भी आर्य संस्कृति का सन्देश लिए गगन में पहिले से ही व्याप्त थी।

मध्याह्न सब कुलवासी वृन्दावन नगर के कार्यों में सम्मिलित रहे। रात्रि में दीपमालिका का आयोजन किया गया।

ब्र. मोहन
प्रधान मन्त्री विद्या परिषद

—कारंजा आर्य समाज ने गुण्डों द्वारा भगाई ३ लड़कियों का पता लगाकर उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया। १ इन्दिराबाई को उस के पिता के पास पहुंचा दिया गया, २ वीणा की शादी हिन्दू युवक से कर दी गई, ३ यशोदा को उसकी बहिन के संरक्षण में दे दिया है।

मध्य-भारत—

स्वतंत्रतासे भूषित राजगढ़।

राजगढ तहसील के दफ्तर के समक्ष उस समय उत्साह अभूत पूर्व दृष्टि गोचर होता था जिस समय १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाने के लिये भारत उपनिवेश का झन्डा लहराया गया राजगढ राज्य कोन्सिल के दीवान व प्रेसिडेन्ट और मेम्बर्स उस समारोह के समय उपस्थित थे राजगढ के गण्य मान नागरिक सुन्दर वेश धारण किये हुए बहुत बडी संख्या में उपस्थित थे और समयानुकूल भाषण हुए। तदनन्तर जुलूस तहसील दफ्तर के सामने से चला और कस्बे की प्रमुख सडकोपरसे होता हुआ गंज में आकर समाप्त होगया।

१५ अगस्त को राज्य भरके समस्त बालकों को लगभग २०००) रु. की मिठाई बांटी गई और स्कूलों में संवाद, भाषण, खेल इत्यादि के बडे सुन्दर कार्य क्रम रहे।

राजगढ तथा अन्य कस्बों व ग्रामों में रात्रि को दीप माला द्वारा प्रकाश किया गया।

मुद्रक—श्रीधर पण्डित
चिंतामणि प्रिंटिंग प्रेस, ८९ यशवंतगंज इन्दौर.

प्रकाशक—किशोरीलाल गोयल,
आर्यावर्त कार्यालय, ७२ महारानी रोड इन्दौर.

आर्य कुमारों को शुभ सन्देश

प्रिय आर्य कुमारो !

भारतीय भावी राष्ट्र निर्माण में तुम्हारा कितना महत्व है यह आज देश की अन्तरात्मा समझ चुकी है, राष्ट्र चेतना में नवयुवकों का बड़ा स्थान है। देश की सच्ची और बड़ी सेवा करने के लिए देश का सच्चे, दृढ़ विश्वासी, आत्म निर्भर, सदाचारी नवयुवकों और श्रेष्ठ कुमारों की महती आवश्यकता है। यदि तुम चाहते हो कि हमारे राष्ट्र की जल, स्थल व्योम-वर्तिनी सेनायें सर्वदा विजयिनी हों, हमारे राष्ट्र का गौरव, वैभव तथा प्राबल्य एवं यश अक्षय किंवा विशाल हो तो अपने यहां अनविलम्ब आर्य कुमार सभा की स्थापना करो तथा स्थापित सभाओं में सदस्य बन जाओ। आर्य कुमार सभा आपको सच्चे मित्र, सदाचारी शिक्षक, उत्तम निरोग विचार, सादा जीवन प्रदान करेगी। और तुम देश के सच्चे क्रिया शील उपासक बन कर न केवल अपने देश अपितु कुल और आर्य जाति का भी नाम उज्वल कर सकोगे, अन्याय अत्याचार मत सहो, अन्याय और अत्याचारी को संसार से मिटा दो।

सुखदेव शास्त्री

आर्यावर्त

श्रावणी—पर्व

[कविराज— स्ना० रत्नाकर शास्त्री]

आया पर्व महान्
ले अध्यात्म सुधा का प्याला देने जीवन दान
आया पर्व महान्

पुण्य-आर्य-आदर्श-भावना के गौरव का चित्र
वैदिक धर्म ध्वजाऽऽरोपन में पावन मनका मित्र
ब्रह्मव्रती मानव कक्षा का अविरत श्रोत विचित्र
चातुर्वर्ण्य मानसोन्नति के उद्देश्यों का प्राण
आया पव महान्

कृषक जनों की आशा लतिका का जो ललित विहान
प्रकृति नटी की शोभावलि का जो अनुपम आख्यान
वर्षा ऋतु की अनुकम्पा का प्रम पूर्ण सम्मान
सकल जनों को हर्षित होकर करने हर्ष प्रदान
आया पर्व महान्

भारतीय-सर्वोच्च-सभ्यता वैभव का आधार
मानव जीवन की नैया का सुन्दर तम पतवार
मातृ भूमि रक्षा बधन का मंगल मय उपचार
राष्ट्र जागरण नव वेला का प्रात काल महान्
आया पर्व महान्

वेद वीणा

(आचार्य द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री मेरठ)

प्रभो वेद वीणा बजे विश्व भर मे
सुन मत्र झकार प्रत्यक घर में

पिय प्रम पीयूष मिल प्रीति स सब
करे स्नान ससार शुभ स्नह सर में
बध विश्व बन्धुत्व की श्रखला म
करें रक्त रजित न धरणी समर में

उगे व्योममें वेदका दिव्य भानु
खिले पुण्य पकज मनो मानसर में
अमर शान्ति का गान गूज गगन में
सुधासी बरसन लग सप्त स्वर में

पताका उडे ओम की व्योम में फिर
बहे विश्व स्वाधीनता की लहर में
यही कामना थी दयानन्द ऋषि की
यही गूज थी उसके प्रत्येक स्वर में

प्रभो वेद वीणा बजे विश्वभर में
सुने मत्र झकार प्रत्येक घर में

[दि]नाक ७ सितबर ४७ [मू]ल्य ५) वार्षिक
सम्पादकः— स्नातक उमेशचन्द्र श्रावणी अक सम्पादक—स्नातक जयकुमार
अक स २३ एक अक =)

—••—दयानन्द वैदिक मिशन इन्दोर का मुखपत्र—००—

आज का क्षोभ हर्षक पश्चिमी पंजाब का नृशंस हत्या काण्ड आपके कर्तव्य को चुनौती दे रहा है

पश्चिमी पजाब में जो कुछ हुआ है उस पर वाद-विवाद करने का अब समय नहीं है। यदि हम अपने को हिंदुत्वकी अभिमानी सैनिक समझते हैं हिन्दुत्व की रक्षा हमारा जीवन सर्वस्व है तो आज हमारा एक ही कर्तव्य है और वह यह कि हम कहीं भी हों किसी भी अवस्था में हों पजाव के निस्सहाय शरणार्थियों के लिये यथा शक्ति सहायता पहुँचाये आर्यावर्त पंजाव सहायता निधि में १५००० पन्द्रह हजार तक एकत्रित हो कर पहुँच चुका है। आप का भावना से दिया हुआ एक पैसा भी हजारों के तुल्य है यदि आप और कुछ नहीं कर सकते तो इस निधि में धन देकर इस कर्तव्य यज्ञ को तो पूरा कर ही सकते हैं।

विक्षुब्ध, विदग्ध, बेबस पंजाब आप की सहायता के लिये टक टकी से देख रहा है यदि हम कर्तव्य की पुकार सुनरहे हैं तो हमें अपना धन इस कार्य लिए समर्पण कर देना चाहिए।

आर्यावर्त पंजाब सहायता निधि में धन देकर अपने कर्तव्य की पूर्ति कीजिए।

—सम्पादक उमेशचन्द्र

विलम्ब क्यों

हमने १७ अगस्त के अक में २४ ता. का अक बन्द रखने और ३१ अगस्त का अक श्रावणी अक के रूप में निकालने की सूचना दी थी पर हमें खेद है अनिवार्य कारणों से हम ३१ ता. अंक नहीं निकाल सके।

पजाब की आकस्मिक साम्प्रदायिक परिस्थिति का अध्ययन करन तथा शरणार्थियों की सेवार्थ दयानन्द वैदिक मिशन की ओर स सम्पादक स्नातक उमेशचन्द्रजी को पंजाब जाना पडा। श्री सम्पादकजी के पजाब जाने तथा स्थानीय प्रेस की कठिनाइयों से उक्त अंक नहीं निकल सका। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि निकट भविष्य में ही विगतांक की क्षति पूर्ति करने का प्रयत्न करेंगे। आपके सहयाग एव धैर्य के लिए हम सदैव प्रार्थी हैं।

व्यवस्थापक— आर्यावर्त

(शेष पृष्ठ १० का)

"गुरौ विमुखता याते विमुखाः सर्वदेवता।
भवान्ति क्रियमाणञ्च पुण्य पाप हि जायते॥"

जब गुरु अप्रसन्न हो जाता है तो सब देवता भी रुष्ट हो जाते हैं और पुण्य कर्म भी पाप में परिणत हो जाते हैं।

गुरु यो मान्यवैरन्यैः समं पश्यति मोहतः।
न तस्यास्मिन् भवेल्लोके सुखंनैव परत्र वा॥

जो व्यक्ति अपने गुरु को साधारण मनुष्य की भाति मानता है उसे इस लोक और परलोक में शान्ति नहीं होती।

"एकाक्षर प्रदातारं गुरु यो नैव मन्यते।
समूढा नरक यान्ति यावदाभूित सप्लवम्॥"

जो अक्षर सिखाने वाले गुरु की अवहेलना करता है वह प्रलयपर्यंत नरक में रहता है।

"कृतघ्नानां हि ये लोका ये लोका ब्रह्मघातिनाम्
मृत्वातानभिसयाति गुरुद्रोहपरो नरः॥"

कृतघ्नी और ब्रह्महत्या करनेवालों की जो गति होती है वही गति गुरुद्रोह करने वाले की भी होती है। इत्यादि सैकडों श्लोक गुरु महिमा के हमारे प्राचीन आर्षग्रंथो में उपलब्ध हैं सब को वहा लिखने का स्थान नहीं है। यदि गुरुमाहात्म्यसम्बन्धी सभी प्राचीन वचनों को संग्रह किया जाये तो एक बडा ग्रन्थ तैयार हो सकता है। यहा तो हमने केवल अपने अर्वाचीन भारतीय विद्यार्थियों के सम्मुख वर्तमान गुरुशिष्य परम्परा को हल करने एवं इस पर मनन करने को सामग्री ही उपस्थित की है।

आशा है विवेक शील, सज्जन श्रावणी एव उपाकर्म के इस पवित्र पर्व पर इस विषय पर भी विचार करेंगें।

वेद वाणी

(ले०— व्याख्यान वाचस्पति पं. बिहारीलालजी शास्त्री काव्यतीर्थ)

सृष्टि की आदि में परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिये 'वेद' ज्ञान दिया। उस समय स लेकर इस समय तक वैदिक रश्मिया हमारे जीवन को पवित्र कर रही हैं। वेद हमारे पथ प्रदर्शक है, वे ज्ञान के भण्डार हैं।

भारतवर्ष में वेदों का नाम बडी श्रद्धा से लिया जाता है—उनको "वेद भगवान्" से सम्बोधन करते हैं। अभाग्यवश लोग वेद स दूर होते गये—इसी कारण वे महान् अंधकार मे फँस गये उनके जीवन दुःखी हो रहे हैं। अज्ञान में फँस कर कौन सुख की आशा कर सकता।

भारतवर्ष में इस समय वेदों के विषय में अनेकों भ्रम फैले हुये हैं। यह हमारा परम सौभाग्य है कि नवीन युग के विधाता महर्षि दयानन्द ने हमारे नेत्र खोले और वेदों का मान बढ़ाया। उन्होंने हमको बताया कि वेद क्या हैं? किस प्रकार उसके अनुकूल चल कर हम अपने जीवन को पवित्र बना सकते हैं।

वेद क्या हैं?

अब यह प्रश्न उठता है कि वेद क्या है? श्रीसायणाचार्य जी महाराज तैत्तिरीय संहिता भाष्य भूमिका पृ० २ में लिखते है—

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते एवं विदन्तिवेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता॥ इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायंयो ग्रन्थो वेदयति सवेदः।

महर्षि दयानन्द अपने अमूल्य ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में दर्शाते हैं :—

विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति विन्दन्ति अथवा विन्दन्ते लभन्ते विन्दन्ति विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः। सर्वाः सत्यविद्या यैर्येषु— वा तथा विद्वांस भवन्ति ते वेदाः।

प्रत्यक्ष और अनुमान से जो उपाय न जाना जा सके। उस परोक्ष उपाय को जो बताते हैं वह वेद हैं।

जिनसे वा जिनमें मनुष्य सब पदार्थों को जानते हैं। जिनसे विद्वान् होते वा जिनमें ज्ञान प्राप्त करते हैं। वा जिनमें विचार करते हैं वे वेद हैं।

तात्पर्य यह है कि परमार्थ सिद्धि के अलौकिक उपाय को बताने वाले, परोक्ष का ज्ञान कराने वाले, अगम ज्ञान का प्रकट करने वाले ग्रन्थ वद हैं। वे अपौरुषय हैं। स्वतः प्रमाण हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, नाम से प्रसिद्ध हैं। जो लिखित प्रकाशित कण्ठस्थ सब रूप में एक ही प्रकार से पाये जाते हैं।

वेद पाठियों की कृपा से वेदों के पाठ सुरक्षित चले आये हैं। उनमें अब तक कोई भेद नहीं पडा है। व्याकरण आदि ग्रन्थ वेद की रक्षा क लिये विद्यमान हैं। यदि कहीं कोई भूल हो तो वह ठीक हो सकती है। अभी तक वेद को कण्ठ रखनेवाले पंडित भी हैं। अतः वेद किसी प्रकार भी अशुद्ध नहीं हो सके हैं।

वेदों की शाखायें

श्री स्वामी दयानन्द जी का मत है कि वेदों की ११२७ शाखायें हैं। शाखायें—वदों का व्याख्यान अर्थात् प्रवचन हैं। मुख्य वेद नहीं। और इसके विरुद्ध पौराणिक पंडितों का मत है कि सब शाखायें ११३१ वेद ही हैं। जो उचित नहीं। बस जो मूल चार वेद आदिम काल में थे और जिनके पाठ भेद से शाखायें रची गई, वही वेद प्रामाणिक हैं। तदनुकूलही शाखाओं का प्रमाण हो सकता है। यही श्री स्वामी जी ने लिखा है। वेदों की उन्हीं संहिताओं को सब पौराणिक भी मुख्य मानते हैं जिन्हें कि श्री स्वामी जी ने माना है। वे ही संहितायें लिखित रूप में भी सैकडों वर्षों से चली आरही हैं। उन्हें ही वेद पाठी कंठमी करते हैं। जिन्हें स्वामी जी ने शाखा कहा है, उनकी केवल संख्यामात्र ही पुस्तकों में मिलती हैं। पुस्तक रूप में बहुत कम शाखायें रह गया हैं।

शाखायें कैसे बनीं?

आरम्भ में वेदों को कंठ किया जाता था। कठ कराने वाले कुलपति वेदार्थ को समझाने के लिये वेद के मूल पद के स्थान पर पर्यायवाची शब्द लगा कर कंठ करा दते थे। जैस कि.—

"सचिविदम् सखायम्"— ऋ० १०।७१।६ "सखिविदम् सखायम्" तै० आरण्यक १।३।१ "भातृव्यस्यवधाय"—यजुर्वेद १।१८। "द्विषतोवधाय"—१।३ क० य०।

साथ ही जब आर्य लोगों का अनार्य लोगों से मेल हुआ तो उन अनार्य लोगों ने वेदों का पाठ बदल कर नये वेद रचने आरम्भ किये जैसे कि कृष्ण यजुर्वेद, असली वेद की नकल अनार्यों ने बनाई। अतः स्वामी जी महाराज शाखाओं के झगडे में न पड कर उन्हीं ग्रन्थों को वेद स्वीकार करते हैं जो वेद नाम से सब में प्रसिद्ध हैं। उपलब्ध हैं। सर्वमान्य हैं। यदि उनका नाम भी शाखा है तो यह नाम उस शाखा की गडबडी के काल मेंही पडा है। शाखावालोंने इन मूल वेदों को भी शाखा ही कहना प्रारम्भ कर दिया है। ऋषि दयानन्द का तात्पर्य तो इतनाही है कि ऋग्वेद चाहे उसका नाम शाकल वा वाष्कल शाखा कहो वा संहिता, यजुर्वेद चाहे उसको माध्यन्दिनी शाखा कहो, साम चाहे उसे कौथुमी शाखा के नाम से ही पुकारा जाय, अथर्ववेद का नाम चाहे शौनक शाखाही रख लीजिये यही मान्य हैं। अन्य शाखायें प्रामाणिक नहीं। उनमें मिलावट है। गडबडी है, इन शाखाओं के लोप हो जाने का कारण वास्तव में यही प्रतीत होता है, कि यह शाखायें वैदिक विद्वानों मे प्रामाणिक नहीं मानी गई थी।

वेद और ब्राह्मण

अब एक विवाद है कि ब्राह्मण ग्रन्थ भी वेद हैं या नहीं ? क्योंकि पौराणिक विद्वान् ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद मानते हैं यथा "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्"। श्रीसायणाचार्य जी ने मन्त्र भाग और ब्राह्मण भाग दोनों ही को वेद माना है। परन्तु श्रीस्वामी दयानन्द जी ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद की व्याख्या ही मानते हैं। श्रीस्वामीजी का आशय वेद न मानने से यही है कि ब्राह्मण ग्रन्थ अपौरुषेय नहीं। व्याख्या से भी इतना ही तात्पर्य है कि यह ग्रंथ वेदों का आशय प्रकट करते हैं।

अब यह तो प्रत्यक्ष सिद्ध है कि ब्राह्मण ग्रन्थ अपौरुषेय नहीं, किन्तु ऋषि कृत हैं। पौराणिक लोग जहां वेदों का प्रादुर्भाव ब्रह्मा ही से मानते हैं वहां ब्राह्मण ग्रन्थों का ऋषियों से। रहा वेद का कहना सो तो यह वेदोंकी प्रतिष्ठा देखकर लोगों ने प्रत्येक प्रतिष्ठित ग्रन्थ को वेद कहना प्रारम्भ कर दिया। राबर्ट नौबिल' एक ईसाई पादरी ने इञ्जील का प्रचार ईसुर्वेद कह कर किया। तामिल वेद नाम की पुस्तक दक्षिण में लिखी गई, जिसका हिन्दी भाषान्तर भी बिकता है। गोपथ ब्राह्मण (१।१०) में सर्प वेद, पिशाच वेद आदि का भी वर्णन है। महाभारत को भी लोग वेद कहने लगे। वर्तमान में तो पौराणिक पंडित प्रत्येक संस्कृत ग्रन्थ को ही वदवत मान लेते हैं। इसलिये इस गड्डलिका प्रवाह का प्रमाण नहीं माना जा सकता है। आपस्तम्ब के समय ब्राह्मण ग्रन्थ भी वेद कहलाने लगे होंगे। वास्तव मे तो यह व्याख्यान ही हैं—वेद मन्त्र की प्रतीक रख कर बताते हैं कि इससे यह विधि करनी चाहिये। इससे यह विधि हो। शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के मन्त्रों की व्याख्या भी कहीं कहीं विद्यमान है।

वेदों का ज्ञान कैसे हुआ

अग्नि वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों द्वारा ४ वेदों का प्रकाश हुआ। प्रमाण ये हैं:—

अग्नेर्ऋग्वेदोवायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेद (शतपथ) **अग्नेर्ऋचो वायोर्यजूंषि सामान्यदित्यात्** छान्दोग्योपनिषद्। **आग्नेवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्। दुदोह यज्ञ सिद्ध्यर्थ ऋग्यजुः साम लक्षणम्।** (मनु०)

कुछ लोगो का आक्षेप है प्रथम ब्रह्मा से वेद प्रकट हुए वे निम्न प्रमाण अपने पक्ष के समर्थन में देते हैं:—

यो ब्रह्मणे प्रथमो मा अविन्दत। ऋ० (१।१०।१०५) **यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।** (श्वे० ६।१८।)

ब्रह्मा के अर्थ को न समझने के कारण यह भ्रम उत्पन्न हुआ। चारों वेदों के ज्ञाता को ब्रह्मा कहते हैं। यज्ञ में अथर्ववेदज्ञ विद्वान् ब्रह्मा होता है।

अथर्वाङ्गिरोवेदं ब्रह्माणम्" (गो० पू० २।२४) **सृष्टि के आदि में तदण्डमभवद्धेम सहस्रांशु समप्रभम्। तस्मिन् जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्व लोक पिता महः।** (मनु०) यहां ब्रह्मा नाम है परमेष्ठी मंडल का, जिसका विकास यह सौर जगत् है। इस जड ब्रह्मा में वेदों के सब शब्द इसी प्रकार गुप्त थे जैसे कि "ईथर" में आज भी शब्द वर्तमान रहते हैं। चेतन सृष्टि का ब्रह्मा चारों वेदों के प्रकाश के उपरान्त होता है। वह अग्नि, वायु, आदित्य अंगिरा ऋषियों से यज्ञ सिद्धयर्थ वेदों का दोहन करता है। अर्थात उनसे वेद प्राप्त करता है चारों वेदो का ज्ञाता ही ब्रह्मा कहाता है। उपनिषद् (मुडक) में जिस ब्रह्मा अथर्वा अंगिरा भरद्वाज आदिका का वर्णन है। यह वेदों के प्रकाशित होने के पश्चात् की परम्परा है। ये दूसरे अथर्वा अंगिरा आदि थे। अतः सिद्धान्ततः यही बात ठहरती है कि मनुष्यों में वेद का प्रकाश करने वाले अग्नि आदि चार ऋषि ही थे। देव सृष्टि का "विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्यगोप्ता" ब्रह्मा वह परमेष्ठी मंडल ही था। ईश्वर की रचना शक्ति भी ब्रह्मा कहाती है। यजुर्वेद सामवेद में "त्वामग्ने पुष्करा दध्यथर्वा निरमन्थत" तथा यही १२ में "तमुत्वा दध्यङ् ऋषिः पुत्रः अथर्वणः" यहां जल से अग्नि का आविष्कारक अथर्वा तथा उसका पुत्र दध्यङ् दो का वर्णन है। ये अथर्वा और दध्यङ् चेतन मनुष्य नहीं किन्तु प्राकृतिक शक्तियां हैं। ऐसे बहुत से गम्भीर विषय विचारणीय हैं। अथर्वा नाम प्राण का भी है।

प्राणोऽथर्वा [महीधर भाष्य]

वेदों में क्या है ?

वेदों में क्या है यह प्रश्न तो इस प्रकार करना चाहिये कि वेदों में क्या नहीं है ? वास्तव में वेदों में सब कुछ है।

भूतं भव्यं भविष्यञ्च सर्वं वेदात्प्रसिद्ध्याति।

भूत, वर्तमान और भविष्य सब का बीज वद में निहित है। वेदों में अक्षरारम्भ से लेकर उच्चकोटि तक का ज्ञान विद्यमान है।

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। होतारम् रत्नधातमम्।

इस ऋग् मन्त्र मे अ, इ, ई, उ, ऋ, ए, ओ, सब स्वर उपस्थित हैं। वर्णमाला क प्रथम अक्षर "अ" से वेद का प्रारम्भ होता है। वेद में ज्ञान विज्ञान प्रज्ञान, मनुष्य को जितना ज्ञातव्य है, मिलेगा। अध्यात्म ज्ञान के तो वेद भण्डार ही हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म आध्यात्मिक रहस्य वेदों मे हैं। कबीर जैसे सत और बडे बडे सूफियो के रहस्यमय वर्णन वेदों में पाये जाते हैं। अतएव श्रीसायणाचार्य जी लिखते हैं:—

'चतुर्दश विद्या स्थान पारिशीलनोपेतः पुरुषो वेदार्थरहस्यं सम्यग् जानाति।"

चौदह विद्या निधान मनुष्य वदार्थ क रहस्य को जान सकता है।

यदि वेद में चौदह विद्याओं से भी अधिक ज्ञान न होता तो फिर चौदह विद्याओं के जानने वाले को वेदार्थ समझने योग्य क्यों कहा जाता।

वेद काव्य हैं। गद्य (Prose), पद्य (Poetry) और गेय (Song) रूप में वेद हैं। वेदों में अलंकार, रस, रीति

[शेष पृष्ठ ११ पर]

—: वेदों की ओर :—

(ले०-- श्री. प्रो. सूर्यदेवजी शर्मा सि. शास्त्री साहित्यालंकार M. A. L. T.)

उपस्थित लेख के लेखक आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् एवं शिक्षा शास्त्री हैं इस लेख में आपने विश्व के सम्पूर्ण धर्म ग्रन्थों की समालोचना करते हुए प्राचीनतम वेदोंकी उत्कृष्टता पर उत्तम प्रकाश डाला है —सम्पादक.

जैसा अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान् लेखक ऐमरसन ने लिखा है, "संसार में विचारही राज्य किया करते हैं" अर्थात् किसी राष्ट्र के उत्तम मस्तिष्क जिस विचार धारा का प्रादुर्भाव करते हैं उसीमें वह राष्ट्र और समस्त मानव जाति प्रवाहित होने लगती है। आधुनिक जगत में विद्वन्मण्डल की विचारधारा का प्रवाह किधर को प्रवाहित हो रहा है इसका थोडासाभी विचार करने से पता चलेगा कि जहां एक ओर पाश्चात्य विज्ञान के चमत्कारपूर्ण आविष्कारोंने संसार के भौतिक विचारवादी मस्तिष्कों को आकृष्ट किया है वहां आध्यात्मिक जगत की क्रीडा स्थली में वे खिलाडी भी सम्मुख आये हैं जो उस वैज्ञानिक जगत् से उपरत होकर आध्यात्मिक शांति की खोज में वर्षों इतस्ततः परिभ्रमण कर चुके हैं, और जिन्होंने वैज्ञानिक जगत् पर भी आध्यात्मिकता की छाप लगादी है। शिकागो विश्वविद्यालय के ख्यातनामा प्रोफेसर फ्रौस्ट ने अपने ६५ वर्ष के अनुभव के पश्चात् यही लिखा है:-

प्रकृति में किसी चेतनशक्ति का कार्य अवश्य होरहा है। उसको न मानना भौतिक विज्ञान के सिद्धान्तों की अवहेलना करना है। केवल पश्चिम के भौतिक विज्ञान से अब काम चलने का नहीं, जब तक कि उसके साथ में सच्चा धर्म सम्मिलित न हो। इंग्लैंड के प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता सर आलीवर लोज और प्रो. हक्सले के भी यही विचार हैं:—

"सच्चा विज्ञान और सच्चा धर्म जुडवाँ बहनें हैं, इनको एक दूसरे से पृथक् करना दोनों के नाश का कारण होगा।"

अगस्त सन १९१४ में इगलैंड में एक विज्ञान सप्ताह मनाया गया था जिसमें सात बडे बडे वैज्ञानिकोंके व्याख्यान केवल धर्म और विज्ञान के ऊपर रक्खे गये थे इनमें सर ओलिवर लौज डॉ. फ्लेमिंग, प्रो हुल, प्रो. थामसन इत्यादि सब ने विज्ञान की उद्देश्य सिद्धि के लिये ईश्वर सत्ता को माना। प्रो० थौमसन ने अन्त में जो परिणाम निकाला, वह बडाही महत्वपूर्ण है। वह कहता है कि धर्म और विज्ञान दोनों के पारस्परिक संयोग से ही विश्व का काम चल सकता है। क्यों कि वर्तमान समय में प्रचलित लगभग सभी मतों में यह तीन बातें मुख्य हैं-(१) ईश्वर की सत्ता (२) जीव की अमरता (३) मनुष्यों में दया आदि गुणोंकी महत्ता। इसी प्रकार अब तक विज्ञान के निश्चित नियम यह हैं १ प्रकृति का अविनाशित्व (इम्मोर्टेलिटी) २ रासायनिक तत्वों का नित्यता ३ शक्ति की नित्यता, इत्यादि। इस प्रकार धर्म और विज्ञान की इन सचाइयों में परस्पर विरोध कहां है। दोनों के यह सिद्धान्त मिलकरही मनुष्य जाति का कल्याण कर सकता हैं। अहा! प्रो० थौमसन के कथनानुसार मनुष्य जाति का कल्याण करनेवाला वही धर्म होगा, जिसमें उपरोक्त सब सिद्धान्त पाये जाते हों। पाठको! आपने देखा वह कौनसा धर्म है जिसमें १ ईश्वरकी सत्ता २ जीव की अमरता ३ प्रकृति का अविनाशित्व ४ शक्ति की नित्यता ५ मनुष्य में दया आदि गुण पाये जाते हों। यह तो हमारा वैदिक धर्म ही है जिसका समर्थन आज योरोपके बडे बडे वैज्ञानिक कर रहे हैं। यही नहीं, किन्तु सन १९२७ ई० में होनेवाली अमेरिका की एक सर्व धर्म परिषद में भी इसी विषयपर विचार किया गया था। उसमें प्राचीन और नवीन संसार के लगभग सभी मतों के प्रतिनिधि विद्वान विचारक और वैज्ञानिकोंने उपस्थित होकर संसार में होनेवाली धर्म और विज्ञान की कलह को किस प्रकार मिटाया जाय और संसार का सार्वभौम भावी धर्म क्या हो इसी पर विचार किया था। कई दिनों के विवाद के पश्चात वे इस निर्णय पर पहुंचे थे कि संसार का भावी धर्म वही हो सकता है और उसीको सब मनुष्य समाज मानेगा जिसमें निम्न लिखित चार बातें पाई जायंगी १ समानता का भाव २ विश्वव्यापी भ्रातृ भाव ३ सर्वांगीण उन्नति के साधन ४ वैज्ञानिक आधार।

इन उपरोक्त बातों को लेकर यदि हम वर्तमान प्रचलित बडे बडे मतों को देखें और ज्ञात करना चाहें कि इनमें से कौनसा मत संसार का भावी धर्म होगा तो हमें पता चलेगा कि इनमें से पहली तीन बातें तो कई मतों में पाई जाती हैं। इस्लाम और ईसाई मत भी पारस्परिक समानता और भ्रातृभाव का दावा करते हैं। वे भी सामाजिक समभाव का उपदेश देते ही हैं—यद्यपि इस्लाम में स्त्रियों का स्थान पुरुषों से कितना ही नीचा क्यों न हो, यद्यपि आदम की एक पसली से ही हव्वा की उत्पत्ति क्यों न बतलाई हो, यद्यपि अपने से भिन्न मतवालों को "वाजिबुल्कत्ल" ही क्यों न कहा गया हो। यद्यपि सन् १८७० तक सैंटपीटर्स वर्ग में ईसाइयों की सभा होने से पूर्व ईसाई संसार स्त्रियों में जीवात्मा को मानने से इन्कार ही क्यों न करता रहा हो। तथापि दुर्जन तोषन्याय से थोडा देर के लिये हम इन बातों की उपेक्षा करके समान भ्रातृभाव का सिद्धान्त इन मतों में मानकर चौथी बात पर ही विचार करेंगे और देखेंगे कि यह मत कहां तक विज्ञान का आधार लिये हुये हैं? उनमें कहां तक बुद्धि, तर्क और विज्ञान के अनुकूल बातें पाई जाती हैं?

सब से पूर्व सृष्टि उत्पत्ति को ही

लीजिये। इस्लाम और ईसाई धर्म के अनुसार सृष्टि रचना हुये लगभग ८ हजार वर्ष हुये हैं। आरमोग के आर्क बिशप जेम्स उशर के मत से बाइबिल में लिखी हुई सृष्टि की उत्पत्ति ईसा के जन्म से ४००४ वर्ष पूर्व हुई, और ईसा से २३०० वर्ष पूर्व वह प्रलयकाल हुआ जिसमें केवल आदम या मनु रह गये थे। लेकिन वर्तमान विज्ञान के अनुसन्धानों और खोजों से पता चलता है कि यह बात कितनी निराधार है। साइन्स और आविष्कार नाम के अमेरिका के एक पत्र में जे क्लीन ने पृथ्वी की आयु नामक लेख लिख कर सिद्ध किया है कि पृथ्वी को बने कम से कम ७२ लाख वर्ष हुये। पृथ्वी के अन्दर मिट्टी का तेल और कोयले का प्राप्त होना इसका पुष्ट प्रमाण है। भूगर्भ विद्याविशारदों का समुद्र और पहाड़ों का धीरे धीरे बनने का क्रम ही हमें बतलाता है कि इस पृथ्वी को बने हुये लाखों वर्ष व्यतीत हुये हैं। शायद इसी लिये ईसाई पादरियो ने प्रो० लाइल को भी भला बुरा कहा था क्योंकि उन्होंने पृथ्वी के ऊपर पहाड़ आदि के बनने में लाखों वर्ष का समय बीतना सब से पहले बताया था। समुद्र में सोडियम को देखकर ही भूगर्भ शास्त्री प्रो० जौली ने पृथ्वी पर प्राणियों का समय कम से कम १० करोड़ वर्ष माना है। २० जुलाई सन् १९३१ के प्रयाग के लीडर पत्र में मिस्टर वाटसन डेविस ने लिखा है कि नेशनल रिसर्च कौन्सिल ने वैज्ञानिकों की जो कमेटी पृथ्वी की आयु जानने के लिए नियुक्त की थी उसने अपनी कई वर्ष की खोज के पश्चात रूस में पूरे नियम के कुछ अन्श की परीक्षा करके यह निश्चय किया है कि वह धातु १,८५ २०,००,००० वर्षों की बनी हुई है और जिस चट्टान में वह पाई जाती है वह भी लगभग १५ करोड़ वर्ष पूर्व की होनी चाहिए। इस प्रकार पृथ्वी की आयु लगभग २ अरब वर्ष की सिद्ध होती है। इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और तत्ववेत्ता डाक्टर जेम्स जीन ने भी अपनी पुस्तक यूनिवर्स अराउंड अस में एक पूरे नियम का इतिहास देकर यही सिद्ध किया है कि वर्तमान विज्ञान के अनुसार सृष्टि रचना हुये लगभग २ अरब वर्ष बीते हैं।

अहा! जिस सिद्धान्त को वैदिकधर्मी आर्य लोग बहुत पहले से मान रहे हैं, अर्थात् हमारे अनुसार भी सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०४५ है वही सृष्टिकाल अर्थात् २ अरब वर्ष के लगभग आज पश्चिम के सारे विज्ञान, भूगर्भशास्त्र ज्योतिषशास्त्र भौतिक शास्त्र और प्राणी शास्त्र आदि मानने और सिद्ध करने को बाध्य हुये हैं। यह है वैदिकधर्म के सिद्धांतों की अपूर्व विजय। विज्ञान के इन पुष्ट प्रमाणों के होते हुये भला ऐसा कौनसा पुरुष होगा जो आर्क बिशप उशर की बात को मानकर केवल ७ हजार वर्ष से सृष्टि उत्पत्ति मानेगा।

यही नहीं, रचना का जरा क्रम भी देखिए। कितना बुद्धि-विरुद्ध और विज्ञान प्रतिकूल है। बाईबिल के सृष्टि उत्पत्ति के वर्णन को पढने से पता चलता है कि ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी। वह पानी किसपर था इसका पता नहीं। फिर ईश्वर ने पहले दिन जमीन बनाई और एक एक दिन अन्य चीजों को बनाकर चौथे दिन सूरज बनाया। भला इन अक्लमन्दों से पूछा जाय कि सूरज को तो चौथे दिन बनाया और सूरज से दिन रात होते हैं, तो जब सूरज नहीं था तो पहले तीन दिन का पता कैसे चला? ऐसी विवेकहीन बातों को इस प्रकाशयुग में कौन मान सकता है।

फिर भला कुरान में तो खुदाने केवल "कुन" कहने से दुनिया बना डाली, और बायबिल में भी किसी चीज के न होने पर भी ईश्वर ने मिट्टी के पुतले से आदम के शरीर को बनाया। इस प्रकार दोनों ही ने अभाव से भाव की उत्पत्ति सिद्धान्त को माना है, जिसको वर्तमान विज्ञान और भौतिक शास्त्र का साधारण विद्यार्थी भी स्वीकार नहीं कर सकता। इसी प्रकार इस पृथ्वी को सम्पूर्ण विश्व का केन्द्र मानना, सूर्य आदि का पृथ्वी के चारो ओर घूमना, आसमान का खम्भों पर खड़ा होना, चौथे और सातवें आसमान पर खुदा और फरिश्तों का रहना तथा हजरत मुहम्मद के उँगली उठा देने से चांद के दो टुकड़े हो जाना-ऐसी अनेक असम्भव और विज्ञान विरुद्ध बातों पर जिन पर पाठकों को हँसी आये बिना नहीं रहसकती' कौन विश्वास करेगा! इन असम्भव बातों पर पर्दा डालने के लिये ही उन ग्रन्थों के नये नये अनुवाद टीकायें की जा रही हैं, जैसे मौ० मुहम्मद-अली एम० ए० का कुरान का अंग्रेजी अनुवाद, जो सन् १९२५ में लन्दन में टिप्पणियों सहित छापा गया है। यह है वैदिकधर्म की विजय, जिसको आज पाश्चात्य जगत भी नतमस्तक होकर स्वीकार करता आरहा है। उदाहरण के लिये, फ्रांस का विद्वान जैकालियट अपनी पुस्तक दी बाइबिल इन इन्डिया में लिखा है कि यह एक आश्चर्य की बात है कि संसार की ईश्वरीय ज्ञान कही जाने वाली समस्त पुस्तकों में केवल वेद ही ऐसे हैं जिनके विचार आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्णतया मिलते हैं। इसी प्रकार सर आर्थर कार्पेन्टर अपनी पुस्तक गतिकला में कहा है।

प्रिय पाठको! आप इस लेख को पढ कर समझ गये होंगे कि संसार में केवल वैदिकधर्म ही है जिसमें आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्त पूर्ण रूपेण संघठित हो सकते हैं। अन्य मजहब या सम्प्रदाय लोगों के मस्तिष्कों को आजकल के इस प्रकाश और विज्ञान के युग में सन्तुष्ट नहीं कर सकते। इस लिये आपका हमारा सब का कर्त्तव्य है कि तर्कसिद्ध, बुद्धिग्राह्य, विज्ञानानुकूल इस वैदिकधर्म का ही प्रचार सारे संसार में करें। इसीलिये आचार्य का आदेश है:—

"वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

[शेष पृष्ठ ६ पर]

सब के उदाहरण मिल सकते हैं। प्रहेलिका कूट काव्य भी वेदों में हैं। छायावादी और रहस्यवादी कविता भी वेद में है। व्याकरण, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, शस्त्रास्त्र विद्या, राजनीति, मनोविज्ञान, योग, सूर्य, चन्द्र, मेघ, विद्युत् वायुविज्ञान, आदि भौतिकविज्ञान के रहस्य वेदों में विद्यमान हैं। जो कुछ जगत में आविष्कृत होचुका है और जो कुछ होने को है उन सब के सूक्ष्म बीज वेदों में बिखरे पड़े हैं। यदि कोई उतना ही श्रम वेदों के रहस्य प्रकट करने में करे कि जितना यूरोप के लोगों ने भौतिक विज्ञान पर किया है, तो वेदों से अनेक उपयोगी रहस्य प्रकट हो सकते है। सूक्ष्माति सूक्ष्म मानसिक शक्तियों के विकास की वेदों में शिक्षा है। मानसिक और आध्यात्मिक विकास से होने वाले चमत्कार वेदों में वर्णित हैं सूर्य किरणों और यज्ञों द्वारा भयंकर रोगों की निवृत्ति, सोम से कायाकल्प, वायु द्वारा चलने वाले विमानादि यंत्र, आकाशगति, मणि विज्ञान आदि अनेक विज्ञान हैं, जिनकी खोज होनी शेष है। आशा है नवीन विद्वान इनकी खोजों पर अधिक ध्यान देंगे।

मुद्रक—श्रीधर पण्डित
चिंतामणि प्रिंटिंग प्रेस, ८९ जवाहरमार्ग इन्दौर.

प्रकाशक—किशोरीलाल गोयल,
आर्यावर्त कार्यालय, ७२महारानी रोड इन्दौर.



'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

[विदेशी दासता से मुक्त स्वतन्त्र भारत]



बीती निशा, उषा अब आयी,
जग से तिमिर भगाने को ।
विश्व प्रेम स्वातन्त्र्य-मन्त्र की,
जीवन ज्योति जगाने को ।

— 'द्विजेन्द्र

दिनांक १७अगस्त ४७
मूल्य ५) वार्षिक

सम्पादकः— स्नातक उमेशचन्द्र

अंक सं २८
एक अंक)॥

—००—दयानन्द वैदिक मिशन इन्दोर का मुखपत्र—००—

वेदामृत

"स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू"

" तुम्हारे आयुध (अस्त्र-शस्त्र) शत्रुओं के पराजय के लिये स्थिर एवं दृढ हों " ।

हमारा प्रिय देश भारत, हमारी जननी जन्मभूमि भारत, संसार को वैभवशाली बना देनेवाली हमारी स्वर्णभूमि भारत, संसार को सुख प्रदान करनेवाली स्वर्ग सदृश भारत भूमि आज विदेशियों के प्रभुत्व से मुक्त होगई। अभी स्वतंत्र भारत नवजात शिशुके तुल्य अबोध है, असहाय है। हमें इसकी रक्षा करके इसको बलवान एवं समर्थ बनाना है। अपने देश को साँस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक दृष्टियों से विनष्ट करनेवालों या विनष्ट करने की इच्छा रखनेवालों से इसकी रक्षा करना है। अतएव हे देशके वीरपुत्रो ! इस देशकी रक्षा के लिये, इसके शत्रुओंको पराजित करने के लिये उत्तम एवं दृढ अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होजाओ। तुम्हारे ये अस्त्र शस्त्र सदैव शत्रुओं के पराजय के लिये उद्यत रहने चाहिये। तुम्हारे ये अस्त्रशस्त्र दृढ हों जिससे सफलता तुम्हारी अनुगामिनी बनी रहे।

शत्रु के पराजित करने के लिये आयुधों का धारण करना एवं उनका यथावत् अभ्यास आवश्यक है। राष्ट्र की प्रजा अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित रहे। पृथिवी, जल एवं नभ में भारत के वीर अस्त्र शस्त्रों से दीप्तिमान होकर शत्रुओं के मान को मर्दन करते रहें। निरन्तर अजेय भावना भारत के मस्तक को हिमालय सदृश संसार में गौरव से उन्नत रख सके।

हमारे राष्ट्र के विद्वान्, विज्ञान वेत्ता एवं कुशलशिल्पी अपनी प्रतिभा एवं शक्ति को वैज्ञानिक अस्त्र शस्त्रों के निर्माण में लगा दें। हमारे राष्ट्र के वीरगण इन अस्त्र शस्त्रों को धारण कर इन्द्र तुल्य पराक्रमी से हो शत्रुपर वज्रवत् प्रहारकर युद्ध में विजय श्री को प्राप्त हों। हमारे देश के वैभवशाली वैश्य जन अस्त्रशस्त्रों के निर्माताओं व युद्ध के लिये अपने जीवन देने वाले वीरों के लिये अकृपण भाव से, स्वार्थशून्य वृत्ति से, एवं राष्ट्रोन्नति प्रमुख भावना से अपनी अतुल धनराशि प्रदान करें। दीर्घकाल से संचित किये हुए धन को राष्ट्र की सम्पत्ति समझ कर उसकी रक्षा एवं उन्नति में अर्पित करदें।

इस प्रकार वैदिक भावना के उदय होने पर हमारा राष्ट्र शत्रुओं के भय से रहित हो जायगा और खोया हुआ प्रदेश पुनः हमें प्राप्त हो जायगा। क्षात्र बल के अतिरिक्त न तो हम अपने देश की ही रक्षा कर सकते हैं और न भारतसे बाहर प्रदेशोंमें रहनेवाले अपने देश वासियों को सम्मान से जीवित रख सकते हैं। अतएव यदि हमें अपने देश को पुनः अखण्ड रखना है और सशक्त होकर चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करना है तो वेद के इस आदेश का अनिवार्य रूप से देश को पालन करना ही होगाः—

"स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू"

(ऋग्वेद १-३-१८-२) —वीरसेन

गुरुकुल वि. वि. वृन्दावन

अभिषेक दिवस

गुरुकुलीय छात्रों के मानसिक विकास के लिए गुरुकुल में विद्या परिषद की स्थापना है। ३९ वर्ष से परिषद निरन्तर योग्य व्यक्तियों का निर्माण करती रही है। इस वर्ष १-८-४७ को परिषद का नवीन वर्ष आरम्भ हुआ। प्राचीन परम्परा के अनुसार नव निर्वाचित मन्त्रियों का अभिषेक संस्कार कर उन को उत्तरदायित्व सौंपा गया। इस वर्ष के मन्त्रिमण्डल का नव निर्माण इस प्रकार हुआ।—

ब्र.मोहनजी तृतीयवर्ष प्रधानमन्त्री विद्यापरिषद
ब्र.सत्यपालजी अधिकारी,उपमन्त्री विद्यापरिषद
ब्र. वीरेन्द्रजी मन्त्री शाखा परिषद
ब्र. जयदेवजी उप मन्त्री शाखा परिषद
ब्र. रमेशचन्द्रजी मन्त्री बाल परिषद
ब्र. मदनजी उप मन्त्री बाल परिषद

प्राचीन मन्त्री श्री ब्र. विश्वप्रकाशजी स्नातक श्रेणी ने नवीन मन्त्रियों को कार्य भार प्रदान करते हुए परिषद के स्वरूप और आदर्शों का परिचय कराया। अभिषेक यज्ञ की समाप्ति पर नवीन मन्त्रिमण्डल के प्रधान आमात्य श्री ब्र. मोहनजी ने अपनी नवीन नीति की घोषणा की और सदस्यों से सहयोग की प्रार्थना की। अन्त में श्री मुख्यधिष्ठाताजी व अन्य गुरुजनों ने मन्त्रि मण्डल को आशीर्वाद दिया।

तिलक दिवस व हिन्दी दिवस

लोक मान्य तिलक की पुण्य स्मृतिमें सार्वजनिक कार्य क्रम मे ध्वज वन्दना, व तिलकजी की जीवनी पर प्रकाश डाला गया। श्री म. श्रीरामजी ने ध्वजा रोहण किया, श्री रामेश्वरदयालुजी ने तथा सत्यपालजी ने प्रमुख भाग लिया। इसी दिन हिन्दी दिवस के सम्बन्ध में भी सभाकर के विधान परिषद से हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने की मांग की गई। प्रस्तावक थे श्री स्नॉ.नरेदवजी और समर्थक श्रीविश्वप्रकाशजी भावी स्नातक, प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ।

—४ ता. को श्री टण्डनजी गुरुकुल पधारे उनका भव्य स्वागत किया गया। और उनका ओजस्वी भाषण हुआ।

आर्यावर्त

सृष्टि १९७२९४९०४७] दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र [दयानन्द जन्माब्द १२३

वर्ष २-] इन्दौर, रविवार दिनाङ्क १७ अगस्त १९४७, श्रावण सुदी १ वि. सं. २००४ [संख्या २२

राष्ट्र का नव निर्माण

"ओ३म् इडा सरस्वती मही तिस्रा देवीर्मयो भुवः वर्हि सीदन्त्वस्रिधः"

"स्व-भाषा, स्वसंस्कृति तथा मातृभूमि मेरे जीवन में ओतप्रोत हो जाय"।

भारतीय स्वाधीनता विश्व इतिहास की अद्वितीय घटना के रूप में स्मरण की जायगी। आज हम विदेशी दासता से मुक्त हैं और अनुभव कर रहे हैं कि स्वाधीनता क्या और कैसी होती है। शताब्दियों की दासता के बाद आज भारत का भाग्योदय हो चुका है इस प्रसन्नता के साथ साथ हम भारत वासियों के ऊपर एक गम्भीर उत्तर दायित्व भी आ पड़ा है। भारतीय संस्कृति के अग्रदूत के रूप में ऋषि दयानन्द ने और उसके बाद आर्यसमाज ने जिस सांस्कृतिक महत्ता की स्थापना के लिए निरन्तर प्रयत्न किया उस कार्य प्रणाली के लिए अब किसी प्रकार की बाधा हमारे सामने नहीं है। पहले हम कठिनाइयों के सामने कई बार अपने को निष्क्रिय बनाने के लिए अनिवार्यतः बाध्य रहे हैं पर आज सारी शक्तियाँ हमारे हाथ में है शक्ति का स्रोत जनता के हाथ में आगया है। जनता जिस संस्कृति की अनुगामी है उस में अनेकों प्रकार की रूढियाँ पैदा हो गई है। आज हमारा उत्तर दायित्व यही है कि हम प्राप्त स्वाधीनता की रक्षार्थ प्रत्येक भारतीय के जीवन को वैदिक आदर्शों से युक्त बना दें।

वेद के उपर्युक्त मन्त्र में राष्ट्र निर्माण के आदर्शों का उल्लेख है।

इडा (भाषा)- भाषा किसी जाति व संस्कृति के लिए अपना अनुपम महत्व रखती है। भाषा के परिवर्तन से संस्कृतियाँ परिवर्तित हो जाती हैं। अंग्रेजों ने अपना साम्राज्य स्थापित करते समय इस प्रश्न पर गम्भीर विचार किया था और अन्त में भारतीय भाषाओं की उपेक्षा करने का निश्चय किया था। अभीतक अंग्रेजी का मोह हमारे से अलग नहीं हुआ है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का दृढ निश्चय राष्ट्र ने प्रकट किया है पर यह स्मरण रखिये आजतक यदि हिन्दी राष्ट्र भाषा नहीं बन सकी तो उसका कारण हमारी मानसिक गुलामी ही थी। हम अपने व्यवहारिक जीवन में अनावश्यक रूप से अंग्रेजी को महत्व देते रहे तब हिन्दी किस से अपने गौरव की सुरक्षा की आशा करती। आज जो इस मानसिक गुलामी में फसे हुए हैं उन्हें इस दासता से मुक्त होना होगा और उन्हें मुक्त करना हम राष्ट्र भाषा प्रेमियों का कर्तव्य होगा।

सरस्वती (संस्कृति) किसी देश का गौरव उसकी संस्कृति में निहित होता है। यदि हम किसी देश के गौरव का अध्ययन करना चाहें तो वह उसकी संस्कृति के पन्नों में लिखा मिलेगा। आज के नव शिक्षित भारतीय युवकों के हृदयों में भारतीय ऋषि मुनियों, वीर योद्धाओं, कवियों तथा धार्मिक सामाजिक नेताओं और भारतीय रहन सहन, आचार-विचार आदि के प्रति थोडी भी श्रद्धा अथवा प्रेम हमें नहीं मिलता जब योरप के लोग वैदिक साहित्य को सर्वोत्तम कह रहे हैं हमारे युवक उस साहित्य को मिथ्या एवं उपेक्षणीय समझते हैं। आज जब हम एक विदेशी शक्ति को पराभूत कर आगे कदम रख रहे हैं हमें निश्चिंत होकर नहीं बैठे रहना है भारत के निर्माण का भावी प्रोग्राम आज हम आर्यत्व का अभिमान करने वाले युवकों पर यह है कि हम भारतीय जीवन में भारतीयता को ओत-प्रोत कर दें हमारे जीवन की यही साधना हो जीवन का यही आदर्श हो और इसी साधना और आदर्श की प्राप्ति के लिए हम अपने जीवन की बाजी लगा दें। यदि हम भारतीयता के लिए सच्चे हृदय से प्रयत्न करें तो सफलता अधिक दूर न होगी।

मही (मातृ भूमि)— जन्मभूमि, मातृभूमि, पुण्यभूमि का आकर्षण जीवन में होने वाले आकर्षणों में सबसे महान है। संसार का इतिहास मातृभूमियों के लिए किये गये संघर्षों की कहानियों का ही इतिहास है हमारे देश में अब स्वाधीनता सूर्य का उदय हो चुका है। आजतक हमने स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया और आज हमारा दायित्व उस प्राप्त हुए स्वराज्य की रक्षा करना है। आजतक हमारा संघर्ष देश के बाह्य शत्रुओं से देश को मुक्त करना था पर आज उस से भी कठिन काम हमारे ऊपर है और वह यह कि हम अपनी शुद्धि करें। राष्ट्र के साथ विश्वास घात करने वालों के साथ उनके उपयुक्त

व्यवहार करें और उन्हें ऐसी शिक्षा दें, कि फिर कभी कोई भूल कर भी उनका अनुसरण न कर सकें और वे देश द्रोही कृतघ्नता की वह्नि में भस्मसात हो जाय।

जन्म भूमि की सुरक्षा और उसके गौरव को अक्षुण्ण बनाये रखने का जो भार हमारे ऊपर आया है उसे पूर्ण करके ही हम शान्त हो सकेंगे।

वेद के इस मन्त्र में जीवन के आदर्शों का सूक्ष्मता से किन्तु पूर्णता के साथ विवेचन किया है। आर्य युवको! आओ हम सबके सामने राष्ट्रके नव-निर्माण का प्रोग्राम उपस्थित है। आज हमारी परीक्षा का समय है यदि हम प्राप्त की रक्षा और खोये हुए की प्राप्ति की आशा रखते हैं तो हमें इस सांस्कृतिक प्रोग्राम को लेकर आगे बढ़ना होगा। आर्यत्व के गौरव पुरुषों का आशीर्वाद हमें प्राप्त है आज हमारा यही नारा है—

चरैवेति चरैवेति, बढे चलो
बढे चलो!!!—"स्नातक"

विचार कण...

आर्य समाज और भावी राजनीति

वर्तमान परिवर्तनको दृष्टिमें रखते हुए आर्य शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने भारत वर्ष के प्रत्येक धारा सभा के आर्य सदस्यों तथा विधान परिषद के आर्य सदस्यों का तथा अन्य आर्य विद्वानों का एक विशेष सम्मेलन ३-८-४७ को बुलाकर आर्य समाज के भावी राजनैतिक पुरोगम के सम्बन्ध में विचार किया। उस सम्मेलन ने गम्भीर विचार के पश्चात् राजनैतिक विषयों में आर्य जनों का मार्ग प्रदर्शन करने के लिए एक स्थायी समिति निर्माण करने का आग्रह सार्वदेशिक सभा से किया गया था उस सम्मेलन ने इस स्थायी सम्मति के सम्बन्ध में अपना निश्चय प्रकट करते हुए लिखा है कि इस समिति का कार्य हो (१) वैदिक धर्म के राजनीति सम्बन्धी सिद्धान्तों को स्पष्ट रूप से घोषित करे (२) समय समय पर उठने वाले भारतीय राजनैतिक प्रश्नों पर आर्य जनों का मार्ग प्रदर्शन करती रहे।

हर्ष का विषय है कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने उपर्युक्त सम्मेलन के निर्णय को स्वीकार कर लिया है और राजार्य सभा नाम से अपनी एक उप समिति का निर्माण कर दिया है। इस सभा के प्रधान मन्त्री का कार्य भार श्री इन्द्रजी विद्यावाचस्पति को सौंपा गया है।

सार्वदेशिक सभा ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित कर समस्त आर्य जनता से प्रार्थना की है कि वह उपर्युक्त राजार्य सभाके आदेशों का पूर्ण रूप से पालन करे और आर्य समाज के व्यापक संगठन की आदर्श परम्परा को कायम रक्खे।

हम आर्य जनता से सार्वदेशिक सभा के इस निश्चय को हृदय से स्वीकार करने की अपील करते हैं। सार्वदेशिक सभाने अपने इस महत्वपूर्ण निश्चय द्वारा एक बहुत बडा कदम आगे रक्खा है और आर्य जनता की चिर प्रतीक्षित मांग को स्वीकार कर लिया है। अब आर्य जनता का कर्तव्य है कि वह राजार्य सभा के आदेशों का पालन करे और कराने के लिये यत्न करे। भावी राष्ट्र—निर्माण के लिए हमारी यह तय्यारी हमारे संगठन, अनुशासनप्रियता एवं त्याग भावना पर अवलम्बित है। सब दलों का मुंह ताकना छोड अपने आदर्शों का पालन कीजिये युग निर्माता का गौरव आर्य समाज को ही प्राप्त होगा।

राजार्य सभाका आदेश

राजार्य सभा ने स्थापित होतेही राष्ट्र की राजनीतिक सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश देना आरम्भ कर दिया है। एक भ्रमण पत्रिका प्रकाशित कर राजार्य सभा की ओर से आर्य समाजों को आदेश दिया गया है कि वे १७ अगस्त को सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करके निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार कर विधान परिषद के अध्यक्ष, पं. नेहरू तथा राजार्य सभा कार्यालय बलिदान भवन देहलीके पास भेजें।

१ यह सभा भारतीय विधान निर्मात्री परिषद से अनुरोध करती है कि वह हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा तथा देवनागरी लिपि को राष्ट्र लिपिके रूप में स्वीकार करे।

२ यह सभा भारतीय विधान-परिषद से अनुरोध करती है कि वह देश की आर्थिक उन्नति के निमित्त गोवंश की रक्षा तथा वृद्धिको आवश्यक समझते हुए भारतीय विधान मे गोवध का निषेध करनेवाली धारा का समावेश करे।

आर्य समाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में इन प्रस्तावों को स्वीकार करें और उपर्युक्त स्थानों पर भेजे। इन दोनों प्रस्तावों के अधिक विश्लेषण की कोई आवश्यकता नहीं इन दोनों महत्व पूर्ण विषयों पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है।

सिद्धान्त परिवर्तन हो—श्री टंडन जी के विचारों का कई बार उल्लेख किया जा चुका है। इस समय आपने यह आन्दोलन आरम्भ किया है कि देश को अहिंसा की नीति में परिवर्तन कर देना चाहिए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उसे सफलता पूर्वक कायम रखने के लिये वर्तमान अहिंसा उपयुक्त नहीं हो सकती।

आर्य समाज सदैवसे ब्राह्म और क्षात्र शक्तियों के प्रयोग का समर्थक रहा है यदि और आर्य समाज के सिद्धान्तों पर व्यक्तियों का निर्माण होता तो आज की विनाशक घटनाएँ घटित न होतीं। आज देश की बदली हालत को जीवन देने के लिए हमें क्षात्र धर्म का पालन करना चाहिए। श्री टण्डनजी ने जो आन्दोलन आरम्भ किया है राष्ट्र के कर्ण धारों और जनता दोनों को गम्भीर विचार कर शीघ्र ही नीति में परिवर्तन की घोषणा करनी चाहिए।

राष्ट्रीय स्वाधीनता के अजेय सेनानी गण

भारत केसरी

स्व श्री लाला लाजपतराय



जिन्होंने ऋषि दयानन्द की शिष्यपरम्परा में राष्ट्रकेलिए अपना जीवन उत्सर्ग किया था।

महामानव

श्री सुभाषचन्द्र बोस



जिनके जीवन का एक एक क्षण मातृभूमिकी सेवा के लिए है। भारतीय स्वाधीनताके आज के गौरव दिवस में आपका त्याग निहित है।

नव भारत के जन्मदाता

श्री म. गान्धी



भारत की स्वाधीनता के लिए प्रयत्न ही जिनके जीवन का इतिहास है। दक्षिण आफ्रीका में संघर्ष विजयकर भारत को स्वाधीन बना जो अब पाकिस्तान में संघर्ष करेंगे।

बीसवीं शताब्दी के चाणक्य

श्री प. जवाहरलाल नेहरू



अपना सर्वस्व समर्पणकर देश को आजकी स्थिति में पहुंचाया है। आप भारतके अंतराष्ट्रीय गौरव हैं।

भारत के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले

स्वर्गीय व जीवित

स्वर्गीय—

महारानी लक्ष्मीबाई, देवीमैना, नाना साहब फडनवीस, तांत्या टोपे, वीर मङ्गल पाण्डय, सोहनलाल पाठक, बलवन्त फडके, करतारसिंह आत्मासिंह, खुदीराम बोस, हेमू कलानी, दिनेश गुप्ता, रामराव, सत्येन्द्र बसु यतीन्द्रनाथ दास, शेरजंग, गोपीनाथ साहा, अवध विहारी कोतवाल, अमीरचन्द्र, बी जी पिङ्गले, कन्हाईलाल दत्त, काशीराम, रासविहारी बसु, लोकमान्य तिलक, अम्बिका चक्रवर्ती, टेगरा सूर्यसेन, प्रति बाहादुर, गोखले-रानाडे, अनन्तसिंह, मनीदत्त, गणेश घोष, केसर सिंह, प्रतापसिंह, रोशनसिंह, सूफी-अम्बाप्रसाद, राजेन्द्र लाहड, धन्नासिंह, धींगरा, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, लाला हरदयाल, गणेश दामोदर सावरकर, ऊधमसिंह, चित्तपाड, मदमोहन मालवीय। आदि

जीवित—

भाई परमानन्द, वीर सावरकर, राजा महेन्द्रप्रताप, सरदार अजीतसिंह, बटुकेश्वरदत्त पृथ्वीसिंह, शचीन्द्रनाथ सान्याल, जयप्रकाशनारायण, अच्युतपटवर्धन, अरुणा, इन वीर हुतात्माओं और जीवित क्रांतिकारियों तथा असख्य अज्ञात भारत माके सुपुत्रों की जीवनाहुति, तपस्या एवं आत्म-समर्पण का ही परिणाम आज भारत की स्वतन्त्रता है।

भारतीय राष्ट्रके प्रतिनिधियोंने भारत राष्ट्र के नवीन जन्म दिवस पर बलिदान हुए भाइयों के सम्मान में २ मिनट मौन धारण किया। जीवित क्रान्तिकारियों का जीवन आज भी राष्ट्र को प्रेरणा दे रहा है और देता रहेगा। सारा भारत समस्त क्रातिकारियों के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित करता है।

ऋषि दयानन्द

—: स्वराज्य व प्रजा तन्त्र का मन्त्र दाता :—

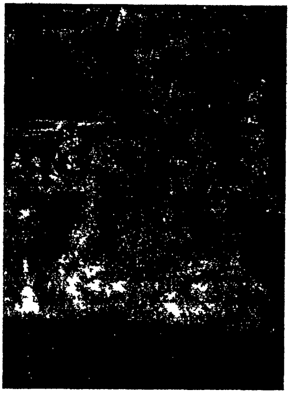
लेखक— स्ना. जयकुमार "जयेश"

स्वराज्य की उत्कण्ठा

करुण क्रन्दन—सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्य कुल में हुए वे अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं। जब रघुगण राजा थे तब रावण भी यहां के आधीन था। महाराजा युधिष्ठिर के राज सूय यज्ञ और महा भारत पर्यन्त यहां के राज्य के ही आधीन सब राज्य थे। ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अबतक भी वह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया, क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह ? (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास)

स्वराज्य सूत्र का दान—अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद परस्पर के विरोध से अन्य देशों की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखंड स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ भी है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोडे राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पडते हैं कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशी राजा होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह से रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। (उत्तम नहीं है) (स. प्र. अष्टम समुल्लास)

फूट का राजरोग—विदेशियों का आर्यावर्त मे राज्य होने का कारण आपस की फूट मतभेद है। जब आपस में भाई भाई लडते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें जो पांच सहस्र वर्ष पूर्व हुई थी उन्हें भी भूल गये। आपस की फूट से कौरव पांडव और यादवों का सर्वनाश हो गया सो तो होगया; परन्तु अब तक भी वह रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुडाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा। उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र हत्यारे स्वदेश विनाशक नीच के "फूट" दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढा रहे हैं, परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट होजाय। (स. प्र. दशम समुल्लास)



ऋषि दयानन्द

प्रजातन्त्र के सिद्धांत

आधिनायकतंत्र नहीं प्रजातंत्र—एक व्यक्ति को राज्य का स्वतन्त्र अधिकार नहीं देना चाहिये किन्तु राजा अर्थात् निर्वाचित सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजाधीन और प्रजा राजसभाधीन रहे। जो राजवर्ग प्रजा से स्वतन्त्र रह तो राज्य में प्रवेश करके (अर्थात् स्वेच्छाचारिता से) प्रजा का नाश किया करे। (स. प्र. समुल्लास)

प्रजा-पति—जो सब में सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव-युक्त महान पुरुष हो उसको राज सभा का पति रूप में मान के सब प्रकार की उन्नति किया करें। (स. प्र. षष्ठ समुल्लास)

शासन सत्ता दैवी अधिकार नहीं—प्रश्न-जो राजा वा रानी अथवा न्यायाधीश वा उसकी स्त्री व्यभिचार आदि कुकर्म करे तो उसको कौन दण्ड देवे ?

(शेष पृष्ठ १४ पर)

अजेय—भावी भारत

* लेखक— श्री यदुनाथ सरकार *

एक समस्या—आज की परिवर्तित राजनीति ने महान् भारत को खण्डित अवश्य कर दिया है पर क्या इस दुर्घटना को हम ऐसेही सहते रहेंगे यह प्रश्न है जो हम भारतीयों को आज विचारना है। पश्चिमी पंजाब सरहद और सिंध के पृथक हो जाने से हिन्दुस्तान के सैनिक संरक्षण का प्रश्न बहुत गम्भीर बन गया है पर यह ऐसा नहीं कि हल न किया जा सके। हिन्दुस्तान का संरक्षण करने के लिए सम्भव है आज से अधिक व्यय करना पड़े पर घबराने जैसी कोई बात दिखाई नहीं देती। सेना के विभाजन की जो रूपरेखा हमारे सामने है उसके अनुसार यह मानना बेवकूफी होगी कि सम्प्रदाय के नामपर सैनिक गण अपने २ क्षेत्रों का चुनाव करेंगे ही। जिनके घर हिन्दुस्तान में हैं वे एकनिष्ठ होकर आनन्द के साथ देशकी सेवा करेंगे। वे पाकिस्तान के पहाड़ी और रेतीले स्थानों में जानेकी कतई इच्छा न करेंगे। पाकिस्तान में धर्मान्ध अफसरों का निर्माण किया जायगा। लेकिन हिन्दुस्तान राष्ट्रीयता के महान् आदर्श के साथ अपना कदम आगे बढ़ायेगा।

आधुनिक सेना— वर्तमान युग में संख्या का कोई महत्व नहीं है। संख्या का महत्व जभी रहा करता है जब कि दोनों सेनाएं बुद्धि, शिक्षण और शस्त्र बल में समान हों। आज का युद्ध अत्यधिक वैज्ञानिक होगया है। उसमें अत्यधिक मेधावी शक्ति की मैकेनिकल निपुणता की आवश्यकता है। पुराने जमाने की कवायद, मझल लोडर बन्दूकें तथा पुराने ढर्रे की आज्ञाएं "दुश्मन को मारने के लिए बन्दूक ऊंची करो" ये सब निरुपयोगी हैं। भावी-युद्ध में पाकिस्तानी मदरसों में या उस्मानियां यूनिवर्सिटी में सीखे हुए सैनिक तथा अफसर आज के आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा से परिपूर्ण सैनिकों के सामने कैसे टिक सकते हैं? आज की आधुनिक सेना की शक्ति संख्या पर उतनी निर्भर नहीं है जितनी कि मशीन गनों आदि की मैकेनिक निपुणता पर वायुयानिक सिगनलिंग साधनों पर, टैंक तथा अन्य यान्त्रिक वाहनों पर और सबसे अधिक शस्त्रों के पुर्जे का तथा विस्फोटक पदार्थों का औद्योगिक क्षेत्र में स्थित कारखानों के सतत निर्माण पर अवलम्बित रहती है। पर, जिन्दा रहने वाला टटपूंजियां तथा मुल्लाओं के अध कचरे विभाग से परिचालित पाकिस्तान क्या उक्त बातें कर सकेगा? उन्हें सुरक्षित पृष्ठ भूमि कहाँ है? आधुनिक सेना-शास्त्र-विशारद संरक्षण की गहराई (Defence in Depth) पर जोर देते हैं यह उनके पास कहां हैं? इस दृष्टि से हिन्दुस्तान पाकिस्तान से दस गुना शक्ति शाली है और रहेगा।

वीर जाति—इस मिथ्या धारणा पर कभी विश्वास न करो कि सरहद की घाटियों से जब जब हिन्दुस्तान पर हमला हुआ है तब तब हिन्दुस्तान ने सर झुकाया है और किसी भी शत्रु को पराजित नहीं किया है। याद रक्खो राजपूतों से बनी हिन्दुस्तानी फौज ने अफगानिस्तान के हिस्सों पर कब्जा किया था। कन्दार में लड़ाई की थी और सत्रहवीं शताब्दी की बाल्ख (Balkh) पर ओक्स Oxus नदी तक हमला किया था उस समय उन मे एक भी ब्रिटिश अफसर न था, न हिन्दुस्तानी सिपाहियों को मजबूत बनाने के लिये गोरी सेनाएँ ही थी। शाहजहांके समय कछवाह और राजपूतों ने हिन्दूकुश की घाटियों का बरफ तथा आंधियों के बीच भी संरक्षण किया था, बर्बर उजबेक और हजारा के विरुद्ध दिल्ली की सेनाओं का संरक्षण किया था। १६७४ में महाराज जशवन्तसिंह राठौर की सेना ने करपा घाटी पर अफगानों को पराजित कर शाही फौज की रक्षा की थी।

अर्वाचीन काल में सिक्खों ने पेशावर और अटक पर विजय पाई और खैबर की घाटी तथा सिन्धु पर पहरा रक्खा, हरिसिंह नलुआ का भूत आज भी सीमाप्रान्त में भय का संस्मरण कराता है।

जर्मनी के राष्ट्रीय गान में एक प्रश्न पूछा जाता है कि:—

मेघ गर्जना करती हुई लहरों की आवाज उठती है— राइन, राइन, ओ जर्मन राइन जब शत्रु आयेंगे तब उन्हे कौन बचायगा?

तब श्रोता गण दिल खोलकर उत्तर देते हैं—

"प्रिय पितृ भूमि जरमन तेरी सच्ची तथा दृढ राइन तेरी पहरा दे रही है"।

इसी प्रकार सिक्ख कह सकते हैं कि उन्होंने अपने स्वाधीन दिनों में सिन्धु पर भरोसा किया था। भूतकाल में सिक्खों ने जो किया वही वे आज आसानी से कर सकते हैं। १८४५-४८ में अंग्रेजों ने खालसा सेनाको पराजित किया उसका एक कारण था— खालसा सेना के नवीन शिक्षा सम्पन्न विदेशी अफसरों ने फौज का साथ नहीं दिया था। इसी प्रकार वेलेजली और सिंधिया के युद्ध में पेरन तथा दूसरे भाड़ेतू अफसरों ने सिंधिया का साथ छोड़ दिया था। समय-समय पर भारतीय सैनिकों को जो असफलताएं मिली बताई जाती हैं उनका कारण यही था कि उन का नेतृत्व विदेशी हाथों में पहुंच चुका था। एक विद्वान लेखक ने इसपर टिप्पणी करते

[शेष पृष्ठ १२ पर]

पहले भी पाकिस्तान बना था

★ लेखक— श्री रमेशचन्द्र बी. ए. लाहौर ★

आज देश की आजादी के साथ पाकिस्तान नाम का दानव हमारे साथ चिपट कर आया है। हम उस दानव की करतूतों से परेशान हैं और उसे दूर भगाने का प्रयत्न करने पर भी नहीं भगा सके हैं और आज वह दानव अपनी क्रीड़ा का अधिकार पा चुका है इसलिए हम दुखी हैं। परन्तु घबड़ाने की कोई बात हो सो बात नहीं होनी चाहिए। इतिहास अपने को सदैव दुहराया करता है आज भी इतिहास के पन्ने दुहराये जा रहे हैं एक पन्ना काला है और बाकी सब स्वतन्त्रता के शहीदों की कहानियों से स्वर्णांकित हैं। पाकिस्तान का जहां तक प्रश्न है वह एक बार १५ वीं शताब्दी में बना था उसकी नींव आज से भी मजबूत थी पर वह टिक न सका इसलिए आज का पंगु पाकिस्तान टिक सकेगा इसे कभी मत स्वीकार कीजिए।

१५ वीं शताब्दी में अफगानिस्तान से लेकर बंगाल तक मुस्लिम राज्य था। मुस्लिम राज्य में सीमा- प्रांत, पंजाब, सिन्ध, काश्मीर, युक्त-प्रान्त, बिहार और बंगाल शामिल थे। मुस्लिम राज्य का दूसरा क्षेत्र गुजरात मालवा और खानदेश था। इन दोनों के बीच में हिन्दू इलाका राजपूताना और मध्य प्रदेश था। दक्षिण में मुस्लिम राज्य नर्मदा से तुंगभद्रा तक फैला हुआ था जिसे कि बहमनी राज्य कहा जाता था उसके दक्षिण में विजयनगर का राज्य था।

मुस्लिम सत्ता के लिए इस से बढ़कर कोई स्वर्ण-संयोग नहीं हो सकता था। मुसलमान उत्तर में बड़ी अच्छी स्थिति में थे। हिन्दुओं की स्थिति चक्की के दो पाटों के बीच की तरह थी। परन्तु सब ओर से घिरे रहने के कारण हिन्दुओं ने अपनी रक्षा के लिए मोर्चा बनाया और लम्बे समय तक ऐतिहासिक संघर्ष किया। एक ओर साम्राज्य और दूसरी ओर माण्डलिक नरेश पर फिर भी शक्ति संतुलन में साम्राज्य की अपेक्षा हिन्दुओं को अधिक सफलता मिली प्रान्तीय मुस्लिम शासकों ने हिन्दुओं से मेलका हाथ बढ़ाया। एक ओर हिन्दू राज्य और दूसरी ओर मुस्लिम साम्राज्य दोनों दलों में संघर्ष जारी रहा। मालवा के राजा महमूद के हिंदू मंत्री ने हिंदुओं का साथ दिया मुसलमानों के पैर उखड़ गये परन्तु हिन्दुओं की शक्ति भी पर्याप्त क्षीण हुई। भारत की शासक और योद्धा दोनों संस्थायें अपने संघर्ष से कमजोर थी इसलिए बाबर ने आकर मुसलमानों को पानीपत में और हिन्दुओं को खानवा में परास्त कर मुस्लिम राज्य के स्वप्न को भंग कर दिया। और एक नये साम्राज्य को जन्म मिला जो मुस्लिम साम्राज्य का ही स्वरूप था इसलिए भारतीय जनता को उससे सन्तोष न हुआ और वह अपने संघर्ष के लिए तय्यारियाँ करती रही।

पाकिस्तानी भावना का इस्लाम के साथ जन्म से सम्बन्ध रहा है उत्तर भारत में १५ शताब्दी और उसके आस पास जो हुआ उस से भी अधिक विकट काण्ड इस भावना का दक्षिण भारत में हुआ। हिन्दू भी सचेत थे उन्होंने अपनी रक्षार्थ विजय नगर राज्य की स्थापना कर बड़ी राजनैतिक बुद्धिमत्ता से काम किया और यहां भी संतुलन पैदा कर दिया। अलाउद्दीन खिलजी के राज्य की स्थापना के साथ ही मुस्लिम राज्य का उद्देश्य एक मात्र यही हो गया था कि जो कुछ हिन्दू है जितना भी हिन्दुत्व है उसे मटिया मेट कर दिया जाये। इतिहास लेखक सेवेल लिखता है— "भारत में मुस्लिमों का एक ही उद्देश्य रह गया— हिन्दू गांव और नगरों का विध्वंस और विनाश, हिन्दू धर्म और संस्कृति और सत्ता के प्रतीक चिन्हों को मटिया मेट करना। हिन्दुओं को धर्म से च्युत करके मुसलमानों की वृद्धि करना"।

यही उद्देश्य दक्षिण में बहमनी राज्य का रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि आर्य धर्म, संस्कृति की रक्षार्थ विजय नगर राज्य की स्थापना की गई। एक और बहमनी राज्य था जो भारतीयता को नष्ट करने पर तुला था और दूसरी ओर विजय नगर राज्य था जो इनके अस्तित्व एवं रक्षार्थ लड़ रहा था। इन दोनों के बीच होने वाले युद्धों को इतिहास में टोटल वार कहा गया है अर्थात् "निष्कर्ष युद्ध" "अन्तिम युद्ध" इन युद्धों में जिस भयंकरता से संघर्ष हुआ वह एक वेदना पूर्ण इतिहास है।

(१) बहमनी राज्य के राजाने शपथ ली कि जब तक विजय- नगर के बदले १ लाख हिन्दू न मार लेगा तब तक चैन न लेगा। उसने ४ लाख हिन्दू तलवार के घाट उतार दिये। इन में केवल ४० हजार फौजी थे शेष निरीह नागरिक (२), बहमनी राजा मुजाहिद ने विजय नगर पर चढ़ाई करके ८० हजार को मौत के घाट उतार दिये। (३) अहमदने फौजियों के अलावा २० हजार को मार डाला।

इतिहास कार सेवेल लिखता है— विजेता मुसलमानों ने विजय नगर के लोगों को बिना दया के मौत के घाट पर उतार दिया। मन्दिर और महल ध्वस्त कर दिये, मूर्तियां मिटा दी गईं और विशाल नरसिंह मूर्ति नष्ट कर दी गई। विट्ठल स्वामी की मूर्ति नदी में ढकेल दी गई। एक दिन ऐसा आया जब सारा नगर रक्त और विध्वंस की होली में जल रहा था वहां लाशें ही लाशें थीं।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

स्वराज्य के बादः—

राष्ट्र निर्माणका भावी आदर्श-रामराज्य

आज जबकि एटम बम की पीढी शुरू हो गई है, तब किसका अस्तित्व सुरक्षित है यह कोई नहीं जानता। आज जातीयता मानों राष्ट्रीयता को निगले जा रही है। जातीयता का नशा इस प्रकार चढ़गया है कि उसके उसपार क्या होगा किसी को न इसकी चिन्ता है न मान हिटलर और मुसोलिनी व्यर्थ ही नहीं जन्मे उन्होंने जातीयता की जो संकीर्ण परम्परायें कायम की हैं वे यों ही उनके साथ अस्त नहीं हो गई हैं। भारत भी आज उसी संकीर्ण परम्परा का शिकार हो विभक्त हो गया है। भारत को जिन परिस्थितियों में से गुजरना पड रहा है वहां जातीयता और राष्ट्रीयता जीवन मरण के संघर्ष में संलग्न हैं। कोई नहीं कह सकता इस संघर्ष का अन्त कहां होगा? जीवन की जो खूब सूझती है, जीवन के जो महान रहस्य हैं उनकी ओर से हम उपेक्षा किये आगे बढते चले जाने में तत्पर हैं। जब पण्डित और ब्रिरहमन तथा धार्मिक नेता भी प्रणा के राग अलाप रहे हों तब देवत्व का पलायनन तो होकर ही रहेगा।

इस वातावरण में भी एक आशा की दिव्य ज्योति सच्चे आर्य राष्ट्र भक्तों के हृदयों में प्रकाश कर रही है। आज हम स्वराज्य भवन में प्रवेश कर चुके हैं, चिर कालीन दासता से मुक्ति हमारे जीवन की महान साधना आज पूरी हो चुकी है परन्तु जो कुछ हमने पाया है उसका अर्थ यदि इतना ही है कि अपने घर में अपना राज तो हमें अभी बहुत कुछ आगे बढाना है स्वराज्य जिन भौतिक अर्थों तक सीमित है हमें उसमे से ही सन्तोष नहीं कर बैठना है हमारे सामने इस भौतिक महत्ता से भी बढकर आध्यात्मिक नैतिक राज्य की स्थापना का आदर्श होना चाहिए। भारतीय इतिहास के शब्दों में हम अपने आदर्श को राम राज्य की संज्ञा देसकते हैं। इस प्रकार स्वराज्य के बाद हमारा अगला कदम राम राज्य की स्थापना होना चाहिए।

राम राज्य में आध्यात्मिकता का पुट है, प्रभाव है धड़कन है। आध्यात्मिकता के बिना स्वराज्य केवल कलह और संघर्षों का ही स्रोत रहेगा। राम राज्य का अर्थ किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष का राज्य नहीं है। राम राज्य तो साम्प्रदायिकता, जातीयता इन सबसे परे की चीज है। राम राज्य का जो वास्तविक अर्थ है, जो परिधि है, जो परिभाषा है, उसका किसी वर्ग विशेष से सम्बन्ध स्थापित करना राम राज्य की महत्ता को कम करना है। राम राज्य का आदर्श सार्व भौमिक है। सार्व भौम आदर्श अपनाने वाला भी सार्व भौम होना चाहिए तभी वह आदर्श कायम रह सकता है।

गोस्वामीजी ने राम राज्य का वर्णन करते हुये लिखा है कि—

"राम राज्य बैठे त्रै लोका
हरषित भये सब शोका"

इस का सीधा सुस्पष्ट अर्थ यही है कि रामराज्य का सर्वोपरि उद्देश्य यही था कि लोगों का शोक मिटे याने वह सब परिस्थितियाँ रामराज्य में नष्ट हो गई जिन से प्राणियों को कष्ट होता है प्राणी दुखी होते हैं। यह परिस्थिति फलतः गरीबी है और जब गरीबी चली जाती है तब सब लोग खुश हाल हो जाते हैं। फिर दुख कहां रहेगा।

आगे तुलसीदास फिर कहते हैं—

बयरु न कर काहू सन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई॥
बरनाश्रम निज २ धरम।
निरत वेद पथ लोग॥
चलहिं सदा पावहि सुखहिं।
नहि भय सोक न रोग॥

इस का यही अर्थ है कि लोग अपने अपने धर्म का पालन करते थे धर्म और व्यवसाय को निश्चिन्तता से करते थे, धर्म और व्यवसाय के कारण किसी एक दूसरे से बैर नहीं था और इन सब का परिणाम ऐसे समाज की स्थापना था जिसमें डर नहीं था, दुःख नहीं था और रोग नहीं था।

इस आधार पर राम राज्य का अर्थ आज कल के अर्थों में शुद्ध प्रजातन्त्र कहा जा सकता है। प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों में प्रमुख धर्म पालन करने की स्वतन्त्रता व्यवसाय की स्वतन्त्रता और विचार की स्वतन्त्रता है और यही राम राज्य के आधार थे। राम राज्य व्यक्ति से व्यक्ति का डर निकालने में समर्थ हुआ यह उसकी कितनी बड़ी सफलता थी। आज मनुष्य का मनुष्य दुश्मन बना हुआ है ऐसे समय में जो रामराज्य को अपना आदर्श मानकर आगे बढ़ेगा वही सच्चा मानव कहायगा। वही मानव के आन्तरिक गुणों के विकास और उन्हें पूर्ण बनाने में सच्ची सफलता प्राप्त कर सकेगा।

रामराज्य के सम्बन्ध में गोस्वामीजी लिखते हैं कि—

दैहिक दैविक भौतिक तापा,
रामराज्य काहू नहीं व्यापा।

लेखिका—
स्नातिका दयावतीजी
विद्याविभूषिता

मातृ वन्दना

अप वर्ग से अनोखी मन मोहनी छटाएं ।
सुख साज स्वर्ग को भी पाकर न भूल जाएं ॥
हां पूज्य मातृ भू की मन में बसी मढैया ।
रमतीं रहें रगों में वे रीतियां रवैया ॥
तडफे हवेलियों में टूटी कुटी गवाँ के ।
भूलें न दृश्य तेरे प्रिय पावनी प्रभा के ॥
गृह द्वार वृक्ष बागों सरिता सरोवरों में ।
भूला रहे हृदय वह उन आंगनों घरों में ।
शिशु से किशोर होकर जिसमें रहे सहे हैं ।
के भूठ में जहां की रज चाटते रहे हैं ॥
जिसमें रहे सहे हैं घुटनों जहां चले हैं ।
जिस माननी मही में पड लोटते रहे हैं ।
वे झील ताल गड्ढे मन में समा रहे हैं ।
सम्मान मान सरका मन से मिटा रहे हैं ॥
जिसमें जिये उसी को सुख स्रोत मानते हैं ।
मलयाचली हवाके झोंके न चाहते हैं ॥
यदि स्वर्ग के लिए भी सुरव्योम यान लावें ।
यह प्रार्थना उन्हें तो प्रिय पाठको सुनावें ॥
बस प्राण ही अकेले परमेशने दिए हैं ।
यह अंग मातृ भू ने पाले बडे किए हैं ॥
वे वज्र के हृदय हैं इसके लिए न तडपें ।
वे नयन ही नहीं जो इसके लिए न बरसें ॥
अवकाश अल्प दीजे भू अंक में गिरेंगे ।
जिस गोद में जिए हैं उस गोद में मरेंगे ॥
गल जाय हिम में या फिर उत्तप्त तापसे हों ।
भगवान् किन्तु न्यारे मत मातृ भूमि से हों ॥ *

---

* गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की एक प्रार्थना जो मातृ भूमि के प्रति गाई जाती है श्री. आ. सुधीन्द्र नाथ जी सिद्धान्त सिरोमणि के सौजन्य से प्राप्त-सं-

---

(पृष्ठ ९ का शेष)

किसी आदर्श समाज और आदर्श प्रजातन्त्र का क्या स्वरूप होना चाहिए यह निश्चय ही रामराज्य में हम स्थल-स्थल पर पाते हैं। कहा गया है कि रामराज्य में देह का, संसार का और आधि भौतिक (दैविक) कष्ट किसी को नहीं होता था इसे अत्युक्ति कहा जा सकता है पर इस कथन का जो आधार है वह यह कि लोगों की अकाल मृत्यु नहीं होती थी और न जनता पौष्टिक पदार्थों या दुर्व्यसनों के कारण हीन स्वास्थ्य थी। रामराज्य में स्वास्थ्य विभाग का आदर्श था इस प्रकार के प्रयत्न किये जाय कि अकाल मृत्युएं न हो अथात् महामारी आदि न फैलें और न ही सर्व साधारण का स्वास्थ्य चिन्ता जनक हो और यदि इन में से कुछ होता तो उसका दायित्व राज्य पर था। रामराज्य जनता के स्वास्थ्य के प्रति सजग था। रामराज्य मे कोई दरिद्र न था- अर्थात् धन का वितरण समान था, कर-प्रणाली ऐसी न थी कि कहीं महल खडे हों कहीं फूसकी झोपडी। आज समाजवाद का नारा इसी आदर्श की प्राप्ति के लिये लगाया जारहा है। गरीब और अमीर के बीच की खाई को दूर कर ऐसे समाज की स्थापना का आदर्श जिसमें दरिद्रता न हो हमारे लिये रामराज्यही हो सकता है। रामराज्य में न कोई मूर्ख रहेगा न लक्षणों से हीन, अर्थात् स्वाभाविक विकास में किसी को किसी प्रकार की असुविधा न रहेगी। स्त्री कथित अन्त्यज, मजदूर, किसान सबको विकास का समान अधिकार प्राप्त होगा और उसका दायित्व राज्यपर होगा।

उपर्युक्त विवरण रामराज्य की एक झलक है। रामराज्य शासनकी वह प्रणाली कही जा सकती है जिसमें प्रत्येकको प्रत्येक प्रकारकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता थी, रामराज्य शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति सजग था और धन का वितरण समान था और जन साधारण जीवन यापन आध्यात्मिक आदर्शोंपर करता था।

इन सब बातों से रामराज्य का बहुत अधिक महत्व है। स्वराज्य को स्थिर रखने के लिये अगला और बडा कदम रामराज्य को बनाना चाहिये। संस्कृति विशेष से सम्बन्धित होनेपर भी (जिसपर हम आर्य मात्र गर्व अनुभव करते हैं) रामराज्य किसी विशेष वर्गकाही नहीं है। रामराज्य तो अन्तिम निचोड में सम्प्रदाय विहीन, संकीर्ण जातिवाद विहीन मानवता के उच्चतम आदर्शोंपर अवस्थित समाज की स्थापना का जनक है।

स्वराज्य की देहली में प्रविष्ट होतेही रामराज्य के अन्तिम उद्देश्य की पूर्ति का सबसे अधिक भार हम आर्योंपर पड गया है। आजसे हमारे जीवन की साधना का एक मात्र लक्ष्य रामराज्य के उच्चतम विकसित सिद्धान्तों का प्रसारही होना चाहिये। रामराज्यही हमारी कठिनाइयोंको ज्ञान और संस्कृति के आधार पर हल कर सकता है इसलिए स्वराज्य के बाद हमारा अगला कदम रामराज्य की स्थापना होना चाहिए।

क्रांति का प्रथम दूत—श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा

[लेखक— श्री मोहनजी प्रधान मन्त्री विद्या परिषद गुरुकुल विश्व विद्यालय, वृन्दावन.]

विदेशी दासता से भारत को मुक्त कराने के लिए १८५७ के बाद सबसे पहला काम जिस व्यक्ति ने किया उसे आज के स्वातन्त्र्य उत्सव के अवसर पर भुलाया नहीं जा सकता। ऋषि दयानन्द के हृदय में आर्यत्व और उस की रक्षार्थ आर्यावर्त की स्वतन्त्रता के लिए जो लगन थी वह इतिहास का प्रत्येक पाठक भली भांति जानता है। ऋषि दयानन्द को केवल धार्मिक अथवा सामाजिक नेता मानना उनके साथ विश्वास घात करना है। ऋषि दयानन्द १९ वीं शताब्दी के चाणक्य कहे जा सकते है। धार्मिक शुद्धि, सामाजिक सुधार आदि उनके सब कार्यों का एक मात्र लक्ष्य भारत वर्ष की आजादी प्राप्त करना ही था। ऋषि दयानन्द ने अपने भारतीय स्वाधीनता के लक्ष्य की पूर्ति के लिए कई क्रान्तिकारी कार्य किये। स्वदेश प्रेम की जो ज्वाला उनके हृदयमें सुलग रही थी इस से उन्होंने अनेकों भारतीयोंके हृदयां में प्रकाश पैदा कर दिया स्वतन्त्रता की ज्योति जगा दी। ऋषि दयानन्द ने जिन व्यक्तियों को स्वाधीनता संग्राम का सैनिक बनाया उनमें सर्व प्रथम आदरणीय श्री श्यामजी कृष्ण वर्माका नाम हमें स्मरण हो आता है। ऋषि के शिष्य बनकर आपने विदेशों में जिस प्रकार क्रान्ति को जन्म दिया उसी ने वीर सावरकर जैसे व्यक्तियों को जन्म दिया था।

क्रान्ति की भावना श्री श्यामजी मे स्वामीजी के सम्पर्क में आते ही उत्पन्न हो गई थी। ऋषि जैसा गुरु पाकर कौन क्रान्ति कारी न बनता। देश के अन्दर अंग्रेजों की उपस्थिति श्री श्यामजी के लिए असह्य हो गई थी और वे अंग्रेजों को एक क्षण भी भारत में नहीं देखना चाहते थे। इसी समय एक घटना घटित हुई पूना में मिस्टर रैण्ड की हत्या की गयी, सारे प्रदेश में गुप्त अनुसन्धान आरम्भ हो गया। अनेक नवयुवक अनावश्यक रूप से पुलिस की चपेट में आगये। एक अंग्रेज की हत्या का बदला अनेकों भारतीयों के उत्पीडन से चुकाया गया। पुलिस ने श्यामजी को भी जो उन दिनों बम्बई में थे फांसना चाहा। जब श्यामजी ने पुलिस से अपने को सुरक्षित न देखा तब अपने गुरुस्वामीजी का आदेश ले लन्दन चले गये। श्री स्वामीजी ने लन्दन जाने से पूर्व राजनैतिक उपदेश दिया था जिसका पालन श्यामजी ने अपने जीवन पर्यन्त किया। लन्दन जाकर श्यामजी आराम से नहीं रहे और न साम्राज्यवादियों को चैन की नींद लेने दी।

विदेश में शत्रु के घर में शत्रु से लोहा लेना सर्व साधारणका काम नहीं होता। श्री श्यामजी ने अपने आन्दोलन को व्यापक रूप देने के लिए एक युक्ति से काम किया लन्दन में शिक्षा प्राप्यर्थ आने वाले भारतीय विद्यार्थियों का संगठन करना उन्होने अपनी योजना का मुख्य अंग बना लिया और भारतीय विद्यार्थियो के आकर्षण के लिए छात्र वृत्तियां स्थापित की। उनका विचार था कि भारतीय विद्यार्थी स्वाधीन देशों के स्वाधीन वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश लौटने पर देश में स्वाधीनता का प्रचार करें। उन्होंने अपनी विचार धारा को व्यापक रूप देने के लिए लन्दन में इण्डिया होम रूललीग स्थापित की तथा " इन्डियन सोशियोलाजिस्ट " नामक पत्र प्रकाशित किया।

थोडे ही दिनों में श्यामजी के पास एक बहुत बडा शिष्य समाज एकत्रित हो गया। इन एकत्र होने वालों में श्री विनायक दामोदर सावरकर भी थे। इस संगठनमें शीघ्र ही ऐसे व्यक्तियों की संख्या बढने लगी जो विद्वान और बुद्धिमान होने के साथ साथ मंजे हुए देश भक्त भी थे।

श्यामजी का यह भारतीय दल और उनका भारतीय भवन विदेश में देश भक्तों का एक अच्छा केन्द्र बन गया। थोडे ही दिन मे इस पर पुलिस की आंखे जमीं और ८ जुलाई १९०७ में पार्लियामेंट के एक सदस्य ने यह प्रश्न किया कि क्या सरकार श्यामजी कृष्ण के विरुद्ध कुछ करने विचार कर रही है ?

इस प्रश्न के फल-स्वरूप परिस्थिति ऐसी हो गई कि श्यामजी को अपना निवास पेरिस के लिए परिवर्तित करना पडा। पेरिस में उन्हें लन्दन से कहीं अधिक स्वतन्त्रता पूर्वक काम करने का मौका मिला। पत्र अभी तक लन्दन से ही निकल रहा था। ब्रिटिश की साम्राज्यवादी सरकार इसे कैसे सहन कर सकती थी। १९०९ में पत्र के मुद्रक पर मुकद्दमा चला और उसे कडी सजा दी गई। बाद में जिन व्यक्तियों ने प्रश्न का भार अपने ऊपर लिया उन्हें भी परेशान किया गया। और अन्त में श्यामजी को पत्र बन्द करना पडा।

भारत छोडो का नारा— ऋषि दयानन्द ने स्वदेशी एवं विदेशी शासन का जो सिद्धांत घोषित किया था उसके अनुसार श्यामजी ने सबसे पहिले भारत छोडो का नारा लगाया था वे लिखते हैं:—

"ऐसा मालूम होताहै कि भारतवर्ष में किसी भी आन्दोलन के लिए गुप्त होना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकार को होश में लाने के लिए एक मात्र

उपाय क्रान्ति का प्रयोग जोर शोर से करना ही है और यह प्रयोग तब तक किया जाय जब तक कि अंग्रेज भारत छोड कर भाग न जांय"

गदर दिवस— लन्दन में भारतीय स्वाधीनता के प्रथम संघर्ष की पुण्य-स्मृति में श्यामजी ने बडी धूम-धाम से गदर-दिवस मनाया जिससे लन्दन की सरकार और जनता में एक तहलका मच गया लन्दन से छाप-छाप कर क्रांतिकारी साहित्य भारत भेजा गया। ऐ शहीदो ! शीर्षक पर्चा भारत में क्रांति की लहर फैलाने वाला सिद्ध हुआ जिस में गदर को भारतीय स्वाधीनता का प्रथम महान युद्ध कहा गया था। श्री मदनलाल धींगरा द्वारा लन्दन में कर्नल वाईली की हत्या से इस दल का एक अपूर्व गौरव कायम हो गया। इस प्रकार श्यामजी और उनके साथियों ने देश की स्वाधीनता के लिए अपने जीवन का जो उत्सर्ग किया था जिस त्याग-तपस्या से स्वाधीनता की नींव रक्खी थी आज वह सफल बन कर हमारे सामने है।

आर्य समाज को इस बात का गौरव है कि धार्मिक तथा सामाजिक सुधार के कार्यक्रम के साथ साथ उसके श्री श्यामजीकृष्ण जैसे वीर सेनानियों ने राजनैतिक दृष्टि से आर्यसमाज के महत्व को स्थापित कर भारत की सेवा की। भारतीय स्वाधीनता के पुण्य अवसर पर सारा भारत उस ज्योतिर्धर ऋषि दयानन्द और उनके शिष्य श्री श्यामजी कृष्ण के प्रति श्रद्धांजलियाँ अर्पित करता है।

[शेष पृष्ठ ८ का]

मुसलमानों ने यह कीमत तो पाई लेकिन पाकिस्तान फिर भी नहीं स्थापित हो सका। अब औरंगजेबने स्वप्न लिया तो अंग्रेज आ धमके आज की स्थिति में पाकिस्तान अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के अन्तर्गत कायम होने जा रहा है पर स्मरण रखिये इतिहास का पन्ना हमसे कह रहा है कि पाकिस्तानी अपनी धर्मान्धता में इस अवसर से भी लाभ न उठा अप रों आप कुल्हाडी मार बैठेंगे। हमें सदैव अपनी और हमे अपना समझने वालों की रक्षार्थ सतर्क और सन्नद्ध रहना चाहिए फिर कोई शक्ति पाकिस्तान को कायम नहीं रहने दे सकती।

-पृष्ठ सात का शेष-

हुए ठीक ही लिखा है "शेरों का नेतृत्व गधों के हाथ में पहुंच गया था। लेकिन नवीन भारत में यह गल्ती सम्भव न होगी। नये भारत के सैनिक अफसर मांडे के टर्ट-विदेशी वेदुरा, कोर्ट, अलार्ड, एवीटेबल आदि से कहीं ऊंचे होंगे और देश उनपर गर्व कर सकेगा। हिन्दुस्तानी सेना में २३.७ प्रतिशत मुस्लिम और १६.३ प्रतिशत सिक्ख अफसर आयेंगे। यह बुद्धिमानी का काम होगा कि सिक्खों की संख्या दुनी कर दी जाय और सतर्कता के साथ राष्ट्र की वफादारी का निभाने का शिक्षण सैनिकों को मिले।

ऋषि दयानन्द ने एक स्वप्न लिया था। भारतीय नरेशों को प्रबुद्ध कर उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने और भारत की खोई हुई आजादी को उनके द्वारा वापिस लानेका वह स्वप्न उस समय पूर्ण न हो सका पर आज वह आजादी आ चुकी है और अब उससे आगे का स्वप्न उसे कायम रखने और महान् भारतके निर्माणका हमें पूरा करना है। जिन्हें मातृ भूमि भारत से प्रेम है - वे सब आधुनिक भारतको शक्तिशाली बनायें, रंग जाति पाति का भेद भाव मूक जनता की संरक्षा के लिये, उसे भरपेट भोजन देने के लिये शिक्षित करने के लिये एकसाथ इकट्ठा हो। एकाकी रहनेकी स्वार्थ वृत्ति छोड एकता की ओर आगे बढे। आज भारत के सम्मान में एक गहरा धक्का पहुंचा है मुस्लिम लीगकी भांति एक लीग फ्रांसमेंभी हो चुकी है—कैथोलिक लीग आफ फ्रांस इसने भी देशके साथ विश्वासघात किया था। विदेशी लोगोंकी मदद बुलाकर सेंन्ट वार्थीलो म्यूजडे मे कत्ले आम कराया और फ्रेंचोंने फ्रेंचो का खून बहाया। पर यह अधिक समय तक इस धर्मान्धता पर टिक न सकी और उसका सर्वनाश हो गया। आज जो दुर्घटना हमारे सामने है उसका प्रतीकार करने का हममें साहस होना चाहिये। हमारे शत्रु हमारे उन्नति पथ को कण्टकाकीर्ण बना सकते हैं उसे खून से रंग सकते हैं अगर दुनियाकी कोई ताकत चाहे वह कार्टन क्लब और व्हाईटहॉल हाऊसही क्यों न हो हमारी उन्नति को नहीं रोक सकती। हम अजेय हैं और अजेय बनकर रहेंगे।

—: यह इन्दौर है :—

झण्डा नहीं बदलने देंगे—

इन्दौर राज्य हिन्दू सभाने अपनी कार्य समिति का एक विशेषाधिवेशन कर इन्दौरमें राजनैतिक परिवर्तन की सम्भावनाओं को लेकर जो अफवाहें फैल रही हैं उनपर विचार किया। प्रमुख विषय होल्कर राज्य के झण्डे में परिवर्तन करने का प्रश्न। यद्यपि इस अफवाह को अधिक महत्वपूर्ण नहीं समझा जारहा परन्तु फिर भी इस ओर सभाने जनता का और राज्य का ध्यान आकृष्ट किया है। सभाने होल्कर राज्यके ध्वजमें किसी प्रकार का परिवर्तन न हो इसके लिये एक उपसमिति का निर्माण कर दिया है जिसके संयोजक श्री. कन्हैयालालजी शर्मा इन्दौर हैं।

अहिल्योत्सव-१३ सितम्बर-

लगभग एक मास पश्चात् १३ सितम्बर को होल्कर राज्य की श्रद्धामयी मां महारानी अहिल्याबाई का निर्वाण दिवस है अहिल्योत्सव कमेटी इन्दौर के मन्त्री श्री. उदयभानुने एक अपील प्रकाशित कर जनता से इस दिवस को बड़ी धूमधाम से मनाने की प्रार्थना की है। और जनता से इस उत्सव को सफल बनाने के लिये आर्थिक सहायता की मांग की है।

प्रजा-मण्डल का गाऊ अधिवेशन

चिर प्रतीक्षित गाऊ अधिवेशन आखिर ९-८-४७ को सम्पन्न हो ही गया। श्री. पटुलेकरजी आर्य की अध्यक्षता में उपस्थित जन समूह ने राज्यमें उत्तरदायी शासन की स्थापनाके लिये अपने निश्चय की घोषणा की और उसके लिए प्रयत्नशील रहने की प्रतिज्ञा ली।

शिक्षा-विभाग में पोल—

इन्दौर के कई सरकारी स्कूलों में जब शिक्षकों की कमी के कारण कक्षायें खाली पडी रहती हैं तब योग्य अध्यापकों को जिन्होंने पहले से प्रार्थना पत्र भेजकर अपनी सेवायें देनी चाही हैं उन्हें सेवा का अवसर नहीं दिया जारहा है। इसके विपरीत कहीं कहीं तो कम योग्यतावाले अध्यापकों को रखकर इस ओर और भी उपेक्षा से काम किया गया है शिक्षा-विभाग के अधिकारियोंको इस ओर शीघ्र ध्यान देकर स्थितिका स्पष्टीकरण करना चाहिये।

— एक नागरिक



— WANTED —

Wanted a trained graduate preferably one who is specialist in Geography for an A V M School in the grade of Rs 75—5—100 E B 10/2—150 Apply to the Inspector of Schools, Rajgarh (Biaora) C I (Via) Bhopal

(पृष्ठ ६ का शेष)

[उत्तर]—सभा, अर्थात् सभा के सदस्यगण उनको दण्ड दे उनको तो प्रजा पुरुषों से भी अधिक दण्ड दिया जाना चाहिए।

[प्रश्न]—राजादि उन प्रजा जनों से दण्ड क्यों ग्रहण करेंगे ?

[उत्तर]—राजा भी एक पुण्यात्मा भाग्य शाली मनुष्य है, जब इसी को दण्ड न दिया जावे और वह दण्ड ग्रहण न करे तो दूसरे मनुष्य दण्ड क्यों ग्रहण करेंगे, और जब सब प्रजा और राज्याधिकारी धार्मिकता से दण्ड देना चाहें तो राजा अकेला क्या कर सकता है। अगर ऐसी व्यवस्था न हो तो राजा या प्रधान, और सब समर्थ पुरुष अन्याय में डूब कर न्याय धर्म को डुबाकर सारी प्रजा का नाश कर स्वय नष्ट हो जायेंगे।

[स. प्र. षष्ठ समुल्लास]

ऋषि दयानन्द के साहित्य में से ये थोडे से उद्धरण यहां दिये गये हैं। इन उद्धरणों के एक एक शब्द से भारत की स्वाधीनता एवं विशुद्ध वैदिक प्रजातन्त्र का सन्देश निकल रहा है। भारतीय स्वाधीनता एवं आदर्श प्रजातन्त्र की स्थापना के लिए १९ वीं शताब्दी में जब विदेशी राज्य सर्वथा निरंकुश था और उसके विरुद्ध कुछ कहना मृत्यु का आलिंगन करना था ऋषि ने ऋतंस्वजेय न नरेन्द्र भीत्या के अन्तर्नाद के साथ वैदिक राष्ट्रीयता की स्थापना की एवं आदर्श प्रजातन्त्र का स्वरूप सामने रक्खा और आर्यावर्त के निवासियों को विदेशी दासता से मुक्ति के लिए स्वदेशी राज्य की महत्ता का पाठ पढाया था। ऋषि के जीवन की एक साध थी स्वतन्त्र आर्यावर्त की स्थापना—इसके लिए उन्होंने कठोर तपस्या की जीवन का प्रत्येक क्षण इसी चिन्तन में लगाया देशी नरेशों से भिक्षा माँगी और अपने शिष्यों को विदेशों में क्रान्ति के लिए भेजा इस प्रकार आज की भारतीय राजनीति में ऋषि दयानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज्य के लिए सबसे अधिक किया उन्होंने उस मार्ग का निर्माण किया था जिसपर चलकर आज हम इस मंजिल पर पहुँच सके हैं। भारतीय स्वाधीनता के पुण्य पर्व पर ऋषि के चरणों में हम श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित करते हैं।

—०—०—

मुद्रक—श्रीधर पण्डित
८९ चिंतामणि प्रिंटिंग प्रेस, जवाहरगंज इन्दौर.

प्रकाशक—किशोरीलाल गोयल,
आर्यावर्त कार्यालय ७२ महारानी रोड

आर्य-जगत्

महेश्वर गुरुकुल के लिए धन संग्रह—

समसपुरा, २-८-४७ को गुरुकुल के आचार्य श्री लक्ष्मीनारायणजी विद्या भास्कर तथा मुख्याधिष्ठाता जी व गुरुकुल के ब्रह्मचारी ग्राम में पधारे, प्रातः श्री सुखदेवजी की कन्या तथा अन्य दो कन्याओं का नाम करण संस्कार आचार्यजी द्वारा सम्पन्न हुआ। आचार्यजी ने उपस्थित ग्राम वासियों के लिए ग्रामोपयोगी उपदेश दिया। सायंकाल ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन हुआ जनता ने ब्रह्मचारियों के कौशल की प्रशंसा की। ब्र. अभय देव का प्रदर्शन सर्वोत्तम रहा। इसी अवसर गुरुकुल के लिए श्री रत्नाकरजी शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल द्वारा गुरुकुल के लिए सहायतार्थ अभ्यर्थना करने पर निम्न दान प्राप्त हुआ।

५१) श्री सुखदेवजी पटेल, ५) श्री मुरारलालजी मुकाती, ५) श्री मांगीलालजी विजयवर्गीय देपालपुर, ३) श्री बद्रीलालजी १) श्रीमती अयोध्याबाईजी, १) श्री मुरार रामजी, १) श्री हीरालालजी सुतार, =योग ६७)

रात्रि में भोजनोपरान्त सत्संग में श्री पं. देवकृष्णजी के मधुर भजनोपदेश तथा ब्रह्मचारियों के शिक्षाप्रद गायन हुए। श्री पं. रत्नाकरजी शास्त्री ने ग्रामोपयोगी भाषण देते हुए जनता से शिक्षित बनने की अपील की। श्री आचार्यजी ने दक्षिणा में प्राप्त धन भी गुरुकुल के लिए ही भेंट कर दिया है।

मन्त्री—
आर्य समाज, समसपुरा.

आर्य समाजों से—

आर्य कुमार सभा के संगठनार्थ श्री सुखदेवजी शास्त्री आर्गेनाईजर केंद्रीय कार्यालय की ओर से मध्य भारत में भ्रमण कर रहे हैं। जिन समाजों या सभाओं में शास्त्रीजी पहुंचे हों वे उनके विवरण से सूचित करें। श्री शास्त्रीजी भी आजकल जहां हों अपने पते से केन्द्रीय कार्यालय को सूचित करें। जिस समाज या सभा को उनका पता ज्ञात हो वे भी उस से कार्यालय को सूचित कर दें।

—भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद
कार्यालय मुरादाबाद

हिन्दी दिवस

खाचरौद हिन्दी साहित्य सभा की ओर से भारतीय विधान परिषद से स्वतन्त्र भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी बनाये जाने का प्रस्ताव पास किया गया। और सरकार से अनुरोध किया गया कि हिन्दी के विद्वानों को शासन में लिया जाय जनता से हिन्दी को ही जीवन की एक मात्र भाषा मानने की अपील की गई।

नारी रक्षा कार्य

श्रीमती कमलाबाई आयु १६, पत्नी श्रीप्यारेलाल। जब प्यारेलाल महू सी. आई. पुलिस में काम करता था तब महू में उसी पुलिस के गुन्डों ने उस बाई के साथ अनुचित सम्बन्ध के प्रयत्न किये। कुछ दिनों बाद जब प्यारेलाल बदली होकर इन्दौर आगया तो वे गुंडे यहां भी बाई के पीछे लगे रहे। और अन्त में अवसर मिलते ही बाई को गायब कर दिया और महू में रक्खा और उसके साथ बलात्कार किया। १०, ११ दिन बाद जब महू में होने का निश्चित पता लगा तब बाई के पति आदि ने परदेशीपुरा आर्यसमाज के मंत्री को सूचित किया। श्रीगोरेलालजी मंत्री व श्री अमनलालजी मचेल बाई की रक्षार्थ महू पहुंचे और बाई को गुन्डों से छुडाकर इंदौर में ले आये। बाई का उचित प्रबंध समाज की ओर से कर दिया गया है।

आर्यावर्त पंजाब सहायता-निधि

५) श्री छोगालालजी चिन्तामणिजी
सियागंज इन्दौर
११) दी सायकल हार्ड वेयर मार्ट
सियागंज इन्दौर
२) ,, मेसर्स माहेश्वरी स्टोर्स सिहोर
२) श्री बाबू मुरलीधरजी जैन उज्जैन
२०) इस सप्ताह का योग
१३७४५ पूर्व योग
१३७६५ महा योग

कन्हैयालाल,
कोषाध्यक्ष— दयानन्द वैदिक मिशन,
इन्दौर.

राजस्थान व मालवा में प्रांतीय आर्यकुमार सभा

श्रीजीवानन्दजी आनन्द विशारद सि. भास्कर ने प्रांत के आर्य युवकों से प्रांत में शीघ्र ही प्रांतीय आर्य कुमार सभा स्थापित करने का प्रयत्न करने की अपील की है। केंद्रीय सभा की ओर से श्रीसुखदेवजी शास्त्री प्रांत में संगठन का कार्य कर रहे हैं। राजस्थान व मालवा प्रांत में अधिक से अधिक संख्या में समाओं की स्थापना की जानी चाहिये। आवश्यक जानकारी के लिए सभाकार्यालय मुरादाबाद अथवा आर्य कुमार सभा सुजानगढ [बीकानेर] राजपूताना से पत्र व्यवहार करें।

प्रचार

श्रीस्वामी जगदीशानन्दजी महाराज (दयानन्द साल्वेशन मिशन) मुर्दी ठाकुरों के ग्राम (भूपाल) में प्रचारार्थ पधारे दो दिन तक प्रभावशाली व्याख्यान हुए। जनता पर्याप्त संख्या में भाग लेती रही।

शुभ विवाह संस्कार

इंदौर श्रद्धानन्द अनाथालय की दो कन्याओं का विवाह संस्कार श्री बद्रीप्रसादजी इंदौर तथा श्रीभैरवलालजी ओसवाल चोपडा निवासी के साथ २७-७-४७ को समारोह के साथ श्री सेठ जगन्नाथजी की धर्मशाला में सम्पन्न हुआ। नगर के आर्य जन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

—मन्त्री पूरनमल

आर्यावर्त के ग्राहकों को सूचनाएं

आगामी अंक बन्द रहेगा

आर्यावर्त का यह अंक १६ पृष्ठ का निकल रहा है और ३१ ता. का अंक श्रावणी पर्व सम्बन्धी बृहद् अंक होगा अतः निश्चय किया गया है कि २४-७-४७ का अंक बन्द रहे। प्रेमी पाठकों तथा एजेन्टों को नोट कर लेना चाहिए।

ग्राहकों से निवेदन

हमारे पास प्रायः आर्यावर्त न पहुँच ने की शिकायत आती रहती है। यहां से आर्यावर्त प्रति शुक्रवार को पोस्ट हो जाता है। जिन को इतवार या सोमवार तक न मिल सके उन्हें अपने पोस्ट आफिस में जांच करनी चाहिए तब फिर लिखना चाहिए और पत्र व्यवहार करते समय सदैव ग्राहक नम्बर लिखना चाहिए पत्र व्यवहार में विलम्ब और असुविधा न हो इसका यही उपाय है। व्यवस्थापक—

आर्यावर्त साप्ताहिक

आर्यावर्त

आर्य समाज १५ अगस्त का स्वतन्त्रता-दिवस हर्ष व उत्साह पूर्वक मनायेगा।

प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में यज्ञ हो, ओ३म् की पताका मन्दिर में फहराई जाय, और स्वतन्त्र भारत के लिए शुभ कामना की जाय

— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का आदेश —

दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपना एक विशेष अधिवेशन ३ अगस्त को १५ अगस्त स्वाधीनता दिवस के सम्बन्ध में आर्य समाज क कार्यक्रम पर विचार करने के लिए बुलाया था। इस अधिवेशन में १५ अगस्त क सम्बन्ध में जो निर्णय किया गया वह इस प्रकार है--

प्रस्ताव संख्या १— भारतीय उपनिवेश— यद्यपि सभा की दृष्टि में भारतवर्ष का इण्डिया और पाकिस्तान नामक दो भागों में विभाजन देश के लिए सांस्कृतिक और राजनैतिक दोनों प्रकार स अत्यन्त हानिकारक है, तथा १५ अगस्त के बाद स्थापित होन वाले विधान में वैदिक आदर्शों की दृष्टि से कतिपय न्यूनताएं हैं, तथापि यह सभा विदशी शासन से मुक्त होन पर प्रसन्नता प्रकट करती है और भारत के आर्य जनों को आदेश दती है कि व स्वतन्त्रता-दिवस को हर्ष तथा उत्साह के साथ मनावें। उस दिन समाज मन्दिर में यज्ञ किया जाय और ओ३म् की पताका फहराइ जाय तथा स्वतन्त्र भारत के लिए शुभ कामना की जाय।

प्रस्ताव संख्या २— पाकिस्तान उपनिवेश— पाकिस्तान का वैधानिक चित्र इस समय तक अस्पष्ट है अतः यह सभा पाकिस्तान के आर्य जनों को १५ अगस्त का दिन मनान अथवा न मनाने के सम्बन्ध मे कोई आदश नहीं देती। पाकिस्तान का वैधानिक स्वरूप प्रकट हो जाने पर ही सभा इस सम्बन्ध में वहां की जनता को कोई आदेश देगी।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के गवर्नर जनरलों तथा गवर्नरों की नई नियुक्तियां—

भारतीय उपनिवेश

गवर्नर जनरल—	लार्ड माउण्टबेटन
गवर्नर पश्चिमी बंगाल—	श्री. राजगोपालाचार्य.
„ पूर्वी पंजाब—	श्री. चन्दूलाल त्रिवेदी.
„ मध्य प्रान्त और बरार—	श्री. मंगलदास पकवासा.
„ बिहार—	श्री जयरामदास दौलतराम.
„ उड़ीसा—	श्री कैलाशनाथ काटजू.
„ युक्त.प्रान्त—	श्री डा. विधानचंद्रराय =
„ आसाम—	सर मुहम्मद अकबर हैदरी

पाकिस्तान उपनिवेश—

गवर्नर जनरल—	मियाँ मुहम्मदअली जिन्ना.
गवर्नर पश्चिमी पंजाब—	सर राबर्ट फ्रांसिसमुडी
„ सिन्ध—	सर गुलामहुसेन हिदायतुल्ला
„ सीमाप्रान्त—	सर जार्ज कनिंघम
„ पूर्वी बंगाल—	बाद में घोषित किया जायगा.

= श्री विधानचन्द्र राय इस समय अमेरिका में हैं, उनके वापिस आनेतक श्री सरोजनी नायडू युक्तप्रान्तकी गवर्नर रहेंगी। भारतीय उपनिवेशमें बंबई और मद्रासके गवर्नर ही यथापूर्व कुछ समयतक कार्य करेंगे।

दिनांक १०अगस्त ४७
मूल्य ५) वार्षिक

सम्पादक:— स्नातक उमेशचन्द्र

अंक सं २१
एक अंक =)

—००—दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र—००—

हिन्दी कैसे राष्ट्र-भाषा बने

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के महत्व पूर्ण निश्चयः-

प्रस्ताव सं. १

[१] भारतीय विधान परिषद द्वारा यह स्वीकार कर लिया जाय कि भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्र लिपि देवनागरी है।

[२] समस्त अन्तःप्रांतीय और केन्द्रीय कार्यों के लिए जिन विभागों तथा कार्यक्षेत्रों मे अबतक अंग्रेजी अथवा अन्य किसी भाषा का व्यवहार होता हो वहां सर्वत्र हिन्दी भाषाका और जहां रोमन या फारसी लिपि का प्रयोग होता हो वहां देवनागरी लिपि का व्यवहार किया जाय।

[३] हिन्दी भाषा भाषी प्रांतों (संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, पूर्वीय पंजाब, दिल्ली, अजमेर, मेरवाडा, तथा मध्यभारत और उपर्युक्त प्रान्तों की अन्तवर्ती रियासतों में सर्वत्र देवनागरी लिपि के द्वारा हिन्दी भाषा की अनिवार्य शिक्षा दीजाय और उर्दू तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता को तुरन्त समाप्त कर दियाजाय। प्रांतीय तथा रियासती शासनों के सभी विभागों में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का व्यवहार अनिवार्य कर दिया जाय। अन्य प्रांतों और रजवाडों में वहां की भाषाएं शासन कार्यों में मान्य रह सकती है।

[४] उपर्युक्त तीनों धाराओंमे प्रतिपादित मन्तव्यों के अनुकूल सम्मेलन निम्नलिखित सुझाव उपस्थित करता है—

[अ] केन्द्रीय तथा प्रान्तीय शासनों के द्वारा और उनकी सहायता से हिन्दुस्तानी के निर्माण और प्रसार का जो कार्य चल रहा है वह तुरन्त बन्द कर दिया जाय।

[आ] रक्षा विभाग के सैनिकों की शिक्षा और कामकाज के लिए रोमन लिपि में लिखी जानेवाली उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी के स्थान पर देवनागरी लिपि में लिखी हुई हिन्दी भाषा प्रचलित कीजाय।

[इ] ध्वनि-प्रसार [रेडियो] विभागके द्वारा प्रसारित सभी अखिल भारतीय प्रोग्रामों की भाषा अंग्रेजी और उर्दू तथा हिन्दुस्तानीको हटाकर हिन्दी कीजाय।

(ई) केन्द्रीय तथा हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों और रजवाडों के समस्त विभागों में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि १५ अगस्त १९४८ तक अपना स्थान ग्रहण करले। जो अधिकारी तथा कर्मचारी हिन्दी भाषा और देवनागरी से अनभिज्ञ हैं उनको आदेश दियाजाय कि वह इन्हें शीघ्रातिशीघ्र सीख ले।

[उ] हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों और रजवाडों की सारी शिक्षा का माध्यम तुरन्त हिंदी घोषित कर दिया जावे। सभी विश्व विद्यालयों की शिक्षा का माध्यम तुरन्त हिंदी घोषित कर दिया जाय। और यह प्रस्ताव तीन वर्षके अन्दर कार्य में परिणत कर दिया जाय और कोई भी विश्वविद्यालय इसका अपवाद न बनाया जाय।

[ऊ] अधिकारियों और कर्मचारियों से समिति का आग्रह है कि वे देश के प्रति अपने कर्तव्य को समझते हुए दृढतापूर्वक हिन्दी का ही प्रयोग करें। दूसरी किसी भाषा का नहीं तथा जिन्हें हिन्दी नहीं आती वे हिंदी सीखें तथा दूसरों को प्रेरित करें।

प्रस्ताव सं. २

सम्मेलन की यह समिति उन सरकारों से प्रार्थना करती है कि जिनके यहां ऐंग्लो हिन्दुस्तानी स्कूलों में कक्षा ५ से ८ तक छात्रों को अनिवार्य रूप से उर्दू पढना पडती है वे उसे तुरन्त रद्द कर दें। अनिवार्य द्वितीय भाषा के रूप में भी उर्दू का अध्ययन बन्द कर दिया जाय।

प्रस्ताव सं. ३

पुलिस, अदालत आदि सार्वजनिक सरकारी स्थानों में सूचनाएं और अभियोग कार्यक्रम हिन्दी में किए जाने की आज्ञा जिन सरकारों ने निकाली हैं उन्हे इस ओर आज्ञा निकाल कर चुप नहीं बैठना चाहिये आज्ञा को क्रियात्मक रूप देना चाहिये।

प्रस्ताव सं. ४

युक्तप्रान्त की सरकार ने हिन्दुस्तानी के प्रचार के लिए जो ५००००) पचास हजार रुपया रक्खा है उसका उपयोग हिन्दी की उन्नति में सम्मेलन की योजनानुसार किया जाय।

—इन निश्चयों में से बहुत से ऐसे हैं जिनका संबंध सरकार के साथ है परन्तु हम हिन्दी भाषा भाषियों का भी कर्तव्य इन प्रस्तावो में उल्लिखित है। सरकार के अपनाने पर यदि कोई हिन्दी को अपनाता है तो उसका कोई महत्व नहीं है। महत्व तो उसका है और रहेगा जो हिन्दी को अपनी राष्ट्र भाषा समझ अपने जीवन में उसे ओतप्रोत किये है और किये रहने में गर्व अनुभव करता है। आज पहलेसे अधिक दायित्व हिन्दी को राष्ट्र भाषा माननेवालों पर आपडा है हमें अपना कर्तव्य निभाना चाहिये और राष्ट्र भाषा के महत्व पूर्ण पदपर हिन्दी भाषा को बिठाने में सफलता प्राप्त करनी चाहिये। —सम्पादक

आर्यावर्त

सृष्टि १९७२९४९०४७] दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर का मुखपत्र [दयानन्द जन्माब्द १२३

वर्ष २] इन्दौर, रविवार दिनाङ्क १० अगस्त १९४७, श्रावण वदी ९ वि. सं. २००४ [संख्या २१

स्वाधीनता का पुण्य पर्व

सहस्रों वर्षों के बाद स्वतन्त्रता सूर्य अपनी उज्वल रश्मियों के साथ भारत में प्रवेश करने आ रहे हैं। सामाजिक अधःपतन के कारण प्राप्त राजनैतिक दासता से हम मुक्त होने जा रहे हैं। क्या आज कोई भी ऐसा व्यक्ति होगा जो इस महान पुण्य पर्व पर अपने अन्दर हर्ष और उल्लास अनुभव न करता हो। भारत के इतिहास में १५ अगस्त का दिन निश्चय ही एक स्वर्ण दिवस के नाम से स्मरण किया जायगा। संसार के इतिहास में इस प्रकार के शान्तिपूर्ण परिवर्तन का गौरव भारत के सिवाय किसी को प्राप्त नहीं है। भारत का स्वातन्त्र्य आन्दोलन और उससे प्राप्त आज की यह स्वाधीनता एक आश्चर्यजनक घटना है जो संसार का प्रत्येक पुरुष भारत का नाम स्मरण करते हुए दुहराया करेगा।

आज जो हम पा सके हैं उसके पीछे एक लम्बा इतिहास है, अनेकों दिग्गज विद्वानों, सहस्रों संस्थाओं, लाखों करोड़ों व्यक्तियों के त्यागपूर्ण बलिदान की कहानियाँ इस इतिहास में जुड़ी हुई हैं। आज का स्वाधीनता सूर्य उन सब त्यागी तपस्वियों राष्ट्र-भक्तों के प्रति अपना श्रेद्ध समर्पण कर हमें आगे उस स्वाधीनता को स्थिर रखने का सन्देश देने आरहा है। हम उस दिन कैसे प्रसन्नता प्रकट करें, उस दिन नये और पुराने युग की सन्ध्या वेला पर हम क्या उत्सर्जन और ग्रहण करेंगे ये प्रश्न हैं जो हमें विचारने हैं।

आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने भारतीय स्वाधीनता के वर्तमान आन्दोलन में सबसे प्रथम अपना समर्पण किया था। ऋषि के हृदय में आर्यावर्त और आर्य जाति की महत्ता थी जो अग्नि प्रज्वलित की उसे कौन भूल सकता है? इस प्रकार स्वराज्य शब्द की आद्युद्घोषक ऋषि की आत्मा आज कितना सुख अनुभव कर रही होगी यह नहीं कहा जासकता हम आर्यों का कर्तव्य है कि ऋषि की आत्मा की प्रसन्नता के साथ स्वयं आनन्द मनायें और इस प्रकार का व्रत लें कि जो दुखदायी घटना विभाजन के रूप में हमारे सामने घटित हुई है उसे अपने त्याग, बलिदान और सामाजिक उत्थान के द्वारा सुखमय बना सकें। विभाजन के दुख को नष्ट करने के लिए हमें कटिबद्ध होना पड़ेगा। देश के अन्दर से सामाजिक सड़ांदको जिसका फल आज का विभाजन है हमें ही नष्ट करना है इस दृष्टि से प्रत्येक आर्य पर सबसे अधिक भार है। संसार का उपकार करना जिस समाज का मुख्य उद्देश्य है वह अन्तर्राष्ट्रीय होते हुए भी राष्ट्रीयता से दूर नहीं भाग सकता, राष्ट्र के उत्थान का मूल-मन्त्र आचार्य दयानन्द के शब्दों में सामाजिक उत्थान है। इसलिए स्वाधीनता दिवस के पुण्य पर्व पर हमें अपनी पूर्ण शक्तियों के साथ राष्ट्र के सामाजिक जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का निश्चय करना चाहिए। इस निश्चय को कार्य रूप में परिणत करने के लिए हमें अपने व्यक्ति-गत जीवन की कमियां दूर करनी होंगी और तब एक महान सेना के रूप में राष्ट्र की सेवा के लिए आगे आना होगा।

उत्सव मनाने का जहां तक संबंध है सार्वदेशिक सभा की ओर से सूचना दी जा चुकी है। राष्ट्र का नागरिक होने के नाते राष्ट्रीय रूप से जो भी उत्सव समारोह मनाया जावे उसमें प्रत्येक को भाग लेकर अपने राष्ट्र प्रेम का परिचय देना चाहिये। अभी तक धार्मिक, सामाजिक संस्था रहने के कारण आर्य समाज मन्दिरों में स्वतन्त्र रूप से ओ३म् पताका फहराने का जो कार्यक्रम है उसका नीति से सम्बन्ध है किसी प्रकार का विरोध नहीं। हां, प्रत्येक समाज की ओर से भारतीय स्वाधीनता के प्रति शुभ कामनायें तथा दीपमालिका, नगर कीर्तन आदि की व्यवस्था स्वयं की जा सकती है इसमें किसी प्रकार का कोई बन्धन नहीं है। राष्ट्र ने जिस रूप में उत्सव मनाने का निश्चय किया है उसमें प्रत्येकको सोत्साह सम्मिलित होना ही चाहिये। भारत के इतिहास में वह दिन राष्ट्र भक्ति प्रदर्शन का दिन होगा। उस दिन स्वतन्त्र भारत का निर्माण होगा इससे किसे प्रसन्नता न होगी इसलिए प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपनी पूरी शक्ति के साथ इस समारोह को मनाये और मनाने में सहयोग दे।

स्वाधीनता दिवस जिस स्वाधीनता की नींव डालने आ रहा है उसको गौरव

पूर्ण बनाना और उसकी अन्तर्राष्ट्रीयता को व्यापक और प्रभावशाली बनाना हमारा ही कर्तव्य है इस लिए इस दिन से हम ऐसा कोई भी कार्य न करने का निश्चय करलें जिस से भारत की इज्जत खतरे में पड़ती हो। संसार का नेतृत्व भारत के हाथों में आना चाहता है यदि हम सावधानी से चले तो हम इस गौरव को तुरन्त पा जायेंगे और फिर एक बार मनु के उस समय को पा सकेंगे जब— एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः। प्रभो हम भारतीयों में वह शक्ति भक्ति और बल दो जिस से हम इस स्वर्ण अवसर से लाभ उठा अपनी स्वाधीनता को स्थिर रख सकें और विश्व शान्ति के अग्रदूत बन संसार को सत्यंशिवं सुन्दरं का पाठ पढ़ा सकें और सारे विश्व को एक परिवार बनाने का गौरव प्राप्त कर सकें। स्वाधीनता की जय हो, भारत माता की जय हो।

★ ★ ★

विचार—कण...

विवेक भ्रष्टा न शोभन्ते

देश के राजनैतिक परिवर्तनों ने एक नई जागृति को जन्म दिया है इसमें किसी को सन्देह नहीं है। आज जब हम एक शक्तिशाली साम्राज्य की दासता से मुक्त होकर स्वतन्त्रता का आलिंगन करने जा रहे हैं, जिस स्वतन्त्रता की आराधना में हमने अपने बलिदानों का सिञ्चन किया है वह हमारे पास पहुँच रही है तब कुछ ऐसी कार्य वाहियां दिखाई दे रहीं हैं जिन्हें देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। हम फूट की बीमारी से अभी मुक्त नहीं हो पाये हैं, इसी फूट के कारण निरन्तर एक हजार वर्ष तक हमारा अधः पतन हुआ और हमने पराधीन बन अपने गौरव पूर्ण इतिहास को कलंकित किया है अब जब एक लम्बे साधना पूर्ण संघर्ष के बाद हम अपने जन्म सिद्ध अधिकार को पाने जारहे हैं हमारे अन्दर ईर्ष्या द्वेष की भावनायें नहीं रहनी चाहिये, परन्तु जैसे जैसे निर्धारित समय समीप आरहा है हमारा पारस्परिक विरोध बढ़ता चला आरहा है क्या इस पर गम्भीरता से प्रत्येक भारतीय को विचार नहीं करना चाहिए।

कांग्रेस और हिन्दू महासभा में इस समय जो संघर्ष छिड़ गया है उसे सामयिक नहीं कहा जा सकता सभा के नेताओं ने पहल करके अपनी प्राप्त जनप्रियता को नष्ट करने का अनायास अनजाने में प्रयत्न किया है और सम्भव है, महा सभा को इस आन्दोलन से भारी धक्का भी लगे। सम्भव है महासभा के प्रति बढ़ता हुआ धार्मिक भावनापूर्ण प्रेम राष्ट्रीयता के वर्तमान स्वरूप में विलुप्त हो सकता है। इसलिए जो शीघ्रता की गई है उसे तत्काल व पिस लेकर आन्दोलन को विशुद्ध राष्ट्रीय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय संस्था के ऊपर इस समय जो महान् उत्तर दायित्व आपड़ा है उसको सम्हालना कांग्रेस की उच्च सत्ता का कर्तव्य है। पिछले दिनों देश के रक्तपात एवं देश के विभाजनके प्रश्न को लेकर कांग्रेस जनता की जिस आलोचना का विषय रहीहै उसमें बहुत कुछ सार है और उसी तत्व को लेकर कांग्रेसेतर पार्टियों अपने प्रभाव को व्यापक बना रहीं हैं। महासभा का सत्याग्रह इसी प्रकार का एक प्रयत्न है। वास्तव में देश की भलाई इसी में है कि जनता की विचार धारा को समझा जाय और एक निश्चित समय के अन्दर जन प्रिय नीति की घोषणा कर दी जाय। कांग्रेस की उपयोगिता इसी में है कि वह समझौता प्रिय नीति को त्याग तुरन्त सैद्धान्तिक राष्ट्रीयता को स्वीकार करले राष्ट्रीयता के जो अन्तर राष्ट्रीय नियम हैं उनका पालन किया जाय और किसी प्रकार की सम्प्रदाय विशेष की सुविधा को कोई महत्व न दिया जाय। आज जो संघर्ष छिड़ा हुआ है उसके सम्बन्ध में महासभा के दृष्टि को[illegible] समर्थन नहीं किया जा सकता पर साथ ही कांग्रेस सरकार की उस शिथिल नीति में जो उसने मुस्लिम लीग के "सीधी कार्यवाही" के समय बर्ती थी अचानक एकदम इतना कठोर परिवर्तन देखकर हम कहे बिना नहीं रह सकते कि कांग्रेस की ओर से नेतृत्व के मोह को बनाये रखनेके लिए ही यह किया गया है। गलती यही है कि जो व्यवहार महासभा के साथ करने का साहस सरकार ने किया है वह व्यवहार पहले मुस्लिम लीग के साथ किया जाता तो सम्भव था वर्तमान स्थिति कुछ बदली होती केवल नेतृत्व को कायम रखने के लिए यदि दोनों पार्टियां संघर्ष में जूझना चाहती हैं तो यह स्वाधीनता के लिए त्याग बलिदान करने वालों के प्रति अन्याय ही कहा जायगा। विशुद्ध भारतीय राष्ट्रीयता के सिद्धान्तो पर देश का भविष्य निमार्ण करने की घोषणा कर दोनों पार्टियां अपना महत्व बढ़ा सकती हैं। जमीदारों का आश्रय ले और उनके अस्तित्व को कायम रखने के प्रयत्न मे जो भी पार्टी राष्ट्रीयता या हिन्दुत्व की ओट लेगी वह अधिक दिन जीवित नहीं रह सकती।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हरिजनों के लिए कुएं

इन्दौर मालवा मिल और आसपास के मिल एरिया में अछूत संघ, व श्री रमेशचन्द्रजी तथा डा० दुबे ने प्रयत्न करके हरिजनों के लिए कुओं से पानी भरने का अधिकार हिन्दुओं से स्वीकार करा लिया है। भविष्य में इस क्षेत्र के हरिजन सम्पूर्ण कुओं से पानी भर सकेंगे। यहां के उत्साही कार्यकर्ताओं और हिन्दुओं का प्रयत्न सराहनीय है।

पाक-विज्ञान.......

खुशी में क्या खायें

१५ अगस्त हमारे जीवन में सबसे सुन्दर और महान् दिवस होगा जब प्रत्येक भारतीय चिरकालीन दासता से मुक्त हो स्वतंन्त्रता के गौरवपूर्ण पदका अनुभव करेगा। खुशीमें भारतीय प्रथाके अनुसार घरों में पकवान बना करते हैं। आज हम अपने जीवनकी सब प्रसन्नताओं से बडी प्रसन्नता मनाने की सोच रहे हैं तब माँ अन्नपूर्णा के अनुग्रह से हम अपने प्रेमी पाठक-पाठिकाओं के सामने कुछ पकवानों का उल्लेख कर देना ठीक समझते हैं। लीजिये सबसे प्रथम—

पूरनपूरी प्रयोग अंक ११

सामग्री—चनेकी दाल १ सेर, चीनी आधा सेर या गुड, गेहू का आटा या मैदा घी, इलायची, गोला आदि।

विधि—चने की दाल को मामूली तौरपर उबालकर उतार लें और दाल का थोडा ठण्डा होने दें मामूली ठण्डा होनेपर उसमें चीनी या गुड मिला दीजिये और फिर उसको आगपर चढा दीजिए जब चासनी में १ तार आजाय तब नीचे उतारकर सिलवटे पर पिट्ठी बना ले और इलायची, गोला आदि मिलाकर तय्यार कर लें। गेहूं का आटा या मैदा लेकर लोई बना बेलकर उसमे चने की दाल आदि की जो पिट्ठी है उसे लोई में लपेट घी में सेक लीजिये और गरम गरम खाते जाइए। ठण्डी होने पर पूरीमें आनन्द नहीं आता।

नागौरी पूरी प्रयोग अंक १२

सामग्री मैदा १ सेर, घी डेढपाव नमक, अजवायन।

विधि—मैदेमें घी नमक, अजवायन डालकर गुन गुने पानी से गूंध ले लोई बना घी में सेंक लीजिये।

नान खताई प्रयोग अंक १३

सामग्री—१ सेर मैदा, १ सेर घी, १ सेर बूरा या पिसी चीनी, ९ माशा समुद्र फेन, (१ सेर सामान में ३ माशा के हिसाब से)

विधि—मैदा, घी, बूरा तीनोंको मिला समुद्र फेन डालकर उसन लें, पानी बिल्कुल भी न डालें गोल गोल लोई बनाकर चाकू से बीच में काटकर रख ले। कोयलो को अच्छी तरह सुलगाकर तीन ईंटों के त्रिकोण में घेर लें, इसी प्रकार एक तसले में कोयले अलग सुलगाकर रख लें, एक थाली में नीचे कागज बिछाकर थोडी थोडा दूरपर उन आधे टुकडों को जमाकर रखिए। पहले सब सामान एक या दो जितनी थालियों में आये उतनी थालियों में ठीक प्रकार से जमाकर रख लीजिये और फिर ईंटावाली आग पर थाली को रखिए और थाली के ऊपर से आग के तसले को रखिए। जब आग के सेक से टिकियों का रंग बादामी पड जाय तब निकालें और दूसरी तय्यार थाली इसी भांति रखकर सेक लें। सिक जाने की पहिचान यह है कि जब नानखताई का रंग बादामी हो जाय और वह खिल जाय तब समझिए अच्छी तरह सिक गई है।

नारियल की बर्फी

प्रयोग अंक १४

सामग्री:—नारियल आधा सेर खोवा आधा सेर, चीनी एक सेर, इलायची एक तोला, घी इच्छानुसार।

विधिः—इसके बनाने के लिए कच्चा नारियल अधिक उपयुक्त होता है परन्तु सूखा गोला भी हो तो कोई हानि नहीं, चाकू से सूखे गोले के ऊपरी काले छिलके को साफ कर सिलपर पीस डालिए, कच्चा नारियल हो तो उसे भी पीसिए. पिसे नारियल में खोवा डालकर भूनिए। पीछे से इलायची मिला कर चीनी की बनी हुई चासनी मे डालकर मिलादें और थाली में घी चुपड़ कर बर्फी जमालें और चाकूसे कतीरियां काट खावें।

—पाक शास्त्री

मध्य-भारत —

राजगढ राज्य की कौंन्सिल में जनता का प्रतिनिधित्व

राज्य के शासन मे जनता का अधिक सम्पर्क लाने के लिये राजगढ दरबार ने एक सुधार कमेटी बनाने का तय किया है। जिसमें अधिकांश गैर सरकारी सदस्य रहेंगे वर्तमान कौन्सिल में जनता का प्रतिनिधित्व एक दम प्राप्त करने के लिये जनता के दो कौन्सिलर नियुक्त किये जायेंगे। ज्योंही शासन विधान बन जायगा और चुनाव का प्रश्न हल होजायगा त्योंही ये कौन्सिलर चुन लिये जायेंगे। राज्यके कस्बों और गांवों से म्यूनिसिपिलेटी व पंचायतों द्वारा इनकी नियुक्ति के लिये नाम मांगे गये हैं और आखरी चुनाव के पहिले महत्व के विषयों पर विचार प्रगट करने का मौका दिया जायगा।

(पृष्ठ ४ का शेष)

इसलिए आवश्यकता है इस बातकी कि उभय पक्षी नेता गण स्वाधीनता के उदय काल में राष्ट्र के साथ ईमानदारी का व्यवहार करे और राष्ट्र का नव निर्माण करने में कन्धेसे कन्धा मिलाकर आगे बढे यदि हमने ऐसा किया तो खोया भी पा-लेंगे और यदि हम लडते रहे तो याद रखिये पाया भी खो देंगे। समय आने से पूर्व चेतिए नहीं तो विवेक-भ्रष्ट व्यक्ति, जातियाँ, देश जिस प्रकार नष्ट हो जाते हैं उसी प्रकार हम गौरव पूर्ण भारत को नष्ट करके ही छोडेंगे। हे प्रभो— तमसो मा ज्योतिर्गमय।

— गुरुकुल महेश्वर समाचार —

—कुलभूमि मे २७—७—४७ को गुरुकुल सम्बन्धी आवश्यक विषयों पर विचारार्थ गुरुकुल के अधिकारियों, पालको और हितेच्छुओं की सम्मिलित सभा हुई। दयानन्द वैदिक मिशन क कार्य कर्ताओं ने गुरुकुल के आय-व्यय पत्र का निरीक्षण किया और उसे सन्तोषजनक पाया। गुरुकुल के आर्थिक संकट पर गम्भीर विचार किया गया और निम्न व्यक्तियों ने मासिक सहायता के रूप में निम्न प्रकार धन देना स्वीकार किया।

१००) दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर द्वारा मासिक सहायता वर्तमान मंहगाई व अन्न संकट काल तक दी जायगी।

५)	श्री माधवरावजी	कसरावद
५)	„ मुकुन्दजी	„
९)	„ नारायणजी	बाकसमुद
२४)	„ मुरारजी	समसपुरा
१२)	„ देवदत्त हीरालालजी	ग्रामकुआँ
४)	„ दयारामजी	„
९)	„ देवदत्तजी झापडू	„
५)	„ सकरलालजी आजाद	दवाना
५)	„ चम्पालालजी	मांद्रा
५)	„ रणछोडजी	इन्दौर
४)	„ रघुनाथजी मुकाती	सुन्देरल
५)	„ गगारामजी माई	घटवाँ
१९२)		

इस प्रकार १९२) मासिक सहायता के निश्चित आश्वासन दिए गये।

वर्तमान में गुरुकुल में प्रत्यक ब्रह्मचारी से १६) मासिक व्यय किया जाता है। जब कि औसत व्यय २८) पड रहा है। कुछ सरक्षकों ने गुरुकुल सहायतार्थ १६) के अतिरिक्त होनवाले १२) के अधिक व्यय को भी स्वय देना स्वीकार किया हुआ है और वे १६) शुल्क१२) महंगाई सहायता दे रहे हैं। परन्तु यह स्मरणीय है कि वे २८) देने के लिए नियमतः बाध्य नहीं हैं। इस प्रकार उस भ्रमको दूर कर देना चाहिये जो कि गुरुकुल के सम्बन्ध में कुछ लोगोंने प्रचारित किया है कि जब २८) मासिक शुल्क लिया जाता है तब व्यय पूरा क्यों नहीं पडता। कुछ पालकों द्वारा २८) प्राप्त होन का यह अर्थ कदापि नही है कि सभी बालकों क सरक्षक इतनाही शुल्क या सहायता देते हैं। शेष बालकोंके लिए व्यय होता है उसकी पूर्ति आवश्यक है। इसलिए गुरुकुल की सहायता सबको करनी चाहिए।

गुरुकुल के मन्त्री श्री बाबूलालजी का त्याग-पत्र प्रस्तुत होकर स्वीकृत किया गया और भविष्यके लिए उनके स्थान पूर्त्यर्थ श्री. सेठ रामलालजी महेश्वरवाले सर्व सम्मतिसे मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

पूर्व सूचनानुसार गुरुकुल की त्रैमासिक परीक्षाए २८,२९-८-४८ को गुरुकुल भवन में श्री. बालीरामजी, श्री. भगीरथजी व श्री रामचंद्रजी, श्री. रामाजी व श्री. देवदत्तजी हीरालालजी की उपस्थिति में आचार्यजी व अन्य उपाध्यायों द्वारा की गइ। समस्त छात्र उत्तम अंकों से उत्तीर्ण रहे। उपस्थित सज्जनोंने छात्रों की शिक्षाके सम्बन्ध में अपना सन्तोष व्यक्त किया। दयानन्द वैदिक मिशन के कार्यकर्ताओं तथा पालकों न गुरुकुल की स्वच्छता एव प्रबन्ध व्यवस्था की अत्यन्त प्रशसा की। समस्त छात्र स्वस्थ चित्त है।

वर्षा-ऋतु में ब्रह्मचारियों को प्रकृति विज्ञान का व्यावहारिक अध्ययन कराने के विचारसे ब्रह्मचारियों को पुष्पवाटिकायें बनाने के लिये प्रोत्साहन दिया गया है। ब्रह्मचारियों ने थोडे हो समय में अपने परिश्रमसे सुन्दर वाटिकायें बनाली हैं इस समय वाटिकाओं में मौसमी सब्जियां, वर्षा कालीन पुष्प एवं लताए लगी हुई हैं। शाक—भाजी के खर्च के लिए इस वाटिका से पर्याप्त आय गुरुकुल को हो सकेगा। वर्षा की विशेष कमी है आशा की जाती है- प्रभु हम पर कृपा कर इस प्रान्त की समृद्धि को कायम रक्खेंगे।

रत्नाकर शास्त्री
मुख्याधिष्ठाता —
गुरुकुल महेश्वर, इन्दौर (निमाड)

—आर्य समाज मवीसा (मुजफ्फरनगर) का वार्षिकोत्सव ता. १५—१६ जौलाई को बडे समारोह के साथ मनाया गया। जिसमें श्री. पूज्य स्वामी विवेकानन्दजी महाराज, श्री प. अमरदेवजी शास्त्री सिद्धान्ती संस्थापक 'सम्राट' श्री प निरञ्जनदेवजी एस. शास्त्री, महापदेशक, श्री प. मुकन्दरामजी आर्य भजनापदेशक आ. प्र सभा पजाब, श्री कविरत्न वीरेन्द्रजी धनुर्धर आर्य्य भजनापदेशक पधारे थे। हिन्दुस्तान की वर्तमान परिस्थिति पाकिस्तानी गुण्डागर्दी, पजाब बंगाल, गुडगांवा अलवर- भरतपुर राज्य में हिन्दु जाति पर मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों की कारुणिक कथायें और तात्कालिक कर्त्तव्यों का परिज्ञान कराया गया। देहली सूबे के बनाये जाने की मांग की गई। यह प्रान्त भाषा-वेषभूषा-आचार व्यवहार और पारस्परिक सम्बन्धोंकी दृष्टिसे एक होगा। प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। आर्यविद्वानों, एव भजनीक महोदयों के सामयिक व्याख्यानों व भजनों का जनता पर बडा प्रभाव हुआ। उत्सव पूर्ण रूपन सफल रहा।

बाजानसिंह
मन्त्री आर्य समाज मवीसा

'वेद प्रचार सप्ताह'

इस वर्ष वेदप्रचार सप्ताहके सुअवसर पर यजुर्वेद के सस्वर संहिता पाठ, पद पाठ, क्रम पाठ जटा पाठ, घन पाठ आदि की व्यवस्था की गई है। जो सज्जन वेद के सस्वर पाठों का अभ्यास करना चाहें वे वेद प्रचार सप्ताह मे जा श्रावणी से कृष्णाष्टमी तक मनाया जायगा उस समय अभ्यास के लिये उपस्थित रहें। इन्दौर से बाहर क व्यक्ति भी इस सुअवसर से लाभ उठाने के लिये सहर्ष आ सकते हैं। ठहरने एव भोजनादि की व्यवस्था उन्हें स्वय करनी होगी।

अध्यक्ष—
दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर

आर्यावर्त पंजाब सहायता निधि

पंजाब की समस्या अभी हल नहीं हुई है जो कुछ हो चुका है उसका हमें मुकाबला करना ही होगा। शरणार्थियों की समस्या आज हमारा प्रधान सामाजिक कर्तव्य है। प्रत्येक मनुष्य मात्र को शरणार्थियों की सहायतार्थ अधिक से अधिक धन देकर इस महान् कर्तव्य को पूर्ण करना चाहिए। आर्यावर्त की सहायता निधि में धन देकर आप अपना कर्तव्य पूरा कर सकते हैं। श्री वैद्य मनीलालजी पुरोहित के प्रयत्न से ५२) इस निधि में हमारे पास पहुंचे हैं। हम वैद्यजी के प्रयत्न की सराहना करते हैं। और दाताओं को धन्यवाद देते हैं।

दान दाताओं की नामावली

११) श्री मनीलालजी बलदेव दासजी
५) „ विजयलालजी
५) „ केशवदासजी मीला भाईजी
१) „ के. एम. गुप्ता.
१) „ जोशी एन्ड कम्पनी
२) „ जगदीश डेयरी फर्म
२) „ मोहनलालजी छोगालालजी जैन
१) „ कल्याणमलजी मूलचन्द्रजी
५) „ पन्नालालजी बाबूलालजी
२) „ रतनलालजी हरचंद्रजी
५) „ गोविन्दरामजी
१) „ कामरेड रामकरणजी गुप्ता
११) „ सेठ राधाकिसनजी पन्नालालजी
५२ इस तालिका का योग
१३६९३ पूर्व योग
१३७४५ महायोग

कन्हैयालाल,
कोषाध्यक्ष—दयानंद वैदिक मिशन
इंदौर

मुद्रक—श्रीधर पण्डित
८९ चिंतामणि प्रिंटिंग प्रेस, मल्हारगंज इन्दौर.

प्रकाशक—किशोरीलाल गोयल,
आर्यावर्त कार्यालय ७२ महारानी रोड

—❀—मालवीयजी का सन्देश—❀—

स्व. महामना पं. मदन मोहन मालवीयजी का "हिन्दू जाति के लिए अन्तिम सन्देश" मूल्य) प्रति, दयानन्द वैदिक मिशन इंदौर की ओर से प्रकाशित है। बहुत थोड़ी सी प्रतियां शेष बची हैं। एकसाथ ५० या १०० खरीदने वालों को प्रचारार्थ और भी सस्ते मूल्य में दिया जायगा। शीघ्र लिखें—

अध्यक्ष—दयानन्द वैदिक मिशन,
७२, महारानी रोड, इंदौर.